January 2017
Volume I
Issue 6
E-ISSN : 2454-2717

gacc journal

Covering Researches in all fields of Humanities, Languages, Social Services, Commerce and Management

'A' Grade

THE OFFICIAL PUBLICATION OF SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE GOVERNMENT ARTS AND COMMERCE COLLEGE, INDORE

PATRON :

Dr. Nalini Joshi
In-charge Principal
SABV GACC, Indore (M.P.)
email: nalinijoshirk@gmail.com

EDITOR IN CHIEF :

Dr. Roshan Benjamin Khan
Head, Department of English
SABV GACC, Indore (M.P.)
email: roshanisuper@yahoo.co.in

EDITORIAL BOARD :

Dr. Anoop Vyas
Head, Department of Commerce
SABV GACC, Indore (M.P.)
email: anoopvyas29@gmail.com

Dr. Ashwini Sharma
Professor, Department of Political Science
SABV GACC, Indore (M.P.)
email: drsharmaashwini@gmail.com

Dr. Ashish Pathak
Professor, Department of Commerce
SABV GACC, Indore (M.P.)
email: ashishpathakgacc@gmail.com

MAILING ADDRESS :
Shri Atal Bihari Vajpayee Government Arts & Commerce College
A.B. Road, Near Bhanwarkuan Square, Indore (M.P.)
Postal Code: 452017
email: principalgaccindore@rediffmail.com
Website: www.gaccindore.org

gacc journal
January 2017, Volume-1, Number-6

TECHNICAL ASSISTANCE :
Mr. Bhupendra Verma
95847-00007
Bhupendra_verma01@yahoo.com

INDEX

1.	डॉ. सुधीर सक्सेना	आपका ऑनलाइन डाटा सिक्योर है?	4-8
2.	Dr. Rajendra Singh Waghela Brijesh H Joshi	Changing Scenario of Indian Retail Sector	9-17
3.	डॉ. श्रीमती शिवा खण्डेलवाल	भोज कालीन स्थापत्य कला	18-22
4.	Dr. Renu Sinha	Gammer Gurton's Needle: An Over View	23-26
5.	Dr. Roshan Benjamin Khan	John Lyly	27-40
6.	डॉ. आशा अग्रवाल	जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक शिल्पविधान	41-44
7.	डॉ. माधुरी शेरे	1857 का स्वतंत्रता संग्राम और प्रेस कानून	45-49
8.	डॉ. प्रमिला शेरे	धार्मिक आडम्बर और कबीर	50-56
9.	Dr. S. S. Thakur	English, The De Facto Official Language of India: A Bitter Truth	57-61
10.	डॉ. आरती व्यास	समाज कल्याण अंतर्गत मध्याह्न भोजन योजना में स्वैच्छिक संगठनों की भूमिका	62-66
11.	डॉ. भगवत सिंह राय कु. सरिता बडोले	वेशभूषा और महिला सशक्तिकरण : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	67-70
12.	Dr. R.B. Gupta Dr. Niolfar Qureshi	Importance of Human Rights	71-74
13.	अल्पना सिंह	जनसंख्या एवं आर्थिक विकास	75-80
14.	अखलाक मो. खान	निवेशकों का विश्वास बढ़ाने में नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का योगदान	81-85
15.	Dr. Girish Chandra Gupta Kalpeshkumar Patel	An Impact of FDI on Indian Economy	86-93
16.	Dr. Kavita Agrawal	A Study of Decadal Growth of Population of Mhow Cantonment	94-100
17.	Dr. Sandhya Goel	GST in India - Salient Features	101-107
18.	डॉ. प्रेरणा ठाकुर	भारत में गौरक्षा का इतिहास	108-112
19.	डॉ. प्रीति चौहान	मीराबाई का सम्पूर्ण जीवन महापरिवर्तन का मार्ग है	113-117
20.	डॉ. सपना चक्रवर्ती	कुछ शंकाएँ, कुछ समाधान : भारतीय संविधान की समीक्षा	118-122

आपका ऑनलाइन डाटा सिक्योर है?

डॉ. सुधीर सक्सेना
सहायक प्राध्यापक – समाजशास्त्र
श्री अटल बिहारी वाजपेयी
शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
इन्दौर (म.प्र.)

क्या आप जानते हैं कि आपके ऑनलाइन डाटा, क्रेडिट कार्ड डिटेल और मेडिकल रिकॉर्ड को आसानी से खरीदा जा सकता है। भारत इस चुनौति के लिए तैयार नहीं है, तो दूसरी ओर यह भी सच है कि देश में 'डिजीटल इंडिया' के तहत सभी नागरिकों के डाटा को ऑनलाइन रखने की दिशा में काम हो रहा है। हाल ही इनटेल सिक्योरिटी ग्रुप की रिपोर्ट में यह बात कही गई है। इनटेल के अनुसार हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौति यह है कि किस तरह डाटा को सुरक्षित रखा जा सके। भारत इसके लिए तैयार नहीं है और इस लिहाज से यहाँ ऑनलाइन चोरी करना सहज हो गया है। एटीएम क्रेडिट कार्ड और बैंक अकाउंट हैक कर लोगों की इंफोर्मेशन पर लगाम लगाने के लिए नए सिक्योरिटी सिस्टम तैयार किए जा रहे हैं। स्मार्टफोन से हम न सिर्फ बात करते हैं बल्कि बैंकिंग, मेल, शॉपिंग भी करते हैं। ऐसे में हमें स्मार्टफोन को लेकर ज्यादा सतर्क रहने की जरूरत है। हमें इसके सुरक्षा उपाय अपनाने चाहिए, क्योंकि इसके डाटा में सेंध लगी तो बड़ा नुकसान हो सकता है। जरूरी है कि स्मार्टफोन के डाटा को सिक्योर्ड करें।

ऑनलाइन डाटा चुराना लंबे समय से एक ट्रेंड बन गया है। यहां तक कि कई वेबसाइट पर ऐसे टूल हैं, जिनसे फाइनेंशियल डाटा चुराना आसान हो गया है। यह एक सामान्य प्रक्रिया जैसा है, वैसे भी अपराधियों को तो कोई टूल की जरूरत नहीं होती। रिपोर्ट में कहा गया है कि इस इंफोर्मेशन को आसानी से बेचा जा सकता है, जो महंगा भी नहीं है। देश में रजिस्टर्ड क्रेडिट कार्ड की डिटेल्स 15 डॉलर में प्राप्त की जा सकती है, जबकि पता, फोन नंबर, जन्मतिथि और माँ का नाम और अन्य सूचना के लिए 30–35 डॉलर खर्च होते हैं। ब्रिटेन में यह दर भारतीयों जितनी ही है।

सावधानी भली

इसका मतलब है कि जब आप क्रेडिट कार्ड खरीद रहे होते हैं, तो यह इकोनॉमी के लिहाज से खासा महत्वपूर्ण है। आपके क्रेडिट कार्ड में कितना पैसा है और आपकी खर्च

करने की लिमिट कितनी है और वेलेडिटी डेट क्या है? यानी जिस बैंक अकाउंट में 400–1000 डॉली का बैलेंस है, उसे 20–50 डॉलर में खरीदा जा सकता है और 1000–2500 डॉलर के अकाउंट को 50–120 डॉलर में। जबकि 2500–5000 डॉलर के अकाउंट को 120–200 डॉलर तथा 5000–8000 डॉलर के अकाउंट को 200–300 डॉलर में खरीदा जाना संभव है।

सुरक्षा के इंतजाम

किसी भी तकनीक का इस्तेमाल करना चुनौतिपूर्ण होता है लेकिन असल चीज जो मायने रखती है कि क्या सुरक्षा का प्रबंधन किया जा सकता है। चिंता इस बात को लेकर उठती है कि इस डाटा को कौन एक्सेस करता है और डाटा कहाँ रखा जाता है। भारत में डाटा प्रायवेसी नीति की जरूरत है। इसके लिए प्रायवेसी फोरम गठित होनी चाहिए। कुछ मामलों में नियामक स्तर पर भी बदलाव की जरूरत है। आम धारणा है कि ऑनलाइन होने से सूचना किसी के भी हाथ लग सकती है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि कोई भी व्यक्ति किसी खास सूचना तक पहुँच जाए। कुल मिलाकर सूचना तक हर किसी की पहुँच नहीं होनी चाहिए। इस मामले में डाटा की सुरक्षा के लिए पुख्ता इंतजाम किए जाने चाहिए।

शेयर करते हैं प्रायवेसी

एक अन्य स्टडी, जिसमें टीन एजर्स का आकलन किया गया, जिसमें पाया गया कि 92 प्रतिशत भारतीय युवा अपनी प्रायवेट इंफोर्मेशन सोशल मीडिया या अन्य स्त्रोतों पर साझा करते हैं। इनटेल सिक्योरिटी ने 'मैक ए फी' के तहत ऑनलाइन बिहेवियर की पड़ताल की। इसमें किशोर शामिल थे। रिपोर्ट के मुताबिक 53 प्रतिशत टीन एजर्स वर्चुअल वर्ल्ड में यकीन करते हैं और उसी से अपना दायरा बढ़ाते है। 51 फीसदी अपनी प्राइवेसी के लिए सचेत नहीं हैं। इनमें से 3 में से 2 ने पाया कि वे साइबर बुलिंग के शिकार हुए हैं और नहीं जानते कि इससे कैसे निपटा जाए।

ऑनलाइन, पर रहें सेफ

जब भी आप अपने क्रेडिट या डेबिट कार्ड या फिर ऑनलाइन बैंकिंग की मदद से शॉपिंग करते हैं, साइबर फ्रॉड की आशंका रहती है। सवाल उठता है कि कैसे हम प्लासटिक मनी के इस्तेमाल को सेफ बना सकते हैं। सुनिश्चित करें कि जिस साइट से ट्रांजेक्शन कर रहे हैं, वह भरोसे के लायक है। डेबिट और क्रेडिट कार्ड में कई तरह के

सिक्योरिटी फीचर होते हैं। ये कार्ड वीजा या मास्टर कार्ड सिक्योर कोड से वेरीफाइड होते हैं। कार्ड से ट्रांजेक्शन के लिए ओटीपी यानी वन टाइम पासवर्ड जरूरी होता है। बैंक फोन या ईमेल पर ओटीपी भेजते हैं। ईएमवी चिप क्रेडिट और डेबिट कार्ड में एक और सिक्योरिटी फीचर है। भारत में कार्ड में मैग्नेटिक स्ट्रिप और ईएमवी चिप दोनों तरह के मौजूद हैं। मैग्नेटिक स्ट्रिप से डारा चोरी का खतरा ज्यादा रहता है। ईएमवी चिप वाले कार्ड से डारा चोरी बेहद मुश्किल होता है। फिशिंग की आशंका बनी रहती है। जरूरी है कि आप बैंक–कार्ड कंपनी के नाम पर आए ईमेल से साबधान रहें, कोई भी बैंक–कार्ड कंपनी कार्ड के डिटेल्स नहीं मांगती।

सेल्फी और फिंगरप्रिंट से पेमेंट

अब ग्राहक को ऑनलाइन पेमेंट करते समय अपना पासवर्ड यूज करने के बजाय सेल्फी और फिंगरप्रिंट पोस्ट करनी होगी, जल्द ही ऐसा होने वाला है। फिलहाल, ऑनलाइन खरीदारी करते समय आपको अपना अकाउंट नंबर और पासवर्ड सब्मिट करना होता है जिसके हैक होने की संभावना होती है। या फिर अगर किसी को आपका पासवर्ड पता चल जाए तो वह भी आपके अकाउंट से खरीदारी कर सकता है। रिपोर्ट्स के मुताबिक योजना है कि जैसे ही आप भविष्य में ऑनलाइन पैमेंट करेंगे, संबंधित बैंक का एप आपसे पासवर्ड के बजाए सेल्फी और फिंगरप्रिंट पोस्ट करने को कहेगा। इसके साथ ही आपके मोबाइल पर एक मैसेज आएगा, जिसमें आपसे ऑनलाइन पैमेंट करने की जानकारी दी जाएगी। इसके बाद आपको मोबाइल एप से ही सेल्फी लेने को कहा जाएगा, जिसमें आपका चेहरा साफ–साफ दिखाई देता हो। यह सेल्फी पैमेंट करते समय की हो। हर ऑनलाइन ट्रांजेक्शन के समय सेल्फी यूज करनी होगी। सेल्फी पोस्ट करने के बाद एप इसे फेशियल रिकोग्निशन सॉफ्टवेयर से वैरिफाई करेगा। जैसे ही आपकी सेल्फी रजिस्टर सेल्फी से मैच करेगी, ऑनलाइन पैमेंट की प्रक्रिया आगे बढ़ेगी।

मोबाइल से हुआ सहज

देश में इस 319 मिलियन इंटरनेट यूजर्स हैं, इनमें से 213 मिलियन मोबाइल पर इंटरनेट यूज करते हैं। देश में 41 प्रतिशत ई–कॉमर्स मोबाइल से ही हो रहा है। इससे खतरा बढ़ ही रहा है। वैसे भी इंटरनेशनल डाटा कॉर्पोरेशन की हालिया रिपोर्ट के मुताबिक भारत 2017 तक स्मार्टफोन खरीदने के मामले में दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा देश होगा। रिपोर्ट में बताया गया है कि एंड्रॉइड फोन को मात्र एक मैसेज से हैक किया जा सकता

है। यह बढ़ोतरी इस बात की जरूरत दिखाती है कि मोबाइल सिक्योरिटी महफूज रहे। यह सच है कि यूथ नई टेक्नोलॉजी को यूज करने में आगे है, ऐसा सभी मुल्कों में है।

डिजीटल इंडिया बनने के लिए

साइबर सिक्योरिटी में पब्लिक पार्टनरशिप देश को फायदा पहुँचा सकती है। इनटेल डिजीटल स्तर पर लोगों को शिक्षित करने के लिए प्रयासरत है और अभी डिजीटल वैलनेस की दिशा में काम चल रहा है। हाल ही 'डिजीटल इंडिया वीक' के तहत इनटेल ने राष्ट्रीय ई–गर्वनेंस डिवीजन के साथ काम किया। इसमें 6–12 साल के बच्चों में डिजीटल जागरूकता बढ़ाने के लिए क्विज आयोजन हुए। सप्ताहभर में करीब एक मिलियन बच्चों ने भाग लिया।

माइक्रोसॉफ्ट सेफर ऑनलाइन पोल की खास बातें

- 35 फीसदी पुरूष सुरक्षित वायरलेस नेटवर्क का इस्तेमाल करते हैं जबकि सिर्फ 32 फीसदी महिलाएं ऐसा करती हैं।
- 70 फीसदी पुरूष अनजान आईडी से आए मेल या मैसेज को तुरंत रिसीव कर लेते हैं जबकि 65 फीसदी महिलाएं ही ऐसा करती हैं।
- 40 फीसदी महिलाएं अपनी जानकारी ऑनलाइन मीडियम पर सूचना सार्वजनिक नहीं करती हैं जबकि 37 फीसदी पुरूष ऐसा करते हैं।
- 34 फीसदी महिलाएं मोबाइल से ऑनलाइन मैसेज भेजने में सजग रहती हैं जबकि केवल 31 फीसदी पुरूष ही ऐसा कर पाते हैं।
- 35 फीसदी पुरूष फोन लाफक करने के लिए पिन या पासवर्ड का इस्तेमाल करते हैं जबकि इस मामले में केवल 33 फीसदी महिलाएं ही ऐसा करती हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

01. Gunasekaran, A., & Love, P. (1999). Current and future directions of multimedia technology in business. International Journal of Information Management, 19(2), 105-120.
02. Karim, Z., et al. (2009). Towards secure information systems in online banking. Paper presented at the International Conference for Internet Technology and Secured Transactions, 2009 (ICITST 2009), London

03. Subsorn, P. & S. Limwiriyakul. (2011a). A comparative analysis of the security of Internet banking in Australia: A customer perspective. Presented in 2nd International Cyber Resilience Conference (ICR2011). Perth, Australia: Edith Cowan University.
04. Subsorn, P. & S. Limwiriyakul. (2011b). A comparative analysis of internet banking security in Thailand: A customer perspective. Presenting in 3rd International Social Science, Engineering and Energy Conference 2011 (ISEEC2011). Nakhon Pathom, Thailand.
05. Hamid, M. R. A., et al. (2007). A comparative analysis of Internet banking in Malaysia and Thailand. Journal of Internet Business(4), 1-19.
06. Hutchinson, D., & Warren, M. (2003). Security for Internet banking: A framework. Logistics Information Management, 16(1), 64 -73.
07. Steinfield, C. (2002). Understanding click and mortar ecommerce approaches: A conceptual framework and research agenda. Journal of Interactive Advertising, 2(2), 1- 10.
08. The National Office for the Information Economy (NOIE), et al. (1999). Banking on the Internet: A Guide to Personal Internet Banking Services. Retrieved April, 2011, from http://www.archive.dcita.gov.au/1999/08/banking
09. Gurau, C. (2002). Online banking in transition economies: The implementation and development of online banking systems. International Journal of Bank Marketing, 20(6), 285-296.
10. Usonlinebiz. (2008). Types of Internet banking and security threats Retrieved April, 2011, from http://www.usonlinebiz.com/article/Types-of-InternetBanking-and-Security-Threats.php

Changing Scenario of Indian Retail Sector

Dr. Rajendra SinghWaghela
Professor in Commerce
Shri Atal Bihari Vajpayee
Govt. Arts and Commerce College,
Indore

Brijesh H Joshi
Research Scholar

ABSTRACT

India is fast becoming the retail destination of the world. According to the international management consultant AT Kearney, India has emerged as the leader in terms of retail opportunities. The retail market in India is anticipated to grow to 427 billion USD by the year 2010.Retailing as simply defined is the end process of supply chain management where there is a direct interaction with the end-user or the customer. The word "Retail" has its origins in the French verb "Retailer", which means "to cut up", and refers to one of the fundamental retailing activities which is to buy in larger quantities and sell in smaller quantities. Retailing is an integral part of the value chain in an organization. It is a function that provides the 'last mileage connectivity' between an organization and its customers. In many parts of the world retailers have emerged as one of the most potent forces in influencing the performance of the value chain. The present research paper is focused on the current scenario of Indian retail sector.

Key words: *Indian retail sector, Growth of retail, formats of retail, challenges of Indian retail sector.*

Introduction

Retailing as simply defined is the end process of supply chain management where there is a direct interaction with the end-user or the customer. The word "Retail" has its origins in the French verb "Retailer", which means "to cut up", and refers to one of the fundamental retailing activities which is to buy in larger quantities and sell in smaller quantities. Retailing is an integral part of the value chain in an organization. It is a function that provides the 'last mileage connectivity' between an organization and its customers. In many parts of the world retailers have emerged as one of the most potent forces in influencing the performance of the value chain.

Retailing involves the sale of merchandise from a fixed location, such as store, for direct consumption by the customer. It can be defined as an activity that ensures that customers derive maximum value from the buying process. This involves activities and step needed to place the merchandise made elsewhere into the hands of customers or to provide services to

the customers. Retailing involves direct interface with the customer and the co-ordination of business activities from end to end. Retail was the final stage of any economic activity. By virtue of this fact, retail occupied an important place in the world of economy. According to Philip Kotler, "Retail includes all the activities involved in selling goods or services to the final consumers for personal, non-business use. A retailer or retail store was any business enterprise whose sales volume comes primarily from retailing.

One of the major roles played by retailers is to enable the adoption of product and services. "A retailer is a person who specialises in selling certain types of goods and services to consumer for their personal use". Retailer organise the availability of merchandise on a large scale and supply them to consumers on a relatively small scale. In the process, they provide the accessibility of the location and convincing of time size, information, and lifestyle support. When retailer perform this activates, they create value for their customers, who pay for these services. These values are created continuously through a combination of service; price, accessibility and experience. "There are many kinds of retail stores including grocery stores, department stores, speciality stores, convenience store, chemist stores and fast food outlets, among others. Retailing is the business of buying goods in large quantities from a manufacturer or a wholesaler and then selling these products and service to consumers for fulfilling their personal or family needs. A retailer is, in fact the final link in the distribution channel connecting the manufacturer with the consumer".

Retailing and Development

Retailing has always played an integral part in economic development. Nations with strong retail activity have enjoyed greater economic and social progress. Retailing activity provides a clear indication of the spending pattern of the consumption of a country. Retiling contributes to development by making the goods/services from the producer and suppliers of merchandise available to the population, catering to their individual requirements. India's retail sector appears quite lucrative with estimates to touch around US$ 833 billion by 2013 and US$ 1.3 trillion by 2018, with a 10% compound annual growth rate (CAGR). As per the estimates of Indian Retail Report 2011, the modern retail in the next five years is expected to contribute to a minimum of one third of the market of 40 trillion.

In A.T. Kearney's 2014 Global Retail Development Index™, *the theme is continued expansion. For the most part, multinational retailers are continuing their push into developing markets, and regional giants are spreading to neighbouring markets.*

The highlights of the 2014 GRDI include:

Chile ranks first for the first time. Years of economic and political stability have helped the country build one of South America's most sophisticated retail environments. The past year brought several major investments in malls, new entries by international retailers, and expansions by local leaders.

China moves back into second place this year. Even as the economy slows and conditions become more difficult for foreign retailers, the huge and growing market is impossible to ignore.

Sub-Saharan Africa continues to show momentum with three ranked countries, including newcomer Nigeria. GDP growth of 5 per cent, rising household incomes, fast urbanization, and a growing middle class give this region massive retail potential. South African retailers Shoprite and Woolworths have spearheaded Sub-Saharan Africa's shift to modern retail.

Table: 1.1 2014 Global Retail Development Index Country Wise

2014 Rank	Country	Market Attractiveness	Country Risk	Market Saturation	GRDI Score
1	Chile	100.0	100.0	13.2	65.1
2	China	60.9	52.5	44.5	64.4
3	Uruguay	93.4	57.5	70.3	63.4
4	United Arab Emirates	98.5	82.3	17.5	60.5
5	Brazil	99.4	59.8	48.7	60.3
6	Armenia	26.4	35.3	81.5	57.5
7	Georgia	32.4	32.8	79.6	55.9
8	Kuwait	78.8	72.6	32.9	54.0
9	Malaysia	66.7	68.7	32.2	52.8
10	Kazakhstan	45.4	38.5	72.7	52.7
To Consider In Global Retail Development Index					
11	**Turkey**	**83.6**	**50.2**	**46.5**	**52.6**
12	**Russia**	**94.0**	**38.4**	**30.7**	**52.4**
13	**Peru**	**46.0**	**43.0**	**61.9**	**50.6**
14	**Panama**	**56.2**	**46.9**	**52.7**	**49.3**
15	**Indonesia**	**46.2**	**33.4**	**57.7**	**49.2**
16	**Oman**	**75.1**	**79.1**	**27.0**	**48.1**
17	**Sri Lanka**	**6.3**	**36.7**	**78.8**	**47.3**
19	**Nigeria**	**39.6**	**6.6**	**92.3**	**46.6**
20	**India**	**26.4**	**39.0**	**72.3**	**45.3**

Source: *2014 Global Retail Development Index, Full Steam Ahead For Global Retailers, AT Kearney Analysis, p: 02.*

Types of Retail Worldwide

There are numerous types of retailers all over the world. From the small, independent grocery store to the highly sophisticated multi level department store, the number of retailers is absolutely unlimited. In the business of retailing, however, the types of retailers identified are classified on the basis of the 'store format' that the respective retailer adopts.

A retail format is the type of retail mix that the retailer adopts, which includes the following factors.

- The nature of merchandise and services offered by the retailer;
- The pricing policy of the merchandise by the retailer;
- The retailer's approach to advertising and promotional programmes;
- The retailer's approach to the design of the store as well as to visual merchandise;
- The choice of location preferred by the retailer for the above; and
- The size of the store.

Deciding on a retail format is the most essential component of a retail strategy. Some of the most popular retailing formats adopted in organised retailing over the world are as follow:

1. Convenience stores;
2. Speciality stores;
3. Supermarkets;
4. Discount stores;
5. Superstores or combination stores;
6. Department stores;
7. Hypermarket;
8. Warehouse stores/warehouse clubs;
9. Shopping malls;
10. Direct catalogue retailing; and Web stores.

Retail Formats in India

India is a large marketplace, with diversities in terms of people, culture, cities, region, etc. and various companies work on different models to cater to the diverse needs on people. Likewise, in retail various formats co exist and continue to grow. Today while modern retailing is gaining prominence, traditional retailing also continues to attract consumers given their customised value offering.

The first phase of modern retail was evident in late 1990's when the concept of department stores was popularized in the Indian market. These department stores were perceived more

like a mall-the air conditioning environment selling quality products under one roof. During this period, speciality stores also gained popularity in varied segments like books and music, consumer durables, etc. though with very a limited penetrations. The second phase of growth took place post 2005 with several large players coming up in the food and grocery formats-hypermarkets, supermarkets and convenience stores. This phase was more about testing the market, creating consumer awareness and selling the propositions of modern stores to them. Major growth was seen during 2008 to 2010 when the concept of modern retailing was gaining popularity. This period was marked with launch of various malls as well as entry of large international groups primarily in cash and carry and speciality stores format. This was the time when retailers focused more on strengthening their back-end systems and get themselves up for the rapid expansion phase.

The current phase is seen form 2010 onwards where entry of international players is on a surge, several existing formats are being remodelled around the needs and expectations of new generation and rapid expansion plans are underway to tap the opportunities in the market. Further, with the possibilities of opening up of retail sector for FDI, many international players are chalking out plans to enter Indian market and create a whole new experiential shopping environment for the consumer. Many researcher and retailers analysts the Indian retail formats with the growth and expansion of retailing in India. Retail formats are classified on the basis of products categories dealt, as indicated below.

Recent Trends

- Retailing in India is witnessing a huge revamping exercise as can be seen in the graph
- India is rated the fifth most attractive emerging retail market: a potential goldmine.
- Estimated to be US$ 200 billion, of which organized retailing (i.e. modern trade) makes up 3 percent or US$ 6.4 billion
- As per a report by KPMG the annual growth of department stores is estimated at 24%
- Ranked second in a Global Retail Development Index of 30 developing countries drawn up by AT Kearney.
- Multiple drivers leading to a consumption boom:
- Favorable demographics
- Growth in income
- Increasing population of women
- Raising aspirations: Value added goods sales
- Food and apparel retailing key drivers of growth

- Organized retailing in India has been largely an urban
- Phenomenon with affluent classes and growing number of double-income households.
- More successful in cities in the south and west of India. Reasons range from differences in consumer buying behavior to cost of real estate and taxation laws.
- Rural markets emerging as a huge opportunity for retailers reflected in the share of the rural market across most categories of consumption

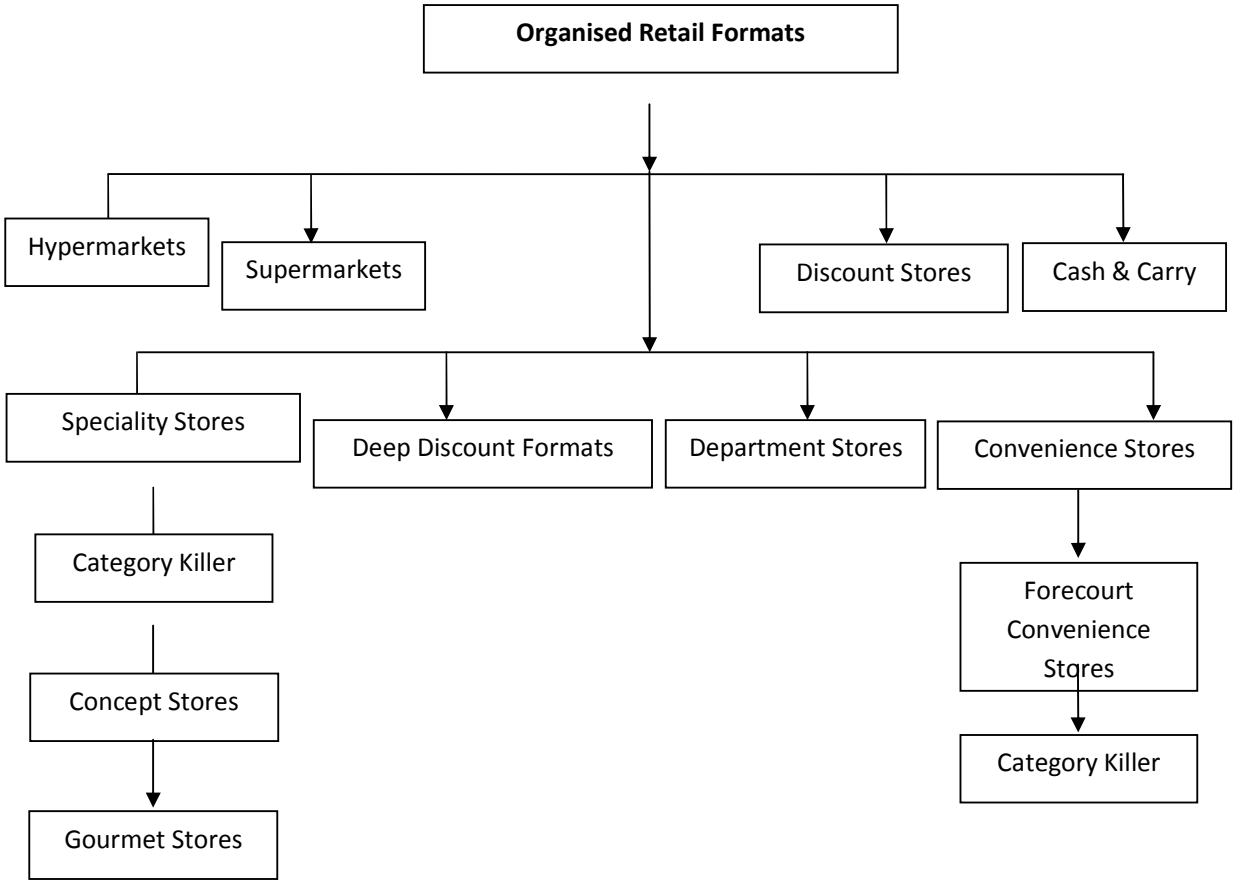

Source: *Indian Retail Report: 2013*

Figure: 1.1. Classification of Retail Formats in India

Figure: 1.1 Retail formats are classified on the basis of products categories dealt, as indicated below.

Major Challenges Facing by Indian Retail Sector

The challenges facing the Indian organized retail sector are various and these are stopping the **Indian retail industry** from reaching its full potential. The behavior pattern of the Indian consumer have undergone a major change. This have happened for the Indian consumer is

earning more now, western influences, women working force is increasing, desire for luxury items and better quality. He now wants to eat, shop, and get entertained under the same roof. All these have lead the Indian organized retail sector to give more in order to satisfy the Indian customer.

International Standards:

Even though India has well over 5 million retail outlets of different sizes and styles, it still has a long way to go before it can truly have a retail industry at par with International standards. This is where Indian companies and International brands have a huge role to play.

Inefficient supply chain management:

Indian retailing is still dominated by the unorganized sector and there is still a lack of efficient supply chain management. India must concentrate on improving the supply chain management, which in turn would bring down inventory cost, which can then be passed on to the consumer in the form of low pricing.

Lack of Retail space:

Most of the retail outlets in India have outlets that are less than 500 square feet in area. This is very small by International Standards.

Cultural Diversity:

India's huge size and socio economic and cultural diversity means there is no established model or consumption pattern throughout the country. Manufacturers and retailers will have to devise strategies for different sectors and segments which by itself would be challenging. Real estate issues: The enormous growth of the retail industry has created a huge demand for real estate. Property developers are creating retail real estate at an aggressive pace. With over 1,000 hypermarkets and 3,000 supermarkets projected to come up by 2011, India will need additional retail space of 700,000,000 sqft (65,000,000 m2) as compared to today.

Human resource problems:

Trained manpower shortage is a challenge facing the organized retail sector in India. The Indian retailers have difficultly in finding trained person and also have to pay more in order to retain them. This again brings down the Indian retailers profit levels.

Frauds in Retail:

It is one of the primary challenges the companies would have to face. Frauds, including vendor frauds, thefts, shoplifting and inaccuracy in supervision and administration are the challenges that are difficult to handle. This is so even after the use of security techniques, such as CCTVs and POS systems. As the size of the sector would increase, this would increase the number of thefts, frauds and discrepancies in the system.

Challenges with Infrastructure and Logistics:

The lack of proper infrastructure and distribution channels in the country results in inefficient processes. This is a major hindrance for retailers as a non-efficient distribution channel is very difficult to handle and can result in huge losses. Infrastructure does not have a strong base in India. Urbanization and globalization are compelling companies to develop infrastructure facilities. Transportation, including railway systems, has to be more efficient. Highways have to meet global standards. Airport capacities and power supply have to be enhanced. Warehouse facilities and timely distribution are other areas of challenge. To fully utilize India's potential in retail sector, these major obstacles have to be removed.

Conclusion

India is moving ahead towards new format of retail sector. Several emerging markets have changed through modern retail. Now, India has new face of retail in both organized and unorganized. There is requirement of balanced between retail and approach of government for the betterment of the future retail scenario. Now people are forgotten traditional retail formats and they accepted modern retail design like convenience, departmental stores and branded showrooms. There has been an organic growth of malls in the major cities, especially from 2006 onwards.

India is passing through a retail boom today. A number of changes have taken place on the Indian retail front such as increasing availability of international brands, increasing number of malls and hypermarkets and easy availability of retail space. With the Indian government having opened up the doors for FDI, the entry of foreign retailers into the country has become easier. India has come a long way from the traditional Kirana stores and is on its way to becoming a 'mall country'. The emphasis has shifted from reasonable pricing to convenience, efficiency and ambience.

Finally, we concluded that with the changing in the consumer habit, changing in the consumer demands, changing in the income pattern and development of the modernization in the Indian consumers will always lead to changing Indian retail sector.

References

01. Ankush Sharma & Preeta Vyas. (2007). DSS (Decision Support Systems) in Indian organised Retail Sector, *"Indian Institute of Management, Ahmedabad",* W.P. No.2007-06-04, June 2007, p: 03.
02. Mohammad Rafiq. (2014). "*Principles of Retailing*", Palgrave Macmillan, ISBN: 1137354526, 9781137354525, p: 02.

03. Neekita Kenkre. (2012-2014). Pre-Season Planning and In-Season Performance Analysis of the Ladies' Ethnic-wear Private Labels, p: 01.
04. http://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/37233/3/chapter%20-%203.pdf, p: 34-35.
05. Dr._Narendra Kumar, Dr._Mukesh_Dhunna, Divyaa Sharma. "*Basics of retail Management" VK Publication ISBN:* 9380006837, 9789380006833*,* P: 04.
06. Piyush Kumar Sinha, Sanjay Kumar Kar. (2007) An Insight into the Growth of New Retail Formats in India, *"Indian Institute of Management, Ahmedabad",* W.P. No.2007-03-04, P: 02-03.
07. http://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/13557/9/09_chapter%201.pdf.
08. http://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/13557/9/09_chapter%201.pdf.
09. Gibson G. Vedamani. (2003). "*Retail Management*", Jaico Publishing House, ISBN: 8179921514, 9788179921517, 4th ed.
10. Mike Peng. (2010). *"Global Business".* Cengage Learning, p: 481-482.
11. Dr. M. Dhanabhakyam, Indian retail scenario, its growth, challenges and opportunities.

भोज कालीन स्थापत्य कला

डॉ. श्रीमती शिवा खण्डेलवाल
सहायक प्राध्यापक – इतिहास
श्री अटल बिहारी वाजपेयी
शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
इन्दौर (म.प्र.)

सारांश

धार नगर भारत के प्रमुख ऐतिहासिक नगरों में से एक है। राजा भोज के काल में यहाँ अनेक भवनों, मंदिरों, बावड़ियों का निर्माण किया गया। इनमें प्रमुख हैं – भोजशाला, सरस्वतीकूप, लाटमस्जिद, भोजपुर झील, भोजपुर का शिव मंदिर, धारेश्वर मंदिर आदि। इसके अतिरिक्त इन्होंने अनेक जैन मंदिरों का भी निर्माण कराया था।

मध्यप्रदेश की ऐतिहासिकता बढ़ाने में जिन विभिन्न स्थानों का नाम लिया जाता है, उनमें धार भी प्रमुख है। विगत काल की स्मृतियों के बहुत से चिन्ह शायद मौन भाषा में ही उसकी प्राचीनता व गौरव व महिमा का गुणगान करते है। अतीत के उन पृष्ठों को यदि आज उल्टा जाये तो एक ऐसे युग की झलक मिलती है, जिसमें सर्वांगीण प्रगति का इतिहास निहित है, वह समय था राजा भोज के शासन काल का।

राजा भोज के द्वारा निर्मित अनेक कलात्मक भवन मंदिर बावड़ी आदि के खण्डहर आज भी उस काल की स्थापत्य कला के सौंदर्य का ज्ञान कराते है। उनमे प्रमुख है :–

भोज शाला –

धार की वर्तमान कमाल मौला मस्जिद मूलतः भोज द्वारा निर्मित एक संस्कृत पाठशाला थी। इसे भारती भवन या शारदा सदन के नाम से भी पुकारा जाता है। तेरहवी सदी के प्रभाचन्द्राचार्य द्वारा रचित प्रभावक चरित[1] में बताया गया है कि, धार के इस विद्या मठ में छात्र राजा भोज का रचा व्याकरण रात दिन पढ़ा करते थे।

भोज शाला में कई पूर्ण तथा अपूर्ण तथा छिले हुए शिलालेख मिलते है। भोज शाला की फर्श पर और दीवारों पर काले चिकने पत्थर पर संस्कृत और प्राकृत भाषा के लेख तथा काव्य खुदे हुए थे उन्हें खुरचकर न पढ़ने योग्य बनाकर या छेनियों से साफ कर फर्श पर लगा दिया गया है फिर भी उसके अनेक सुन्दर अक्षर और कहीं कहीं काव्य या श्लोक फर्श पर लगे उन पाषाणों पर आज भी दिखाई देते हैं।

आज भी भोज शाला के स्तम्भों पर संस्कत धातु प्रत्यय माला एवं वर्ण माला, नागबन्ध चित्र के रूपांक स्पष्ट खुदे देखे जा सकते है। जिनसे संस्कृत व्याकरण का ज्ञान प्राप्त होता है। इससे स्पष्ट है कि, यह भवन भोज की पाठशाला ही होगी। राजा भोज इसी भोज शाला में विद्वत चर्चा किया करते थे।

इसी शारदा भवन में राजा भोज ने लगभग डेढ़ मीटर ऊँची लाल पत्थर की सरस्वती की एक सुन्दर प्रतिमा प्रतिष्ठित की थी। यह प्रतिमा आजकल लंदन के ब्रिटिश म्यूजियम में सुरक्षित हैं।

14वीं और 15वीं शताब्दी में धार में मुस्लिमों का अधिपत्य हो जाने पर मोहम्मद शाह खिलजी ने इस भोज शाला को मस्जिद में परिणित कर दिया। यह वृतान्त दरवाजे पर के फारसी लेख से प्रकट होता है।[2] इसमें आजकल सूफी संत कमाल मौला की समाधि हैं।

डॉ. गांगुली का मत है कि, इसकी वर्तमान रचना पूर्णतया मुसलमान शैली की है और प्रतीत होता है कि, यह इसी स्थान पर खड़े हुए किसी हिन्दू मंदिर के उपादान से बनाया गया है।[3] डॉ. भंडारकर का भी यही मत है कि, यह सरस्वती मंदिर का स्थान था जिसका नामोल्लेख पारिजात मंजरी में है। आजकल यहाँ प्रतिवर्ष बसंत पंचमी पर भोज स्मृति दिवस का अयोजन होता है, एवं भोज की ईष्ट देवी सरस्वती का पूजन होता है।

सरस्वती कूप –

भोजशाला के पास ही छोटा सा कुआँ है जो सरस्वती कूप या ''अक्कल कुई''[4] के नाम से प्रसिद्ध है। इस कुएँ का जल पीने से मनुष्य विद्या प्रेमी होकर सरस्वती का उपासक बन जाता हैं।

विजय स्तम्भ या लाट मस्जिद –

राजा भोज ने अपने साम्राज्य विस्तार के लिये गांगेय देव तथा तेलंगाना राज्य पर आक्रमण कर विजय प्राप्त की थी। इस विजय के उपलक्ष्य में उन्होंने धातुओं को गलाकर एक विशाल लौह स्तम्भ को बनवाकर धार के सूर्य महल के प्रवेश द्वार के आगे राजप्रसाद के बाजू में विजय स्तम्भ के रूप में खड़ा किया था।[5] परिजात मंजरी में भी कहा गया है कि, भोज ने गांगेय की पराजय का उत्सव मनाकर अपने मनोरथों को पूर्ण किया था।

इस पर लिखे लेख से ज्ञात होता है कि, बाद में सन् 1405 ई. में दिलावर खां गोरी ने इसे मस्जिद में परिणित कर दिया। इस मस्जिद के पास ही लोहे की एक लाट पड़ी है, इसी से लोग इसे लाट मस्जिद कहते हैं। इसका उल्लेख तुजुके जहांगीरी में भी हुआ था।

उसमें लिखा है कि यह लाट दिलावर खां गोरी ने हिजरी सन् 870 में उक्त मस्जिद बनवाने के समय वहां पर रखी थी परन्तु उस पुस्तक में हिजरी संवत् 807 के स्थान पर 870 लिखा गया है। उसमें यह भी लिखा है कि, देहली के बादशाह सुलतान फिरोज के लड़के सुलतान महमूद के जमाने में उम्मीद शाह गौरी ने जिसका दूसरा नाम दिलावर खां गोरी था किले के बाहर वाले मैदान में जुमा मस्जिद बनवाकर एक लोहे की लाट खड़ी की थी। इसके बाद जब सुल्तान गुजराती ने मालवे पर कब्जा कर लिया तब उसने उस लाट को गुजरात ले जाना चाहा परन्तु ऐतिहाति से उस समय वह टूट गई। उसका एक टुकड़ा $7^{1/2}$ गज का और दूसरा $4^{1/4}$ गज का है तथा उसकी परिधि $1^{1/4}$ गज की हैं।[6]

भोजपुर का शिव मंदिर –

राजा भोज के ही नाम पर भोजपुर में भोजेश्वर नामक एक बड़ा शिव मंदिर है, इसके प्रवेश द्वार, मण्डप, प्रदक्षिणा पथ आदि प्रायः नष्ट हो चुके है। मंदिर का विस्तृत गर्भगृह सुरक्षित है जिसमें काले पाषाण का विशाल ज्योर्तिलिंग प्रतिष्ठित है।

आगमों तथा शिल्प शास्त्रों में शिव मंदिरों के जो वास्तु लक्षण मिलते है, उनके अनुरूप ही इस मंदिर का निर्माण हुआ। इसी प्रकार मंदिर की मूर्तियों के उत्कीर्ण करने में भी प्रतिमा लक्षणों का विशेष ध्यान रखा गया है।[7]

भोजपुर झील –

भोपाल के निकट भोजपुर में निर्मित यह झील अब भी राजा भोज की स्मृति संजोये हुए है। यह सरोवर जिस पर्वत की दीवार से घिरा है, इसमें मात्र दो दर्रे है। भोज के अभियंताओं ने इन दोनों दर्रों को अत्यन्त अद्भूत बांधो द्वारा जोड़ दिया है जिसके केन्द्रीय भाग में भीतरी और बहारी दोनों ओर बिना चूना या सीमेंट की सहायता के ही विशालकाय पत्थर एक दूसरे से सटाकर रखे गये है, ये प्रस्तर खण्ड इतने सटे हुए है कि, इनमें जल भी प्रवेश नहीं कर सकता।

माण्डव के शसक शाह हुसैन ने कम चौड़े किन्तु अधिक ऊँचे बांध को तुड़वा दिया था क्योंकि उसे इस सरोवर के जल को उपयोग में लाना था। परमार वंशीय राजाओं के ऐश्वर्यशाली शासन में मालवा के लोागों ने कितनी अभियांत्रिक प्रवीणता और शिल्प कुशलता प्राप्त की थी उसके साक्ष्य स्वरूप यह भोजपुर सरोवर आज भी वर्तमान हैं।[8]

कपटेश्वर स्थित पाप सूदन तीर्थ का कुण्ड व मंदिर –

कल्हण द्वारा रचित राजतंरगिणी[9] मे उल्लेख है कि, मालवा के नरेश भोज ने कश्मीर के कपटेश्वर में एक जलाशय निर्मित किया। कल्हण ने यह भी लिखा है कि, मालवा के राजा भोज ने अपने मुख को प्रतिदिन कश्मीर स्थित पाप सूदन तीर्थ के जल से प्रक्षालन करने की किसी समय प्रतिज्ञा की थी।

रेऊ इससे इस निष्कर्ष पर पहुॅचते है कि, राजा भोज ने बहुत सा द्रव्य खर्च कर कश्मीर राज्य के कपटेश्वर स्थान में पाप सूदन तीर्थ का कुण्ड बनवाया और हमेशा उसी के जल से मुहॅ धोया करता था, इसलिए उसने वहॉ से जल मंगवाने का भी पूरा प्रबंध किया था।

धारेश्वर मंदिर –

धार नगर का प्राचीन शिव मंदिर जिसे परमार राजा भोज ने बनवाया था। बाद में मुस्लिम आक्रमणकारियों ने इसे नष्ट भ्रष्ट कर दिया था परन्तु इसे पुनः निर्मित किया गया इसमें परमार शौली का विशाल शिखर है।[10] इसमें छोटा सा सभा मण्डप और पूर्व की ओर प्रवेश द्वार है। उज्जैन के महांकाल मंदिर के समान यहाँ भी शिवलिंग सभामण्डप के तल से नीचे तहखाने के प्रकोष्ठ में है।

चित्तौड़ स्थित त्रिभुवन नारायण का मंदिर –

भोज ने चित्तौड़ के दुर्ग में त्रिभुवन नारायण का शिव मंदिर बनवाया और उसमें स्थित शिव मूर्ति का नाम अपने नाम पर भोज स्वामी देव रखा। यह बात चित्तौड़ से मिले वि.सं. 1358 के लेख में लिखे। ''श्री भोज स्वामी देव जगति'' इस बात से सिद्ध होती है।

भोज द्वारा बनवाये गये अन्य मंदिर – जनश्रुति के अनुसार भोज द्वारा बनवाये गये मंदिरों की संख्या 104 थी। उदयपुर प्रशस्ति में लिखा है कि, भोज ने केदारेश्वर, रामेश्वर, सोमनाथ सुंडीर, काल, अनल और रूद्र को अर्पण किये हुए मंदिरों से संसार को आच्छादित कर उसे अलंकृत किया। अब प्रश्न यह उठता है कि, क्या केदारेश्वर, रामेश्वर व सोमनाथ के मंदिरों को बनवाने में भोज ने योगदान दिया था इसके लिए हमें डॉ. डी.सी. गांगुली का मत उचित जान पड़ता है कि, उदयपुर प्रशिस्त में वर्णित इन समस्त मंदिरों का निर्माण मालवा में ही हुआ था क्योंकि इन नामों के मंदिर मालवा में अनेक स्थानों पर है।

भोज के द्वारा बनवाये गये जैन मंदिर – धार्मिक दृष्टि से सहिष्णु राजा भोज ने भोजपुर में एक जैन मंदिर का का निर्माण करवाया था क्योंकि यहॉ प्राप्त तीर्थंकर प्रतिमा के पादपीठ

पर राजा भोज का नाम उत्कीर्ण किया हुआ है। इसमें आदिनाथ तीर्थंकर की विशाल प्रतिमा है व उनके दोनों और तीर्थंकर पार्श्वनाथ की प्रतिमायें उत्कीर्ण है। राजस्थान में झालरापाटन में तीर्थंकर शांतिनाथ का एक विशाल जैन मंदिर था जिसका निर्माण 1046 ई. में शाहपीपा नामक व्यक्ति ने किया था। इसका गर्भगृह शिखर मूल रूप में हैं परन्तु मण्डप जीर्णोद्धार किया हुआ नवीन रूप का हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

01. प्रभाचन्द्राचार्य – प्रभावकचरित 143–144
02. रेऊ व्ही. एन. – भारत के प्राचीन राजवंश भाग 2, पृ. 61, हिन्दुस्तान एकेडमी, इलाहाबाद, 1932
03. गांगुली डॉ. डी. सी. – परमार राजवंश का इतिहास, पृ. 195, प्रकाशन केन्द्र सीतापुर रोड़, लखनऊ
04. लुआर्ड सी.ई. – धार स्टेट गजेटियर, पृ. 110–111
05. भाटिया प्रीतिपाल – दि परमारास पृ. 93, नई दिल्ली, 1970
06. जहांगीर – तुजुके जहांगीरी, पृ. 202–203
07. वाजपेयी कृष्णदत्त – भारतीय वास्तुकला का इतिहास, पृ. 133, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 2002
08. गंगुली डी. सी. – परमार राजवंश का इतिहास पृ. 184, प्रकाशन केन्द्र सीतापुर रोड़, लखनऊ
09. कल्हण – राजतरंगिणी श्लोक 7, पृ. 190–193, संपादित दुर्गा प्रसाद, बम्बई 1892
10. लूणिया बी. एन. – युग युगीन धार, पृ. 83, इतिहास परिषद शास. महाविद्यालय, धार

Gammer Gurton's Needle: An Over View

Dr. Renu Sinha
Asst. Professor in English
Shri Atal Bihari Vajpayee
Govt. Arts & Commerce College
Indore (M.P.)

Gammer Gurton's Needle (1562), is a domestic comedy, probably second comedy of English Literature written by **John Still** as many of the English history books on literature records but another name that goes with the authorship of this comedy is, a "Mr. S.," has been identified with William Stevenson, M.A. of Christ's College, Cambridge, where the play was originally performed. It contain true bit of English realism, representing the life of peasant's class. Like Ralph Roister and Doister in form and structure, it is modelled on Latin comedy, but the matter and characterization are native.

Like Ralph, it is in five acts; the action takes place within one day, and the scene is the conventional street with houses. Beyond these details, Gammerowes nothing to the classic model. It is a lusty farce, with very little plot. Gammer is often coarse and vulgar, with buffoonery of the slapstick variety, with no polish or intricacy of plot to tempt the intellect. It would be a morose person, however, who in good health could entirely withstand its fun. The characters belong to the English soil and have English blood in their veins. Diccon of Bedlam, who is in reality the cause of the whole fuss, is a new figure on the stage. When, under Henry VIII, the monasteries were broken up, there were left without home or patrons many poor, often half-witted people who had been accustomed to live on the bounty of the religious houses. These people became professional beggars and vagabonds, sometimes pretending to be mad in order to be taken care of. They were called Bedlam Beggars, Abraham Men, or Poor Toms. It will be recalled that Shakespeare used one of this class with considerable tragic effect in King Lear. Published in 1575 and acted at Christ's College, Cambridge, probably as early as King Edward V's reign, the drama of Grandma Gurton and her lost sewing needle, which is finally retrieved from the bottom of her servant Hodge's breeches, is an outstanding example of mid-Tudor comedy. Although a university production, the play's doggerel rhymes, its village characters and their dialect speech, its seemingly innocuous plot and its Rabelaisian humour are the very opposite of academic or neo-classical. Yet its anonymous author's ingenuity manifests itself at every turn, not least in the multiple ironies evoked when Diccon the trickster makes Hodge believe that he will conjure the devil by kissing his backside in a travesty of religious or masonic oath-taking.

The plot of the drama is ***Gammer Gurton*** *is an old woman who loses her only needle while mending a pair of pants belonging to her servant,* ***Hodge****. Hodge, needless to say, is very upset by this because now he has to wear pants full of holes. Most of the play involves the search for the missing needle.* ***Diccon****, a crazy beggar, starts making some plots. He pretends to summon the devil to ask his advice. Hodge, who was present for the beginning of this "ceremony," is so scared that he first loses control of his bowels and then runs off. For much of the rest of the play, he is addressed as "shitten knave," or some similar title.*

Diccon claims that the devil told him that the answer to this problem would be found between cat, Rat, and Chat. "Chat" is ***Dame Chat****, an old woman who lives across the street. Diccon now claims to have seen her steal the needle. Separately, he goes and tells Dame Chat that Gammer Gurton thinks she stole her cock and ate him. Dame Chat is thoroughly angry at this unfounded accusation (completely unfounded, as it happens, for the cock is still alive this whole time). Gammer Gurton turns up at Chat's house, and they lay into each other. The two old women fight until both are on the ground.*

Gammer Gurton decides to get help, and so she calls in ***Doctor Rat.*** *He is updated on the story so far. Diccon tells that he saw Chat steal the needle, but also says he can show Rat a place in Chat's garden where he can see her using it. Meanwhile, Diccon tells Chat that Hodge is going to try to sneak into her garden and kill her chickens, so she should watch the hole in the fence carefully.*

Needless to say, Doctor Rat gets beat up. So he calls in the Bailiff, who does not understand why he's being asked to prosecute a woman for attacking a man who was sneaking into her garden in the middle of the night. Gradually, all the characters are called before the Bailiff to testify, and the truth comes out: Gammer Gurton lost her needle, and Diccon made up all kinds of stories to make everyone angry at each other. Diccon is given a rather mild punishment, and he jovially slaps Hodge on the ass. Hodge feels a prick then, and discovers the needle in his pants.

Gammer Gurton and Dame Chat are prototypes of generations of village gossips.

As a coarse comedy written according to classical rules, *Gammer Gurton's Needle* has been considered an important early example of the hybrid English drama. However, recent criticism has established that the play is a sophisticated comedy. Despite the development of an awareness of its deeper levels of meaning, no scholar has traced how the narrative emphasizes the importance of right reading. The audience learns to see right reading as a Protestant hermeneutic that enables them to transcend the Catholic emphasis on materiality and the literal interpretation of the Eucharist.

The Prologue.
(Spoken before the curtain by the Stage- Manager)
As Gammer Gurton, with manye a wyde styche
Sat pesynge & patching of Hodg her mans briche
By chance or misfortune as shee her geare tost
In Hodge lether bryches her needle shee lost,
When Diccon the bedlem had hard by report
That good Gammer Gurton was robde in thyssorte,
He quyetly perswaded with her in that stound
Dame Chather deare gossyp this needle had found,
et knew shee no more of this matter (alas)
Then knoeth Tom our clarke whatthe Priest saith at masse
Here of there ensued so fearfull a fraye,
Mas Doctor was sent for these gossyps to staye,
Because he was Curate and estemed full wyse
Who found that he sought not by Diccons deuice,
When all thinges were tombled and cleane out of fassion
Whether it were by fortune or some other constellacion
Sodenlye the neele Hodge found by the prickynge
And drew it out of his bottocke where he felt it stickynge
Theyr hartes then atrest with perfect securytie.
With a pot of good nale they stroake vp theyr plauditie

Although Latin in pattern but it is completely English in all other respects. The setting is an English village; the characters are likeable and morally upright, though their speech is earthy enough to have a certain shock value even today. The plot is complex. *Gammer* makes use of a vice character, it is in no way a morality play: it is pure farce. The whole thing is a mess. While this play has none of the "greatness" of English a half a century later, it is thoroughly hilarious. Broad jokes, extravagant language, and situations depending for their fun on the discomfiture of one or another of the actors, gave this play great popularity in its day. Readers of the present time who penetrate behind its quaint and uncouth language will find in it an interesting picture of sixteenth-century village life. Here is an example of language in a form of a song found in the Act ii

The.ii. Acte. Fyrste a Songe.

Backe and syde go bare, go bare, booth foote and hande go colde:
But Bellye god sende thee good ale ynoughe, whether it be newe or olde.
I Can not eate but lytle meate, my stomacke is not good:
But sure I thmke that I can drynke with him that weares a hood.
Thoughe I go bare take ye no care, I am nothinge a colde:
I stuffe my skyn so full within, of ioly good Ale and olde.
Backe and syde go bare go bare, booth foote and hand go colde:
But belly god send the good ale inoughe whether it be new or olde.
I loue no rost but a nut browne toste and a Crab layde in the fyre,
A lytle bread shall do me stead much breade I not desyre:
No froste nor snow, no winde I trowe can hurte mee if I wolde,

I am so wrapt, and throwly lapt of ioly good ale and olde.
Backe and syde go bare &c.
And Tyb my wyfe that as her lyfe loueth well good ale to seeke,
Full ofte drynkes shee tyll ye may see the teares run downe her cheekes:
Then dooth she trowle to mee the bowle euen as a mault worme shuld,
And sayth sweete hart I tooke my part of this ioly good ale and olde.
Now let them drynke tyll they nod and winke, euen as good felowes shoulde doe
They shall not mysse to haue the blisse, good ale doth bringe men to:
And all poore soules that haue scowred boules or haue them lustely trolde,
God saue the lyues of them and theyr wyues whether they be yonge or olde.
Backe and syde go bare &co

The play in verse, which was first presented about 1566, promises to supply plenty of satire and comic realism which is so representative of the native English man. It is also one of the few living plays which combine the classical form and racy native content characteristic of the days before the accession of Elizabeth. From this situation, the play branches out into numerous scenes with the precious needle being the important theme. Helping to develop it along with the many characters

But the most important character is Diccon , the Bedlam, the beggar/presenter/protagonist, who is central to the play's plot, farce and resolution .It's centrally is evident for , in spite of his low class status, he is the character listed first in dramatic Personae, originally this play was registered as *Dyccon of Bedlam.*

Diccon's character as the Bedlam does not signify that he is mad indeed he control's the play . It is a capacity of his to trigger excess, folly and loss of control in others and disrupt the social order.

Diccon's manipulations open up "holes" in the community and in individuals. His instigated madness (which Shakespeare will use in Hamlet) brings to surface the rivalry, anger and fear that underlie the village community's fragile status hierarchies. When this drama was staged it became remarkably well known for its performance.

To conclude *Gammer Gurton's Needle* is a vernacular Farce and a humanist saturnalias parody consisting of a strict Latin form undercut by English folk environment to grasp an economic individualism.

Refrence

01. Gammer Gurton's Needle. The Oxford Companion to English Literature (7 ed.) **Edited by Dinah Birch**.Publisher: Oxford University Press. Print Publication Date:2009

JOHN LYLY

Dr. Roshan Benjamin Khan
Professor in English
Shri Atal Bihari Vajpayee
Govt. Arts & Commerce College
Indore (M.P.)

John Lyly born in Kent, England, to Peter Lyly and his wife, Jane. He was an English writer, poet, dramatist, playwright, and politician. Now, he is known chiefly for developing the pernicious literary style called ***Euphuism***. In his teens he was known to have troubles with college authorities and was famous as a noted wit "*averse to crabbed studies of logic and philosophy…. and bent to the pleasant paths of poetry".* He wrote his famous book *Euphues: The Anatomy of wit* while he was studying M.A. Euphuism made him famous. Lyly's mannered literary style in this book later developed in to separate writing style *euphuism*. Euphuism is a conspicuously formal and elaborate prose style which was in vogue in 1850s in drama, in prose fiction, and probably also in the conversations of English court circles. Euphues:The Anatomy of Wit, a moralistic romantic prose .In the dialogues of this work and Euphues and His England, as well as stage comedies, Lyly exaggerated and continuously used a particular prose style which later developed into a separate style of prose writing. This somewhat complicated prosaic style is based mainly on antithesis, puns, elaborate natural-history similes, classical allusions and series of parallel clauses. Style contains sententious (*full of moral maxims*, relies heavily on syntactical balance and antithesis, elaborate patterns of alliteration and assonance, exploits rhetorical questions, long similes, allusions (*often drawn from mythology, and the supposed characteristics and habits of legendary animals*)The plots are unimportant in this style, existing merely as structural elements on which to display conversations, discourses and letters. The euphuistic sentence usually follows principles of balance and antithesis to their extremes, purposely using the latter regardless of sense. John Lyly set up three basic structural principles: phrases of equal length that appear in succession; the balance of key verbal elements in successive sentences; the correspondence of sounds and syllables, especially between words that are already balanced against each other.

Example from Euphues; the character Philatus is speaking: *I see now that as the fish Scholopidus in the flood Araris at the waxing of the Moon is as white as the driven snow, and at the waning as black as the burnt coal, so Euphues, which at the first encreasing of our familiarity, was very zealous, is now at the last cast become most faithless.* Euphues' after-

dinner speech to the 'coy' Neapolitan ladies on whether the qualities of the mind or the composition of the man are more worthy: *How frantic are those lovers which are carried away with the gay glistering of the fine face? The beauty whereof is parched with the summer's blaze and chipped with the winter's blast: which is of so short continuance, that it fadeth before one perceive it flourish.*

Shakespeare in a way parodied this self-consciously elegant style in Love's Labour's Lost and other plays. Like many other authors, of that time, Shakespeare profited from Lyly's explorations of the formal and rhetorical possibilities of English prose For a time Lyly was the most successful and fashionable of English writers, hailed as the author of "a new English", as a "*raffineur de l'Anglois*".Edward Blout, his editor describes him as "*that beautie in court which could not parley Euphuism was as little regarded as she which nowe there speakes not French*".Eventually he came in contact with Lord Burghley, who offered him employment as a Vice Master of St. Paul's and Sayoy companies of child actors, for who, he composed several light dramatic pieces. He soon was attracted to politics and became several times Member of Parliament. He was a champion of the cause of the bishops in *Marprelate controversy* The *Marprelate Controversy* was a war of pamphlets waged in England and Wales in 1588 and 1589, between a puritan writer who employed the pseudonym Martin Marprelate, and defenders of the Church. For this Lyly wrote his famous and much celebrated tract, *Pappe with an Hatchet, that is a sound boxe on the eare for the idiot Martin to hold his peace(printed under pseudonym Double V).*

His best known dramas include: Six court comedies:

Alexander and Campaspe (first play composed by Lyly) Its main plot concerns Alexander the Great, who becomes fond of his Theban captive, Campaspe. Widely considered Lyly's earliest drama, *Campaspe* was an influence and a precedent for much that followed in English Renaissance drama.

*In this **Alexander** the Great, becomes fond of his Theban captive, **Campaspe**. She is virtuous and beautiful and the king decides that he wants his painter, **Apelles**, to paint her. But Apelles and Campaspe fall in love with each other during the painting sessions and they find themselves not able to suppress their affection to please the king. But Alexander"s generosity wins over his passion for Campaspe and he decides to move his attention back to warfare and permits the couple to get married.Alexander spends his time in Athens conversing and consorting with the philosophers of the era – most notably with Diogenes, whose famous tub is prominently featured onstage. Diogenes is little impressed with the conqueror. Aristotle*

and Plato share a conversation, and other philosophers appear as well. The play also features the witty pages that are a hallmark of Lyly's drama.

The source of this play is Pliny's Natural History, which includes a story about Alexander's surrender of Campaspe to Apelles. Campaspe is often classified as a historical play and it is considered as one of the first dramas in English based on a historical background. There is supposedly no allegory in this play, except for a possible flattering the Queen by showing Alexander as unemotional, which could be matched with "indifference of the virgin Queen to all matters of Cupid‟s trade or by centring the play "upon a monarch whose court is the epitome of artistic, intellectual and martial excellence" which could be a flattering mirror of Elizabeth‟s court.

Campaspe also serves as a compliment to the ladies of the Court, acknowledging them for the first time as a significant part of the theatrical audience. Concerning the content of Campaspe and its dealing with love and passion, it could be also perceived as a first romantic drama.

Sapho and Phao (an allegorical play about Duke d'Alençon's wooing the Queen, 1584) Sapho and Phao is the first allegorical play written by John Lyly. It mostly consists of flattery and love or courtship counselling. It is likely the first play by Lyly devoted to the allegorical idealisation of Queen Elizabeth I that became the predominating feature of Lyly's dramatic style. It is an Elizabeth-Alençon allegory. Sapho and Phao is a play constructed mainly to flatter the Queen after the cancelled wedding negotiations with the heir of the French throne, Duke d‟Alençon, in 1582. It is generally accepted by the theorists that Sapho and Phao is associated with the period of Duke d'Alençon's wooing of the Queen Elizabeth I.

The play is set in Syracuse and the surrounding countryside. Venus, the Goddess of Love, on her way to Syracuse to humble the pride of Queen Sapho. The main plot concentrates around ***Venus****, and her plotting against* ***Sapho****, the Queen of Sicily. Sapho is virtuous and refuses love and courtship, so Venus, who is jealous of Sapho‟s beauty and virtues, changes a mere ferryman,* ***Phao****, into the fairest man among all, assuming that Sapho will not be able to resist the temptation and will fall in love with him. And thus when Sapho and Phao meet, they fall in love with each other.*

Phao then seeks advice from ***Sybilla****, on old wise woman living in a cave. She tells him to flatter his queen and woo her with gifts. In the meantime, Sapho has fallen ill from her passion and cannot fall asleep. She commands her lady in waiting,* ***Mileta****, to go and find Phao, because he is well acquainted with healing effects of various herbs and could thus help her to find a remedy for her sleeplessness–this being apparently an excuse for seeing Phao, because for a lover the best remedy is to set eyes on her or his beloved. When the two lovers*

meet, they indirectly talk about their affections and possibly understand each other's uneasiness concerning their social rank.

When leaving, Phao meets Venus, who as a goddess of love, but mainly of passion, cannot resist Phao's beauty and thus falls in her own trap. She decides to have Phao for herself and plots against his love for Sapho. The goddess plans to use her son, Cupid, to make Sapho despise Phao and change the object of Phao's affections to herself. But Sapho, being the virtuous queen, wins over Cupid and he decides to become the son of the queen instead of the goddess.The result of Venus's plotting is in the end very disappointing to her: Sapho is relieved from her affections towards Phao but he is still in love with Sapho and even despises Venus. At the end, Phao desperately leaves the country saying:

Lyly dramatized the ancient Greek tale of the romance of Sapho and Phao, or Phaon; he was influenced in particular by Ovid's version of the story, supplemented by the work of Aelian. Lyly morphs the story: his Sapho is based (loosely) on the courtesan and has nothing to do with the poet. Yet Lyly takes the bare bones on the old tale and adapts it into something quite different: his Sapho is a powerful queen of Sicily — who is not implausible as a representation of another powerful queen of another island.

One comical subplot is created within the play around the characters of three servants: ***Calypho****, Vulcan"s servant;* ***Criticus****, a servant of Trachinus, a courtier; and* ***Molus****, a servant to Pandion, a scholar who has recently come to Sapho's court from a university. Another subplot concerns* ***six ladies in waiting*** *and could be perceived as satirical because it seems very believable that the ladies used to spent their time in such idleness as it is described in this play, merely gossiping or interpreting their dreams.* The end of the play seems to be composed exactly in accordance with the real events. The queen changes in her affections after Cupid's intervention and Phao, still deeply in love with Sapho, says that he will always be loyal to the queen, wishes her nothing but happiness and then leaves Sicily forever*"I will wish him fortunate. This wil I do for Phao, because I once loved Phao: for never shall it be said that Sapho loved to hate, or that out of love she coulde not be as courteous, as she was in love passionate"*

Endymion (written about the friendship between the Queen and Earl of Licester, 1591) Endymion was fourth in the series of specially crafted comedies written by John Lyly for performance at court. It belongs by its content to the allegories and Courtly flatteries but in comparison with Sapho and Phao, for example,its plot is more elaborate, showing thus a kind of development in Lyly"s style. The play provides a vivid example of the cult of flattery in

the royal court of Queen Elizabeth I, and has been called "without doubt, the boldest in conception and the most beautiful in execution of all Lyly's plays.

The main plot of this play is related to the title character of ***Endymion*** *who devotedly admires the goddess of the Moon,* ***Cynthia****, but simultaneously pretends to be in love with* ***Tellus****. The opening scene presents a conversation between Endymion and his friend* ***Eumenides****, in which Endymion confesses that he has fallen in love with the Moon goddess. Eumenides chides Endymion, reminding him of the Moon's inconstancy, whereupon Endymion extols inconstancy and change as virtues, attributes of everything beautiful. Convinced that Endymion is bewitched, Eumenides prescribes sleep and rest for the lovesick swain, but Endymion rejects the advice and berates his friend.When Tellus realizes this shift in his affections, she feels betrayed and, as a result, she plots with the witch,* ***Dipsas****, to charm Endymion into a deep sleep. As a result, he falls asleep on the lunary bank and cannot be awakened or moved for forty years. Cynthia , who was formerly indifferent or even resentful towards Endymion, now begins to relent and sends her courtiers–among them Eumenides, Endymion's faithful friend–to find a remedy for Endymion.In the meantime, Tellus, who speaks inappropriately about Endymion in Cynthia's presence, is sent to be imprisoned in a castle under* ***Corsites****, the captain, who later falls in love with her. After several years of his journey, Eumenides meets* ***Geron****, an old man, who lives at a magic fountain that can answer any question, but only one, to a true and faithful lover. Thus Eumenides has to decide whether to ask about his love,* ***Semele****, who acts very coldly towards him, or about his friend Endymion. His loyalty is so strong that friendship wins over love and, as a result, he learns that Endymion can be awakened by a kiss from Cynthia.*

On his way home, Eumenides is accompanied by Geron who turns out to be a husband of Dipsas. Meanwhile, Tellus sends Corsites to move Endymion from the bank to a cave, which is an impossible deed, and Corsites is punished by being pinched by fairies that live on the bank. Cynthia and her courtiers happen to be visiting the spot at the same time and laugh at him.

However, the sorcerers who have come on Cynthia"s command from Egypt and Greece are not able to break the spell and awaken Endymion. When Eumenides, who is supposed to be dead, finally returns to the court, Cynthia agrees to kiss Endymion and the remedy turns out to be successful. Endymion wakes up as an old man but eventually his youth is restored by Cynthia who, being the Moon Godess,governs everything. All the couples

are happily united at the end of the play–

- *Eumenides will have his Semele*
- *Tellus agrees to be married to Corsites*
- *Geron is after fifty years of exile reunited with Dipsas*
- *Sir Tophas, who is a boaster serving in the play as an object of laughter and mischief of the pages, will have Bagoa, Dipsas's maid.Only Endymion is left with no wife but still admiring his queen and goddess from a respectful distance.*

The play also includes a dumb show presenting three ladies and an old man that appear in Endymion's dream, and a typical Lyly an subplot of three pages talking unrespectfuly about their masters, in this particular play jesting at Sir Tophas's love for Dipsas, that probably serves as a satirical counterpart to Endymion's admiration of Cynthia.

According to the scholars several types of allegory –a physical allegory, and a allegory of love and a Court allegory.

The physical allegory is generally accepted –it involves the names of **Tellus** and **Cynthia** who represents the Earth and the Moon. There are many parts in the play that concerns describing Tellus and Cynthia according to the characteristics of the heavenly bodies they represent: Cynthia is described as being christened *"with the name of wauering, waxing, and waning" but "[in] constant that keepeth a setled course, which since her first creation altereth not one minute in her mounig"*. Tellus is described as the Earth: *"whose body is decked with faire flowers, and vaines are Vines, yeelding sweet liquor to the dullest spirits, whose eares are Corne, to bring strenght, and whoose heares are grasse, to bring abundance"*. Cynthia is as the Moon superior to Tellus, the Earth, because the Moon governs the tide and natural cycles on the Earth.

The theory of love allegory in Endymion is according to the essay by Huppé more probable than the Court allegory. Cynthia represents "*Spiritual, Virtuous Love, the marriage of true minds*", and Tellus is "*Earthly Passion struggling in the lover's mind against his dedication to Passionless Love*".

The Court allegory is the most hypothetical but also the most extensive of the allegories possibly implied in Endymion. Main subject of the plot is the relationship between the Queen and her favourite, Earl of Leicester. Main plot of the play concerns the situation of Leicester‟s temporary disgrace in the year 1579. Endymion in his monologue in the Act II complains about Cynthia‟s coldness: "*Have I not spent my golden yeeres in hopes, waxing old with wishing, yet wishing nothing but thy loue"* proceeding with confession that his love for Tellus was a mere "*cloake*" for his feelings toward Cynthia, so that no one would suspect him. The first sentence of this soliloquy is exactly the same as in a letter written by Leicester

to Lord Burleigh –but intended to be read by the Queen –in 1579.Light on plot, characterization, and dramatic incident, but verbally rich, the play has more to offer a patient reader than a fan of drama. In the view of one commentator, *Endymion,* "with its radiating central image, its mathematical elaboration, its receding depths, its near motionless and queer timelessness," is "more a contemplation than a comedy." Endymion could be enjoyed for the story itself, excluding the allegory which might not be easily understood by every reader. However, the extent of the implied allegory suggests, that the play would not be as enjoyable as it was for the audience that could understand it.It is generally agreed that *Endymion* is the one of Lyly's plays that had the strongest influence on Shakespeare, most obviously on *Love's Labor's Lost* and *A Midsummer Night's Dream.*

Wherein our heroines, on the verge of a death most gruesome and unjust, instead find love, that most unexpected and unparalleled of elixirs; and wherein the Gods, conservative yet compassionate, replace old world rituals with new world reason; and also wherein nymphs play foul and fair; not to mention wherein surprises lurk behind every tree; and in front of them, too; and sometimes even in the grass and the bushes…

Gallathea is an Elizabethan era stage play, a comedy by John Lyly. *Gallathea* is one of the first Renaissance plays to explore lesbianism. The play is set in a town that depends sacrificing the most beautiful virgin in order to escape retribution from Neptune. This acts as a metaphor for renaissance's dependence on the sacrifice of virginity in marriage. Without this sacrifice, life would literally cease to exist. The protagonists **Gallathea** and **Phyllida** are two of the most beautiful virgins in this village, thus are in danger of being chosen as a sacrifice. Interestingly both girls are willing to sacrifice themselves for their well being of the citizens, but their fathers insist upon disguising them as boys.*A small village somewhere in Lincolnshire is forced by Neptune to sacrifice their most beautiful virgin to him every five years, or he will drown them all. The chosen virgin must be tied to a certain tree to await her fate at the hands of the **Agar**, a terrible monster. The fathers (**Tyterus**and **Melebus**) of the two most beautiful virgins of the village, Gallathea and Phillida, decide to disguise their daughters as boys until after the sacrifice. Both girls are then sent off into the woods.Meanwhile, in an almost completely unrelated subplot, three brothers, **Rafe**, **Robin**, and **Dick**, set off to seek their fortune. At the same time, the god **Cupid** is wandering through the forest when he happens upon a nymph of Diana. After a rebuff of his amorous advances, he resolves to trick all of the nymphs into falling in love, despite their vows of chastity. Predictably, all three of the nymphs who appear fall in love with either Gallathea or Phillida, whom Diana has forced to assist in her hunt.The rest of the plot revolves around the*

relationship between Gallathea and Phillida, who, each believing the other to be a boy, fall in love with each other. Cupid's punishment, substitute sacrifices of inferior virgins, brotherly reunions, divine reconciliations, a surprise ending, and the triumph of true love ensue. In this play both Gallathea and Phillida spot one another wandering in the woods and decide to try to learn masculinity from the other. They both begin to fall in love, though the girls both remain unsure whether the other is really a girl. Phyllida says to herself, "*I fear me he is as I am, a maiden.*" Interestingly, this lesbian relationship has neither woman usurping the masculine role. In works such as Sidney's *The Old Arcadia* there is one character that clearly takes on the male role. In the case of Gallathea and Phyllida, the characters are literally indistinguishable. Their lines mirror one another as much as their situations. It is eventually revealed that both of the boys are in fact girls, yet their love for one another has not shifted in the slightest. The goddess Venus says she will transform one of the girls into a man so that there can be a marriage, yet the girls are so similar it seems a choice would be impossible. The play ends without either of the girls changing, with Venus saying she will make their marriage possible in the near future.

The play has a third heroin, one named ***Hebe****. Once Phyllida and Gallathea are hidden away, Hebe becomes the top candidate to be sacrificed. The problem? Apparently she is ugly as sin. Neptune, upon seeing her, states: "Take this virgin, whose want of beauty hath saved her own life".The play also demonstrates the* ***predatory nature of heterosexual relationship****. As Laurie Shannon notes in her essay 'Nature's Bias: Renaissance Homonormativity and Elizabethan Comic Likeness', there are three examples: the* ***monster Agar*** *who terrorizes women,* ***Phyllida's father*** *who is accused of having displayed and "affection I feare me more than fatherly" and* ***the alchemist*** *who, it is suggested, has an inappropriate sexual encounter with a 'wench' whom he 'plyed'. The men in the play seem to be predators for the most part. There are two side stories, one of an alchemist who hopes to recruit a new apprentice and one of Cupid who quarrels with Diana and her nymphs. Diana places Cupid in servitude for his offences but releases him once Neptune has promised to protect all virgins. The alchemist seems to suggest the malleability of forms, which could be applied to the gender-bending roles that the play orbits around, but the alchemist isn't successful in what he does so it seems that that is not a potential reading, while the narrative about Cupid and Diana seems to merely serve as a means to the 'happy' ending.*

Lyly doesn't simply portray socially ascribed masculine traits as positive and performable by women, but he also, via Phyllida, suggests the socially prescribed feminine traits are equally worthy of praise. Phyllida uplifts what she sees as 'feminine' virtue over 'masculine' traits,

opposing her father's wish that she dress the part of a boy because she does not want to *"be thought... wanton"* , identifying wantonness as an inferior 'masculine' trait. ***Gallathea*** (his first pastoral, influenced Shakespeare's Midsummer Night)

Gallathea and Phyllida seem to serve complementary roles: Gallathea demonstrates that positive attributes that are considered 'masculine' can be present in women, whilst Phyllida seems to suggest that there are inferior traits that are inherently 'masculine' which are not present in women. In both instances there is a suggestion that women can be not only equal to, but superior to men, as Gallathea adopts a stance that is more heroic than her father, whilst Phyllida suggests feminine virtue is superior to masculine behaviour.

Lyly seems to inspire from Shakespearean style when the two girls fall in love with each other, thinking the other to be a boy, just as Shakespeare has Olivia fall in love with Viola whilst Viola is disguised as a boy in *Twelfth Night* and just as Phebe, a shepherdess in *As You Like It* falls in love with Rosalind, who also is disguised as a boy. In each instance women subconsciously fall in love with the female form, preferring it to the male form. It is important to note that during this era all actors on the stage where men, so there is a potential reading that could make such points moot as it is actually the male form on the stage and not the female form, but it is also important to consider the language used in such instances.

Midas (1592) It is speculated that Lyly wrote the play as homage to Queen Elizabeth, who was supposedly the virgin queen because she did not marry. Yet the ending seems very complex. It is possible Lyly walked the line between praising marriage and virginity simultaneously. As a result, he created a play that makes lesbian love seem autoerotic.

In Midas of a covetous wretch the image we may see
Whose riches justly too himself a hellish torment be,
And of a fool whom neither proof nor warning can amend,
Until1 he feels the shame and smart that folly does him send.

Midas is an Elizabethan era stage play by John Lyly. It is taken from two separate tales in Ovid's Metamorphoses XI– the **Golden Touch** and the **Ass's Ears**. The play first portrays Midas's mistaken choice of a private end, the accumulation of wealth for its own sake and as a means of financing lechery and aggression, and then suggests the difficulties this causes in the governing of his kingdom. Bacchus*, the god of wine, rewards the hospitality of Midas, king of Phrygia, by offering him anything he desires. The king's three courtiers,* ***Eristus*** *(love),* ***Martius****(war and control), and****Mellicrates (wealth)*** *gives advice; Midas accepts the advice of Mellicrates and asks that everything he touches turn to gold.*

(In the classic legend, Midas is motivated simply by greed; in Lyly's play, Midas wants gold partly to finance his planned invasion of the island of Lesbos, a theme that runs throughout the play.)

Midas's intelligence backfires and misfortunes with his golden touch follow; his clothes, food, wine, and even his beard all turn to gold. Midas eventually cures himself by taking the advice of ***Bacchus*** *and bathing in the river* ***Pactolus****, which becomes gold-producing as a result.*

In the second phase of the king's adventures, Midas, hunting in a wood on ***Mount Tmolus****, encounters Apollo and Pan, who are preparing to engage in a musical competition. Midas thursts himself into the role of judge, and decides in favor of Pan; Apollo responds by giving the king the ears of an ass. Midas conceals his affliction at first, but the news passes from nymphsto shepherds, and is eventually whispered by reeds to all over the world.*

Midas's sensible daughter ***Sophronia*** *(a Lylian addition) appeals to Apollo's oracle at Delphifor guidance. Midas goes to Delphi, admits his foolishness and expresses repentance; his auricular affliction is cured, and a newly humbled Midas renounces his plans for conquest, especially against the stalwart islanders of Lesbos.*

The play has a more overtly comic subplot focused on **Motto**, Midas's barber. Motto comes into possession of Midas's golden beard after removing it from the king's face; but the beard is stolen from him by the mischievous pages that are a standard feature of Lyly's drama. Motto recovers the beard by curing a case of toothache (barbers doubled as dentists in Lyly's era and for long before and after). But the pages exploit Motto's role in spreading the news about the king's ass-ears: they accuse him of treason, and demand and obtain the beard as the price of their silence.

Midas displays Lyly's rare mastery of plot construction. Critics commonly assert that the play takes on more force as a guarded analogy between Midas and the aggressive Philip II of Spain whose Armada had only just been defeated by the English and the island of Lesbos that he longs to conquer is Elizabeth's England.

In this play Lyly is not striving to impose a meaning, but invites a variety of interpretations. The plays signify 'what you will' and should be taken 'as you like it'. The audience's demands, however various, 'will all be met'? Midas is arguably the most overtly and extensively allegorical of Lyly's allegorical plays.

Advertisements

Mother Bombie, **A Pleasant Conceited Comedy** is an Elizabethan era comic play by John Lyly. It is different from Lyly's other dramas. It is a comedy in the tradition of Plautus and

Terence, where wayward young men and their ingenious servants outwit their more prudential elders in bringing their love affairs to a successful conclusion. It is a work of farce and social realism; in *Mother Bombie*, Lyly departs from classical allusion and courtly comedy to create a "vulgar realistic play of rustic life" in a contemporary England.

Mother Bombie's plot revolves around the marital affair of two young couples and the complicating opposition of their four respective fathers. ***Memphio*** *and* ***Stellio*** *are two rich old men; they want to arrange an advantageous marriage between their two children,* ***Accius*** *and****Silena****. Memphio and Stellio have seen each other's kid through their chamber windows and, noting them as handsome/beautiful, figure they must be wise, too.*

Each of the two fathers knows that his child is a simpleton — what the Elizabethans succinctly called a "fool" — but neither knows that his child's prospective partner is also a simpleton. Each father is trying to take advantage of the other, in the same way.

Another elderly man, the middle class ***Prisius*** *is aiming for upward mobility by trying to marry his daughter* ***Livia*** *to Accius, while Prisius's longtime rival,* ***Sperantus****, is trying to do the same thing by marrying his son,* ***Candius,*** *a true scholar, to Livia. Both of these fathers are unaware that their children are in love with each other, and when they find out they bar the couple from seeing each other.*

Each of the four fathers enlist their clever and Latin-learned servants— ***Dromio****,* ***Risio****,* ***Lucio****, and* ***Halfpenny*** *—to bring their schemes about, but the servants conspire together to get Livia and Candius married behind their fathers' backs. Their fathers, Sperantus and Prisius, eventually reconcile themselves to the idea of their children's marriage. The wealthy fathers, Memphio and Stellio, come close to accepting the same realization, and allowing their foolish children to marry —the idea being that such a marriage is better than no marriage at all.*

Yet the foolish marriage is forestalled when the old nurse ***Vicinia*** *reveals that the two fools are actually her children, and so are brother and sister. Long years before, Vicinia exchanged her children for the rich men's real offspring, who are now called* ***Maestius*** *and* ***Serena****. These two, thinking themselves siblings, have been struggling against what they think is a mutual incestuous passion; once they learn that they are not actually related, they can legitimately wed. The rich old men, pleased to have their natural children restored to them, magnanimously agree to provide support for their false imbecilic children; and a happy ending is engineered all around.*

Mother Bombie*, the local cunning woman, functions rather like a dramatic chorus in all this; characters consult her for advice and she predicts the outcomes of particular situations*

*in doggerel verse. ("Mother Bombie told me my father knew me not, my mother bore me not, falsely bred, truly begot….") She has relatively little direct effect on events, except for convincing**Vicinia** to expose her secret and thus resolve the plot's difficulties.*

What is at stake in this play is actually money– the fortunes of the children are determined by the fortunes of the families. '**Marriage among them'**, Candius, Sperantus' son, remarks, **'is become a market.'** T.W. Baldwin has seen the farcical placement of fathers and children as both balanced and contrasting.The play turns on the issue of misconceptions surrounding the efforts of four fathers to secure socially advantageous marriages for their heirs, and the determination of their young servants to exploit their masters' misguided aspirations for their own advantage. The play is of particular interest to twenty-first century criticism for its focus upon those situated on the margins of the social group, notably Mother Bombie herself, thought by some to be a witch, and the two simpletons whose marital prospects lie at the heart of the action. Mothe Bombie character specifically denies that she is a witch, and calls herself a "cunning woman." The play often attracts the attention of modern scholars interested in feminism, women's studies, the witchcraft controversy, and related issues.

Love's Metamorphosis (influenced Shakespeare's Love's Labour Lost. Love's Metamorphosis is a witty and courtly pastoral play by John Lyly. It is last play by him and possibly his shortest (1,150 lines) with the fewest characters (fifteen) in the fewest scenes (eleven). It seems like a deliberate signature piece by Lyly, bringing together all his interests and contributions to Elizabethan drama: a love comedy mixing gods and humans in parallel situations which is dense, choric, and transparent, memorably unfolding in pattern, structure and tone that give even its moral candour a haunting sense of beauty: It surely is one of the most unjustly neglected plays in English literature.

*Play is set in Arcadia, and is about **Ceres** and three of her nymphs, **Nisa**, **Celia**, and **Niobe**; the three foresters or shepherds who love them, **Ramis**, **Montanus**, and **Silvestris**; and Cupid. Cupid punishes the nymphs for their disrespect of the shepherds, by transforming them into a**rock**, a **rose**, and a **bird**.The subplot involves the rude and brutal **peasant Erisichthon**, who chops down a sacred tree and thereby takes the life of **Fidelia**, a transformed nymph. Ceres punishes him with famine, and he responds by selling his daughter **Protea** to a merchant. Protea escapes her servitude via a prayer to Neptune and a disguises as a fisherman; she returns home, and masquerades as the revenging ghost of Ulysses to rescue **Petulius**, her beloved, from a Siren.Ceres appeals to Cupid to release her nymphs; Cupid agrees, if Ceres will pardon Erisichthon. (The faithful love of Protea for Petulius has earned her Cupid's protection.) The nymphs are restored to their original forms once they agree to accept the*

three humans as husbands; the quadruple wedding is held at the house of Erisichthon. Love's Metamorphosis is different from most of Lyly's plays in that it lacks the overtly comical and farcical elements that Lylian dramas normally possess. Strikingly, the play does not features witty pages which are standard for Lyly. As a result, some critics have speculated that the extant text is a revised version of a more typical Lyly original.

Important things to note about Lyly's work are the specific circumstances in which it was created. The most important fact about Lylys's plays is that they were written to be performed by boy actors before the Queen Elizabeth I. Lyly's dramatic career began in a period of changes in the English society aswell as in the English drama. "*The medieval order was in dissolution; the modern order was in process of formation. Yet the old state of things had not faded from memory and usage; the new had not assumed despotic sway*" . The same changes were present in dramatic works of that time: moralities and miracles were being replaced by modern comedies and tragedies. But in Lyly's works in particular, the old genres were mingled with the forthcoming modern comedy, mainly because Lyly himself invented some features of the new genre. It might be slightly exaggerating to call Lyly "The Father of English comedy", nevertheless, his inventions had a great impact on the creation of the genre and influenced many of his successors.

Lyly's intricately balanced and stylized prose in not the most suitable medium for dramatic dialogue, but it did at least impose some order on dramatic speech. It was major improvement over the doggerel "fourteeners" of his predecessors. The wit and grace of the prose of Shakespeare's "middle" comedies owes much to Lyly. His prose style is marked with constant use of anti-thesis and alliterations, which at times become wearisome, but on the other hand they often give agreeable force and pungency to the matter.

Lyly was obsessed with classical authorities. He often turned to Greek legends for source and inspiration. Sometimes he overburdens his prose with torrent of allusions which seem comical rather than impressive. He often ignores the distinction between prose and verse and mixes them in between. When he writes he is not content with mere illustrations. For him allusion is synonymous with cataloging.

Lyly lacked sense of theater, but had a sense of literary forms and polished wit. His plays are less rich in concrete humanity and in stage effectiveness but are superior in culture and finer style. The phrase that comes to mind with reference to Lyly's plays is "***Faded Charm***". They are unequal; subplots are not always effectively tied up with main story; the euphuistic prose is often tedious; but there is a delicate imagination at work in them. A sense of form, a new conception of comedy, all of which held rich promise for later Elizabethan drama.

The famous proverb "**All is fair in love and war**" has been attributed to Lyly's *Euphues*.

Some other quotes:

- It is far more seemly to have your Study full of Books, than your Purse full of money.
- In misery it is great comfort to have a companion.
- As the best wine do make the sharpest vinegar, so the deepest love turns in to the deadliest hate.
- Beauty is in the eye of the beholder.

Refrence

01. Lyly John: The Complete Works of John Lyly Paperback – January 24, 2009

जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक शिल्पविधान

डॉ. आशा अग्रवाल
सहा. प्राध्यापक हिन्दी
श्री अटल बिहारी वाजपेयी
शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
इन्दौर (म.प्र.)

जैनेन्द्र कुमार हिन्दी के प्रथम मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार माने जाते हैं। 'परख' से लेकर 'विवर्त' तक का उनका रचना संसार तथ्यों और काल विस्तार का नहीं है बल्कि आंतरिकता के विश्लेषण का है जिसमें पात्र अपनी लघु स्थिति में ही आत्यपूर्ण हो उठते हैं।

'परख' जैनेन्द्रजी का प्रथम उपन्यास है जिसमें विधवा कट्टी और सत्यधन के मानसिक तनावों, कुंठाओं के विश्लेषण और प्रेमचंदयुगीन सामाजिक आदर्शवादी मान्यताओं का प्रभाव दिखाई देता है। फलस्वरूप कथा तत्व ही अधिक उभर कर आया है और पात्रों का मनोविश्लेषण गौण सा हो गया है। पात्र नियोजन में तार्किकता की जगह भावुकता से काम लिया गया है।

जैनेन्द्रजी का दूसरा उपन्यास **'सुनीता'** हिन्दी के बहुचर्चित उपन्यासों में से एक है। यह हिन्दी का पहला उपन्यास है। जिसमें मानव मन की तनावपूर्ण स्थिति का मनोविश्लेषण किया गया है, इसमें कथा की परम्परागत श्रेष्ठता के स्थान पर अचेतन मन की दमित अभिलाषाओं को महत्वपूर्ण मानते हुए त्रिकोणात्मक प्रेम पद्धति का निर्माण किया गया है।

सम्पूर्ण उपन्यास में केवल चार पात्र – दो पुरूष, दो नारी हैं। पात्र न तो मनोवैज्ञानिक बन पाये हैं और न ही सामाजिक। सत्यधन का आदर्शवादी संकल्प अधूरा रह जाता है तो कहीं आत्मपीड़क पात्र बन कर रह जाती है। अतः पात्र नियोजन में तार्किकता की जगह भावुकता से काम लिया गया है।

मनोविश्लेषणात्मक पद्धति के अनुसरण के कारण कथा में असम्बद्धता दिखाई पड़ती है। अतः उपन्यास की मूल समस्या असफल दाम्पत्य जीवन की एक मनोवैज्ञानिक समस्या है।

'त्यागपत्र' आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया एक घटना शून्य उपन्यास है जिसमें नायिका मृणाल के मानसिक घात–प्रतिपाघातों का विश्लेषण किया गया है। जैनेन्द्रजी ने मृणाल की मानसिक जटिलताओं के परिस्थापन में सहयोग देने वाली जीवन की

छोटी–मोटी घटनाओं का संयोजन भी बड़ी कुशलता से किया है। प्रत्येक घटना एक मार्मिक दृश्य बनकर पाठकों के ऊपर तीव्र प्रहार करती है। उनकी संवेदनशीलता को उभार कर उन्हें द्रवीभूत करने की क्षमता रखती है।

पूरे उपन्यास में नायिका मृणाल के जीवन की चुनी हुई घटनाओं के आधार पर मृणाल के आत्मपीड़क रूप का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। हिन्दी साहित्य में ऐसा आत्मपीड़क चरित्र दूसरा दिखलाई नहीं पड़ता है। जैनेन्द्रजी के अनुसार सचमुच जो शास्त्र में नहीं मिलता वह ज्ञान आत्मव्यथा में मिल जाता है। फायड ने भी इसे दूसरे प्रकार से व्यक्त किया है। जब अवचेतन की दमित लैंगिक इच्छाएँ सर्वाधिक शक्तिशाली बन जाती है तब उन दमित वासनाओं के नियंत्रण में सम्पूर्ण जीवन आ जाता है। इस लिए हम मृणाल से नैतिकता व मानवीय मूल्यों की रक्षा की आशा नहीं कर सकते हैं। मृणाल अपनी अभुक्त वासना को तृप्त करने हेतु साधन पर विचार करना छोड़ देती है क्योंकि भूखा व्यक्ति भोज्यपदार्थ की अच्छाई–बुराई पर ध्यान न देकर भूख मिटाने पर ही ध्यान दे पाता है। **'कल्याणी'** आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया उपन्यास है। सम्पूर्ण उपन्यास में कल्याणी का आत्मपीड़क व्यक्तित्व फैला हुआ है। यह फैलाव आवश्यकता से अधिक हो गया है। अतः कल्याणी के जीवन का सच्चारूप आशंकाओं से घिर गया है। कल्याणी मनोवैज्ञानिक रोग से ग्रस्त है। उपन्यासकार ने उसकी मनोग्रंथि का विश्लेषण कर उसे रोग मुक्त करने का प्रयास किया है। फलस्वरूप कल्याणी के चरित्र में पारस्परिक विरोधात्मक तत्वों की प्रधानता हो गई है।

'कल्याणी' में कथा बिल्कुल छोटी सी है लेकिन उसकी गति वक्र है। कहानी की वक्रता शिल्प निर्माण की दृष्टि से सबसे बड़ी उपलब्धि है क्योंकि किसी व्यक्ति के मनोभाव कब और किस स्थिति में परिवर्तित हो जाते हैं कहा नहीं जा सकता।

'सुखदा' आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है जिसमें सुखदा के असन्तोष प्रेरित जीवन का विश्लेषण है। इसकी कथा स्वतंत्रता संग्राम से सम्बंधित है। सुखदा अपने बीते जीवन की गरलता को वर्तमान संदर्भ में याद कर के भी झुठलाना चाहती है। फलतः इसमें पूर्ववीदित शैली का प्रयोग भी हुआ है। इसमें कथा का निर्माण सुखदा के कथन के द्वारा ही किया गया है। 'सुखदा' उपन्यास की विलक्षणता अवलोकन बिन्दु के चुनाव में है। सुखदा अपनी मरण सय्या से अपने अतीत पर दृष्टिपात करती है। यह क्षण अतीत के स्मरण एवं विश्लेषण के लिए सर्वाधिक सुविधाजनक होता है। मरनासन्न सुखदा के जीवन

अनुभव में कसक एवं तनाव की प्रधानता है जिनका मनोविश्लेषण करना ही जैनेन्द्रजी का उद्देश्य है।

सुखदा की कथा में घटनायें नहीं के बराबर ही हैं। छोटी–छोटी क्रिया–प्रतिक्रियों, घात–प्रतिघातों तथा मनः स्थितियों के विश्लेषण और विचार संघर्षों के सार द्वारा ही इस कथा का निर्माण हुआ है। उपन्यास की गति नंगे पैरों की चाल के समान है। जिसमें छोटे–छोटे कंकर–कंकरियों की भी चुभन महसूस होती है।

'विवर्त' उपन्यास में एक क्रांतिकारी पात्र का चित्रण है, जिसकी क्रांतिकारिता लैंगिक अभुक्ति की देन है। भुवनमोहिनी एक जज की पुत्री है। नायक जितेन सम्पादक है। दोनों सहपाठी हैं और बाद में प्रेमी–प्रेमिका भी बन जाते हैं। भुवनमोहिनी का जीवन वैभवयुक्त है, जितेन अभावयुक्त। जितेन अपनी विपन्नता के कारण भुवनमोहिनी की प्राप्ति को असंभव मान लेता है क्योंकि सम्पन्नता विपन्नता का वरण नहीं कर पाती है। फलस्वरूप उसमें हीन ग्रंथि का जन्म हो जाता है। उसकी दमित लालसा क्रांति के क्षेत्र में विघटन आरम्भ करती है। विवर्त में भुवन सर्वाधिक जटिल पात्र है। मोहिनी के चरित्र में इद और इगो का संघर्ष है। इसी संघर्ष के कारण उसकी जटिलता सहज ग्राह्य नहीं बन पाती है।

'व्यतीत' आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है। जिसमें कथानायक जयन्त अपने विगत जीवन क्षण स्मरण करता है। जीवन की समस्याओं से घबराकर वह अतीत जीवन की झांकियों में जीवित रहना चाहता है क्योंकि वह वर्तमान की गरलता से आकुल है और इसी आधार पर भविष्य की भयंकरता से चौंका हुआ है। इसलिए वह जीवन का प्रत्यावलोकन करता है। इसमें पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग हुआ है। इसमें एक छोटी सी कथा के माध्यम से एक व्यक्ति के हृदय में पड़ी गांठ का मनोविश्लेषण किया गया है।

'व्यतीत' की सबसे बड़ी उपलब्धि चरित्र वैविध्य है। जयन्त के जीवन की सक्रियता, निराशावादिता और लैंगिकबद्ध मूलता अनीता के प्रेम की देन है। चरित्र निर्माण की दृष्टि से जयन्त का चरित्र सर्वोत्तम है। अनीता सुनीता के समान होकर भी मौलिक है। वह सुनीता की तरह प्रेमी को अपना शरीर दान करना, अपना कर्तव्य मानती है लेकिन अपनी इच्छा से, पति आदेश से नहीं। दोनों में समता भी पर्याप्त है। समर्पणोपरांत सुनीता भी ठुकराई गई है, अनीता भी अनीता के चरित्र के विपरित चन्द्री अहम् की पुजारिण है। वह अपने अहम् की रक्षा हेतु बड़ी सरलता से जयन्त के जीवन से हट जाती है। इस प्रकार तथ्य विवेचन तथा पात्र उद्भावना की दृष्टि से 'व्यतीत' एक नवीन प्रयोग है।

'जयवर्धन' डायरीनुमा पद्धति पर लिखा गया उपन्यास है। इस पद्धति का सम्पूर्ण एवं सफल रूप जयवर्धन में ही उपलब्ध होता है। ''जैनेन्द्र जी ने 'जयवर्धन' उपन्यास आगे आने वाले भविष्य की कल्पना करके लिखा था। भविष्य कल्पना द्वारा समाज के कार्यकलापों और व्यवहारों का अनुमान करने का प्रयोजन कुछ सीमा तक कौतुहल उत्पन्न करना और समाज के विकास अथवा ह्रास की संभावनाओं की और संकेत करना है।''

जय उपन्यास का नायक है, इला नायिका। इला विरोधी दल के नेता आचार्य की पुत्री है तथा राजनीति में वह जय की सहकर्मी है। धीरे–धीरे दोनों में प्यार हो जाता है। जय बहुमत दल के नेता के रूप में शासनगढ़ है। वह राजकाज में व्यस्त है लेकिन उसके जीवन की व्यस्तता सामाजिक निर्माण से अधिक व्यक्तिगत चाह से सम्बंधित है। इस प्रकार जयवर्धन की कथा बहुत संक्षिप्त सी है। कुछ घटनाओं के संकेत मात्र से ही जय और इला की लैंगिक अभुक्ति को अभिव्यक्त किया गया है।

इस प्रकार जैनेन्द्रजी की रचनाएँ व्यक्ति की महत्ता को अलग से नहीं ढूँढती है, उसकी वयथा के भीतर ही ढूँढती है। वे प्रसाद जी की तरह ही रोमांटिक दृष्टिकोण को अनिवार्य मानते हैं। इसी आधार पर उन्होंने समस्याओं का चुनाव किया और उन्हें एक विशेष रचना शिल्प में बाँधने का प्रयास किया है। उनका औपन्यासिक शिल्प प्रेमचंद्र की तरह Macro-cosmic नहीं है। परख से लेकर विवर्त तक का उनका रचना संसार निश्चित रूप से तथ्यों का, देश और काल का भूत विस्तार वाला रचना संसार नहीं है। वह अपने लघु रूप के भीतर ही आत्मपूर्ण हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

01. जैनेन्द्र के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिकअध्ययन – डॉ. मधु जैन, अभिलाषा पब्लिकेशन, कानपुर
02. नयी समीक्षा – अमृतराय
03. हिन्दी नाटक : उद्‌भव व विकास – दशरथ ओझा
04. अज्ञेय साहित्य : प्रयोग और मूल्यांकन – केदार शर्मा
05. जैनेन्द्र कुमार के उपन्यास – सुनीता, परख, विवर्त, जयवर्धन, त्यागपत्र, कल्याणी, सुखदा

1857 का स्वतंत्रता संग्राम और प्रेस कानून

डॉ. माधुरी शेरे
अतिथी विद्वान (इतिहास)
श्री अटल बिहारी वाजपेयी
शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
इन्दौर (म.प्र.)

भारत में समाचार पत्रों का प्रयोगात्मक आरंभ उन्नींसवी शताब्दी के प्रारंभ में हो गया था, मेटकाफ द्वारा प्रदत्त प्रकाशन स्वातंत्र्य के दिनों में ही महत्वपूर्ण स्थान पा सके। सन् 1857 की घटनाओं से इनके विकास में बाधा आई। इस महान् विद्रोह में पत्रों ने जो भूमिका अदा की उसका मूल्यांकन सरलता से नहीं किया जा सकता। भारतीय भाषा के पत्रों के पृष्ठपोषक रेवरेंड जे. लांग ने कहा है कि ''यदि यूरोपियन कार्यकर्ताओं ने जनवरी सन् 1857 में दिल्ली के देशी पत्रों से संपर्क किया होता तो उन्होंने उन पत्रों में देखा होता कि देशी लोगों में विद्रोह की भावना कितनी व्यापक थी और वे फारस और रुस से सहायता प्राप्त कर रहे थे।'' सन् 1857 से पूर्व पश्चिमोत्तर प्रांत में प्रकाशित समाचार पत्रों की संख्या प्रतिवर्ष बढ़ती गई। यह उल्लेखनीय है कि इन पत्रों की बहुत सी प्रतियाँ क्रय करके शासन इनको प्रोत्साहन देता था क्योंकि विद्रोह काल से पहले पश्चिमोत्तर प्रांत के पत्रों की बड़ी सर्तकता से छानबीन की जाती थी और उनमें शासन तथा उसके अधिकारियों की नीति की आलोचना के बहुत कम उदाहरण मिलते थे। लेकिन सन् 1857 के विद्रोह ने सारी परिस्थिति ही बदल दी। अंग्रेज अधिकारियों ने मांग की कि भारतीय भाषाओं के पत्रों का या तो पूर्ण दमन किया जाए अथवा उन पर कड़ा नियंत्रण लागू किया जाए।

सन् 1856 में लार्ड कैंनिग गर्वनर जनरल बनकर आए और सन् 1857 के गदर में निरीह और निर्दोष लोगों पर भी अत्याचार हुए। अंग्रेजी अखबार अंग्रेजी अत्याचारों को भूल गए लेकिन हिन्दुस्तानियों के कार्यो को नहीं भूल सके इसलिए वे लोगों को भड़काने लगे। यही नहीं लॉर्ड कैंनिग पर भी ये कटाक्ष करते थे और 'क्लीमेन्सी' (दयामय) कैंनिग कहकर इनका उपहास भी करते थे। सर चार्ल्स ट्रेविल्यान ने लिखा है कि :''उन दिनों के अखबार पढ़कर तुम विश्वास कर लोगे कि गदर का मूल कारण लॉर्ड कैंनिग थे और कानपुर तथा इलाहाबाद में जो भयंकर घटनाएँ हुई, उनका दोष लॉर्ड कैंनिग पर है और इन्हीं ने

चपातियाँ भेजी थी। गोरे पत्रों के हिंसापूर्ण लेखों की प्रतिक्रिया भारतीय पत्रों में भी उत्तेजना के रुप में प्रकट होती थी।'' 'मुंबई समाचार' 'जामे जमशेद' और दादाभाई नौरोजी संपादित 'रास्त गुफ्तार' में भारतवासियों की निर्दोषता सिध्द की जाती थी।

सन् 1857 के पूर्व भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की भूमिका बन चुकी थी। देश के प्रत्येक प्रांत में देशी और विदेशी भाषाओं में अनेक पत्र–पत्रिकाएँ जन्म ले चुकी थी। तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक असंतोष को ये पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाश में ला रही थी। इस असंतोष के कारण ही प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (1857) आरंभ हुआ। अंग्रेजी पत्र खुले रुप से तत्कालीन गर्वनर जनरल लार्ड कैंनिग की निंदा कर रहे थे और विद्रोह को न दबा सकने की समस्त जिम्मेदारी उनके सिर मढ़ रहे थे। दूसरी ओर भारतीय पत्र पूर्ण रुप से गदर का समर्थन कर रहे थे। इस प्रकार कहा जा सकता है कि सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम ने भारतीय प्रेस को राष्ट्रीयता के आधार पर विभाजित कर दिया।

प्रेस पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए **13 जून 1857 ई.** को बिना पूर्व अनुमति के प्रिंटिग प्रेस की स्थापना पर कड़ा नियंत्रण लगा दिया गया। लाइसेंस रद्द कर देने की बात भी उसमें सम्मिलित थी। **लार्ड कैंनिग** के ये नियम **गैंगिग एक्ट** (गलाघोंटू कानून) के रुप में जाने गए**। इस कानून के संदर्भ में लार्ड कैंनिग ने टिप्पणी करते हुए कहा** : ''...तथ्यों को तोड़–मरोड़कर पेश करने के अलावा सरकार को लगातार बदनाम किया जा रहा है, अपने उद्देश्य के बारें में झूठमूठ ऊँचे–ऊँचे दावे पेश किए जा रहे है और सरकार तथा उसके प्रजाजनों के बीच असंतोष और नफरत के बीज बोए जा रहे है... जो टिप्पणी इस समय में भारतीय समाचार पत्रों के बारें में कर रहा हूँ वह यूरोपियन समाचार पत्रों पर लागू नहीं होती।''

सन् 1857 के प्रथम स्वातंत्र्य समर के समय गर्वनर जनरल की परिषद ने भाषायी प्रेस के लेखन पर गंभीरता से ध्यान केन्द्रित किया, खासतौर से सेना और आम जनता में असंतोष भड़काने के मामले में। तब फिरंगी हुकूमत ने प्रेस पर नियंत्रण का निर्बाध अधिकार हस्तगत करने के लिए **सन् 1857 का पद्रहवाँ कानून** पारित किया जो भारत के सभी समाचार पत्रों पर लागू होता था भले ही वे भाषायी पत्र हो या आग्ल अखबार यह कानून एक वर्ष तक प्रभावशाली रहा।[5] नया अधिनियम कई समाचार पत्रों के लिए संकट का कारण बन गया। 'बंगाल हरकारु' का लायसेंस छीन लिया गया लेकिन बाद में फिर दे दिया गया। 'फ्रेण्ड ऑफ इंडिया' के संपादक को 'प्लासी की शताब्दी' शीर्षक लेख प्रकाशित

करने पर इस आधार पर चेतावनी दी गई कि वह लेख खतरनाक और उत्तेजनात्मक था। अनेक भारतीय संपादक इस अधिनियम के घेरे में आ गये। **'दूरबीन', 'सुल्तान–उल–अखबार' और 'समाचार सुधावर्षण'** के मुद्रकों और प्रकाशकों पर राजद्रोहपूर्ण सामग्री प्रकाशित करने के आरोप में सुप्रीम कोर्ट में मामला चलाया गया, लेकिन उन पर आरोप सिध्द नहीं हो सका। **'गुलशने–नौ–बहार'** का प्रकाशन बंद हो गया, क्योंकि उसका छापाखाना अपने पत्र में निंदात्मक लेख छापने के कारण जब्त कर लिया गया था।

इस अधिनियम में ''यूरोपियन और देशी पत्रों के बीच कोई भेद'' नहीं किया गया हालांकि ''इसे विशेष रुप से यूरोपियन पत्रों के विरुध्द लागू नहीं किया गया था।'' यह अधिनियम ''प्रत्येक प्रकार के प्रकाशन पर चाहे उसके मुद्रण की भाषा कोई भी हो और प्रकाशन के लिए उत्तरदायी व्यक्ति कैसा भी हो, लागू होता था।'' बंबई के गर्वनर ने जिनके लिए उस क्षेत्र के पत्रों के विरुध्द शिकायत का कोई औचित्य नहीं था, इस संकल्पित उद्देश्य से प्रतिबंध लगाने के पक्ष में एक विज्ञप्ति निकाली कि प्रस्तावित कानून के विरुध्द भारत या इग्लैंड में होने वाले संभावित विरोध में कैंनिग के हाथ मजबूत हो।

इस प्रकार सन् 1857 के अधिनियम क्रमांक 15 को विधिपुस्तिका में स्थान मिला। इसका उद्देश्य प्रकाशित पुस्तकों और पत्रों के प्रचलन को नियंत्रित करना था। अधिनियम ने शासन से लायसेंस लिए बिना छापे खाने रखने या चलाने पर प्रतिबंध लगा दिया जिसे स्वेच्छापूर्वक लायसेंस देने या किसी भी समय उसे रद्द करने का अधिकार था इसके अधीन सरकार को किसी समाचार पत्र, पुस्तक या किसी अन्य छपी हुई सामग्री को प्रकाशित या प्रचलित करने पर रोक लगाने के व्यापक अधिकार प्राप्त हो गये। अंग्रेजी या भारतीय भाषाओं में पत्रों के प्रकाशनों के बीच कोई भेद नहीं रखा गया था। यह अधिनियम सारे भारत में प्रभावशाली किया गया था और उसे एक वर्ष अर्थात् 13 जून तक लागू रखा गया था। कैंनिग की घोषणा के अनुसार भारतीय प्रेस को स्वतंत्र कर दिया। साथ ही साथ भारत के शासन का प्रबंध ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथों से हस्तांतरित होकर ब्रिटिश संसद के हाथों में पहुँच गया। अब भारतीय प्रेस अपने नये विकास के युग में प्रवेश कर गई। परंतु प्रेस अपने–अपने स्वार्थ के अनुसार विभाजित हो गई, क्योंकि शासक और शासित दोनों आर्थिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भिन्न थे। अंग्रेज पत्रकारों ने पृथकतावादी विचारधारा स्थापित कर ली और स्वदेशी पत्रकारों को असभ्य और विद्रोही बताया और वे स्वदेशी पत्रों के विरुध्द सरकार के कान भरते रहते थे। दोनों के बीच की

इस खाई को एलनबरों ने 7 दिसम्बर 1857 को ब्रिटिश संसद में स्पष्ट रुप से भिन्न रुप में चित्रित किया : ''भारत में प्रेस पूर्ण रुप से भिन्न रुप से स्थित है। इग्लिंश प्रेस भारत के लोगों की प्रेस नहीं है। यह अजनबी सरकार और शासक वर्ग की प्रेस है। जो उनके स्वार्थ को प्रकाशित करती है। मैं यह नहीं कहता कि यह समय–समय पर देश के हित को नहीं उभारती, इग्लिंश प्रेस का यह उद्देश्य वास्तव में नहीं है। यह तो उन व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करती है जो इसके समर्थक है। दूसरी ओर स्वदेशी प्रेस, चूंकि शासक वर्ग की नीतियों का विरोध करती है। अंग्रेजी प्रेस स्वदेशियों की समझ से बाहर है, जब तक उनका अनुवाद स्वदेशी भाषा में न हो जाए। इस बीच में भारतीय मस्तिष्क पर इस बात का प्रभाव नहीं होता। इसी प्रकार स्वदेशी प्रेस का प्रभाव हमारे ऊपर नहीं होता चूंकि हम इसे नहीं पढ़ते है। अतः यह स्पष्ट है कि इग्लिंश प्रेस का प्रभाव भारतीयों पर तब तक नहीं पड़ेगा, जब तक उसके लेखों को अनुवादित नहीं किया जाता।''

लार्ड कैंनिग का मुद्रणालय अधिनियम सभी पर लागू होता था और उसके प्रभाव से अंग्रेजी भाषा के समाचार पत्र भी मुक्त नहीं थे। इसे यूरोपियनों ने बुरा माना और उन्होंने साम्राज्ञी से निवेदन किया कि कैंनिग को वापस बुला लिया जाय क्योंकि उसकी नीति बड़ी अशक्त और ढुलमुल है। यूरोपियन समाज की प्रबल आकांक्षा थी कि प्रतिरोध की नीति अपनायी जाय जिसकी अभिव्यक्ति ऐंग्लों इंडियन समाचार पत्रों में होती थी। लेकिन पर्याप्त कारणों से इनका मुँह बंद कर दिया गया। पटना के रेवेन्यू कमिश्नर के शब्दों में –''इन पत्रों में लिखे जाने वाले लेखों का स्वरुप और ध्वनि शासन के स्थायित्व के लिए इतने खतरनाक हो सकते थे जितने कि सरकार की कार्यवाहियों या सदस्यों के विरुध्द कहे गये अपशब्द भी नहीं हो सकते थे। ऐंग्लों इंडियन प्रेस ने जनता के बहुत बड़े भाग में सरकार के विरुध्द असंतोष भड़काया और अभी तक उसे सैनिक विद्रोह माना जाता था उसे राष्ट्रीय विप्लव का रुप देने की प्रवृत्ति उसमें थी। ऐंग्लों इंडियन समाचार पत्रों को सरकार ने अपने ही हित में दबाया न कि भारत में सभी समाचार पत्रों के प्रति समान व्यवहार की नीति के कारण।

अब यह बात स्पष्ट हो गई कि ऐंग्लों इण्डियन पत्र स्वदेशी भाषाओं के पत्रों के विरुध्द षडयंत्र रच रहे थे ताकि सरकार उनकी स्वतंत्रता को छीन ले और वे अपने देशवासियों की परेशानियों को प्रकाशित न करे। ये पत्र स्वदेशी पत्रों को विद्रोही बता रहे थे, परंतु **'अल्मोड़ा अखबार'** के अनुसार यह आरोप एकदम झूठा था। वे सरकार को

समर्थन देने का आश्वासन दे रहे थे परंतु उन आश्वासनों के पश्चात् भी समय–समय पर सरकार संवैधानिक तथा प्रशासनिक कदम उठा रही थी। सन् 1857 के बाद भारतीय समाचार–पत्रों में तेजी से वृध्दि हुई। सन् 1876 में बंबई से 60 भारतीय समाचार–पत्र, मराठी–गुजराती, हिंदुस्तानी और फारसी भाषा में प्रकाशित होते थे।

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के समय प्रेस पर टिप्पणी करते हुए लांग लिखते है–''उस (विद्रोह) काल में भारतीय समाचार पत्रों के बारें में बहुत कुछ लिखा और कहा गया और उनके बारें में बिना सोच–विचार के अनेक टीका–टिप्पणियाँ की गयी। कुछ लोगों ने कहा कि ये समाचार पत्र इतने भ्रष्ट है कि इन्हें समाप्त कर देना चाहिए... कुछ अरसे से कुछ अधिकारी इस गुत्थी को हल करने की बात कहने लगे है और उनका विचार है कि या तो भारतीय समाचार पत्रों का दमन किया जाए या उन पर कड़ा सेंसर बिठा दिया जाए। हमारा विश्वास है कि इस रिपोर्ट को देखने से पता चलेगा कि योग्य प्रशासन और उपयुक्त शिक्षा प्रसार के हित में इस तरह का कदम कितना आत्मघाती होगा।''

सारांशतः सन् 1857 ई. के विद्रोह के समय पत्र जनता की भावनाओं को प्रतिबिम्बित कर रहे थे। सन् 1857 के विद्रोह में तत्कालीन समाचार पत्रों का विशेष योगदान रहा। प्रेस ने भारतीय जनता की आवाज एवं महत्वाकांक्षा को वाणी दी। पत्रों ने जनता की भाषा में अपने राष्ट्रीय चरित्र को सामने रखा। भाषायी प्रेस का तेजी से विकास हुआ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

01. मिश्र द्वारकाप्रसाद (2002), *म. प्र. में स्वाधीनता आन्दोलन का इतिहास,* भोपाल : स्वराज संस्थान संचालनालय संस्कृति विभाग.
02. बाजपेयी अम्बिकाप्रसाद (2010), *समाचार पत्रों का इतिहास,* वाराणासी : ज्ञानमण्डल लिमिटेड.
03. शर्मा श्रीपाल (1978), *हिन्दी पत्रकारिता राष्ट्रीय नवउद्‌बोधन,* दिल्ली : राज पब्लिशिंग हाउस.
04. तिवारी अर्जुन (1997), *हिन्दी पत्रकारिता का वृहद इतिहास,* नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन.
05. वैदिक वेदप्रताप (2002), *हिंदी पत्रकारिता विविध आयाम भाग–1,* नई दिल्ली : हिन्दी बुक सेन्टर.
06. आंचलिक पत्रकार –मई 2007, जून 1997

धार्मिक आडम्बर और कबीर

डॉ. प्रमिला शेरे
सहायक प्राध्यापक (इतिहास)
शासकीय महाविद्यालय, टोंकखुर्द,
देवास

हिंदू धर्म बहुत पुराना धर्म है जो मध्यकाल में अपनी विशेषताओं के साथ विद्यमान था। वस्तुतः इस काल में लोक व्यवहार को ही धर्म माना गया था। जिसका स्वरुप कर्मकाण्ड, पाखण्ड एवं बाह्यचारों से निर्मित था। समाज में अनेक जातियाँ और उन जातियों के अलग–अलग धर्म थे। समाज में प्रचलित हिंदू और बौध्द, जैन एवं इस्लाम धर्म पर भी कर्मकाण्डों व मिथ्याडम्बरों का प्रभाव था। कबीर को इन सभी आडम्बरों से घृणा थी। वे समाज को इस अज्ञान के अंधकार में पड़ा हुआ नहीं देखना चाहते थे। उन्होंने एक और पीरो मुरीदो, काजियों, मुल्लाओं और दरवेशो के घृणित कार्यो का उद्‌घाटन किया तो दूसरी और पांडे, पुजारी, भक्ति–विमुख कर्मकाण्ड एवं बाह्यचार में उलझे हुए हिंदूओं को भी खूब खरी–खोटी सुनाई। कबीर की इस प्रवृत्ति ने निश्चय ही उन्हें कठिनाई में डाला होगा। तभी तो उन्हें 'तू ब्राह्मण मै कासी का जुलाहा, चीन्हि न मोर गियाना' कहना पड़ा होगा। कबीर ने निरंतर हिंदू और मुसलमान दोनों के दोषों को उभारा और अपनी दृष्टि से सुधार का हर संभव प्रयास किया।

कबीर ने हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों के धार्मिक नेताओं की सबसे अधिक कटु ओलोचना की जिन्होंने लोगों के विश्वास का अपना स्वार्थ सिध्द करने के लिए दुरुपयोग किया एवं धर्म के सार को समझे बिना अपने ग्रंथीय ज्ञान का प्रभाव जमाने का प्रयास किया। कबीर ने ईश्वर के एकत्व में अपने विश्वास के आधार पर मानव समानता की अपनी संकल्पना प्रस्तुत की। इसके कारण उन्होंने समाज में विद्यमान सोपानिक क्रम के साथ–साथ उन लोगों की भी तीव्र भर्त्सना की है जो अपने धन भूमि पर नियंत्रण, परिवार, प्रजाति आदि पर अभिमान करते थे।

हिंदू समाज जिस वर्णाश्रम धर्म और षट्‌दर्शन पर आधारित था, उस पर कबीर ने सीधा आक्रमण किया। योग, यज्ञ, व्रत, दान आदि की व्यर्थता को इतना स्पष्ट और निर्भीक भाषा में इनके पहले और संभवतः बाद में भी किसी ने नहीं व्यक्त किया था। उन्होंने

समस्त व्रतों, उपवासों और तीर्थो को एक साथ अस्वीकार कर दिया। उन्होंने एक अल्लाह निरंजन निर्लेप के प्रति लगन को ही अपना लक्ष्य घोषित किया। प्रेम ही साध्य है, प्रेम ही साधन व्रत भी नहीं, मुहर्रम भी नहीं, पूजा भी नहीं, नमाज भी नहीं, हज भी नहीं, तीर्थ भी नहीं। अपनी तार्किक शैली में समाज के बाह्यडम्बर पर कटु प्रहार कबीर ने किए है। कबीर ने कहा–

''जो तू ब्राह्मण ब्राह्मनी जाया,

आन बाट हवै क्यो नहीं आया।

इसी प्रभाव से उन्होंने मुल्ला की बाँग और हिंदुओं की पीतल पिटत पर उक्तियाँ कही है चुटकियाँ ले लेकर व्यंग कसे है। इन्ही उक्तियों के माध्यम से उन्होंने धर्म के मूल तत्व को पहचान कर ढोंग के ढोल की पोल खोल दी।

''मस्जिद भीतर मुल्ला पुकारे, क्या साहिब तेरा बहिरा है ?

चिउंटी के पग नेवर बाजै, सो भी साहिब सुनता है।

पंड़ित होय के आसन मारे, लम्बी माला जपता है।''

कबीर ने स्थान–स्थान पर पुस्तकीय ज्ञान की खिल्ली उड़ाई है।

''पोथी पढ़–पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोय

एक आखर प्रेम का, पढै सो पंडित होय।''

दोनों मतों के दोष प्रकट करने में कबीर ने पूर्ण निष्पक्षता से काम लिया है। यदि उन्होंने हिंदूओं की पत्थर पूजा की खिल्ली उड़ाई है–

पाहन पूजे हरि मिले, तो मै पूँजू पहार

ताते यह चाकी भली, पीस खाय संसार।''

तो दूसरी ओर मुसलमानों की अजान आदि पर भी व्यंग किया है–

''काँकर पाथर जोरि के, मस्जिद लई चुनाय।

वा चढ मुल्ला बाँग दे, बहरा भया खुदाय।''

कबीर कहते है कि जो पत्थर की मूर्ति को स्त्रष्टा मानकर पूजा करते है और उसी के भरोसे रहते है, वे भवसागर की भयंकर कालीधार में डूबे है।

पाहन कारे पूतला, करि पूजै करतार।

इसी भरोसे जे रहे, ते बूडे काली धार।।

कबीर कहते है कि पत्थर की पूजा से क्या लाभ जो जीवन भर अनुनयविनय का जवाब भी नहीं देता। अभिलाष–ग्रस्त व्यक्ति अंधा हो जाता है। वह व्यर्थ में अपनी मर्यादा खोता है।

पाहन को क्या पूजिए, जो जनमि न देई ज्वाब।

अंधा नर आसामुखी, यौ ही खोवै आब।।

कबीर कहते है कि जप तप तीर्थ व्रत आदि के द्वारा मुक्ति प्राप्त नहीं होती उनको केवल नैराश्य की प्राप्ति होती है।?

जप तप दीसै थोथरा, तीरथ व्रत बेसास।

सूवै सैंबल सेविया, यौ जग चला निरास।।

कबीर कहते है कि तीर्थ, व्रत आदि केवल विष की बल्लरियाँ है, जिन्होंने सारे जगत को आच्छादित कर रखा है। ये साधना में विष के समान है।

तीरथ व्रत विष बेलडी, सब जग मेल्या छाइ।

कबीर मूल निकेदिया, कौन हलाहल खाई।।

कबीर कहते है–लोग व्यर्थ में तीर्थ और देवालय में देव दर्शन के लिए जाते है। वह तो तुम्हारे पास ही है इस मन को मथुरा, दिल को द्वारिका और काया को काशी समझो। दस द्वारों वाला शरीर तुम्हारे पास है। इसमें जो आत्म–ज्योति है, उसे पहचानो।

मन मथुरा दिल द्वारिका काया कासी जानि।

दस द्वारे का देहरा, तामे जोति पिछाति।।

माला धारण करने व सिर मुँडाने से कुछ नहीं हासिल होता इस संबंध में कबीर कहते है–

माला पहरिया कछु नही, भगति न आई हाथि।

माथो मुंछ मुडाइ करि, चला जगत के साथि।।

मूँड मुडावत दिन गए, अजहूँ न मिलिया राम।

राम नाम कहु क्या करे, जे मन के औरे काम।

कबीर ने हिंदू–मुस्लिम दोनो सम्प्रदायों में व्याप्त बाह्याचार को भ्रम बताया है और कहा है कि ईश्वर का वास घट में ही है उसे वही खोजना चाहिए मंदिर या मस्जिद में नहीं। बाह्याचार का खंडन करते हुए वह कहते है कि नमाज के समय जमीन में झुककर सिर लगाने अथवा मंदिर में देवता के सामने पृथ्वी पर माथा टेकने से क्या लाभ? पवित्रता की दृष्टि से शरीर को जल से स्वच्छ करने से भी क्या लाभ? हिंदू–मुस्लिम दोनों मतावलम्बी अपने पाप को छिपाने के लिए धर्म के नाम पर जीवों का वध करते है और अपने को दीन

बतलाते है। वजु करने से जप से और तीर्थादि में स्नान करने से क्या लाभ? मस्जिद में सिर झुकाने से भी क्या लाभ हो।

कथनी और करनी में अंतर देखकर ही उन्होंने पांडे, काजी और मुल्ला को अस्वीकार कर दिया था। पंडित को सम्बोधित अपने एक पद मे वे कहते है कि पंडित, तुम्हे क्या कुबुध्दि लग गई है? अरे अभागा, अगर राम को नहीं जप सका तो परिवार सहित भवसागर में डूब मरेगा। वेद–पुराण पढने का क्या लाभ? जीवहत्या करते हो और उसे धर्म कहकर विज्ञापित करते हो। फिर अधर्म किसे कहोगे? स्वयं को तो मुनिवर कह लेते हो, पर कसाई किसे कहोगे? इसी तरह की कथनी–करनी की दूरी देखकर वे मुल्ला से भी खुदाई–न्याय की बाबत पूछ लेते है–'मुल्ला, तुम्ही खुदाई न्याय की बात बताओ। तुम लेखे के अनुसार तो सभी जीवो को एक मानते हो, पर (व्यवहार में) मुर्गी भी मारते हो और बकरी भी। और अपने इस कर्म को उचित सिध्द करने के लिए हक्क–हक्क (उचित) भी बोलते हो। जब सभी जीव साई के प्यारे है, फिर तुम्हारा उध्दार कैसे होगा?

कबीर ने भक्ति मार्ग को कर्म मार्ग तथा ज्ञान मार्ग से श्रेष्ठ बताते हुए कहा है कि जब तक आराध्य के प्रति भक्ति भाव नहीं है तब तक जप तप संयम, स्नान ध्यान आदि सब व्यर्थ है।

झूठा जप–तपझूठा ज्ञान।

श्राम नाम बिन झूठा ध्यान।।

कबीर कहते है कि हे पंडित! तुम पवित्रता का व्यर्थ पाखंड करते हो। वह स्थान बताओ जो सर्वथा पवित्र हो। कबीर कहते है कि वास्तव में पवित्र वही है जो मानसिक विकार त्यागकर भगवान की भक्ति करता है। बाहरी पवित्रता दिखावा मात्र है। कबीर कहते है कि हे काजी! तुम किस धर्मग्रंथ की प्रशंसा करते हो उसका अध्ययन करते हुए तुम्हारे जीवन के न जाने कितने वर्ष बीत गए किंतु मर्म तुम्हारी समझ में नहीं आया। इसी प्रकार हिंदुओं के बाह्याचार पर व्यंग करते हुए कहते है कि यदि यज्ञोपवीत धारण करना ही द्विज का चिन्ह है तो स्त्रियों को क्या पहनाया गया है जिससे वे द्विजो में गिनी जा सके। हिंदू और मुसलमान कहाँ से पैदा हो गए? यह भेद नेसर्गिक नहीं है, मानवकृत है। मानव केवल मानव है न हिंदू न मुसलमान।

कबीर कहते है कि प्रभु भक्ति से ही सिध्दी प्राप्त हो सकती है यदि सिर मुडाने से ही सिध्दी प्राप्त हो जाती तो भेड जिसके पूरे शरीर के बाल मूड जाते है अवश्य ही सीधे

स्वर्ग को पहुँच जाती। कबीर कहते है कि केवल वेद पुराण के अध्ययन से क्या लाभ जब तक कि उसके आदर्शो को आचरण में परिवर्तित न किया जाए। आचारहीन शास्त्र ज्ञान वैसे ही निरर्थक है जैसे गधे के ऊपर चंदन का बोझ। बाह्य वेशभूषा की निरर्थकता बताते हुए वह कहते है कि सिर मुडाकर और कानो में मुद्रा धारण कर व्यर्थ ही गर्व मे फूले बैठे हो। बाह्य शरीर में तुम भस्म लपेटे हुए हो किंतु भीतर विषय वासनाओं ने तुम्हारे हृदय को लूट लिया है।

कबीर ने मानवीय धर्म के आधार पर अपनी प्रेम–साधना के मार्ग पर चलने के लिए विभिन्न धर्म–संप्रदायों में प्रचलित ऐसे कर्म–काण्डों तथा आचारों का विरोध किया है जो पाखंडवत हो गये है। सामाजिक अपराधों को करने वाला व्यक्ति तीर्थ–यात्रा करता है, यह उसी प्रकार है जैसे ज्ञान के बिना घाट के बीच डूब जाना। अनेक दर्शनों तथा बहुविध शास्त्रों का अध्ययन करके भी मनुष्य बिना केन्द्रीय भाव–तत्व को जाने–समझे विभ्रमित ही होता है। जप–तप, नियम–संयम और पूजा–अर्चनाकरके भी व्यक्ति जीवन का सही मार्ग नहीं पाता। जिस प्रकार कागज पर लिख–लिख कर मनुष्य भम्र में पड जाता है, वह मन के मूल–भाव–तत्व को नहीं ग्रहण कर पाता। मनुष्य संसार के अंधेरे कुहासे में भटकता है और जीवन के सत्य को नहीं पाता। इस भटकाव में हिन्दू मूर्ति–पूजा करके और तुर्क हज जाकर जीवन गवाँ देता है। इसी प्रकार अनेक वेश–धारण कर व्यक्ति भटकते है और वेद का पाठ कर तथा धन–सम्पदा को संचित कर जीवन व्यर्थ गवाते है। कबीर ऐसे कर्मकाण्डो की अपेक्षा प्रेम साधना के लिए, मूल्यों की भूमिका स्वीकार करते है।

वह बार–बार इस बात पर बल देते है कि ब्राह्मणों के द्वारा एकादशी का व्रत करना अथवा काजी के द्वारा रमजान में रोजा रखना निरर्थक है। अगर खुदा मसजिद में रहता है, तो यह सारा संसार किसका है? इसी प्रकार अगर राम तीर्थ तथा मूर्ति में निवास करता है तो अन्यत्र उसे कहाँ देखा जाए। और यह भी कहना क्या अर्थ रखता है कि पूर्व दिशा में हरि का निवास है और पश्चिम में अल्लाह का। वस्तुतः राम और रहीम हृदय में निवास करते है और उनकी वही खोज करनी होगी।

कबीर का जीवन अंधविश्वासों का विरोध करने में ही बीता था। अपनी मृत्यु से भी उन्होंने इसी उद्देश्य की पूर्ति की। काशी मोक्षदापुरी कही जाती है। मुक्ति की कामना से लोग काशीवास करके वहाँ तन त्यागते है और मगहर मे मरने का फल नरकगमन माना जाता है। यह अंधविश्वास अब तक चला आता है कहते है कि इसी के विरोध में कबीर

मरने के लिए काशी छोड़कर मगहर चले गए थे। वह अपनी भक्ति के कारण ही अपने आपको मुक्ति का अधिकारी समझते थे। उन्होंने कहा भी है–

जो काशी तन तज कबीरा तो रामहि कहाँ निहोरा रे।

इस अंधविश्वास का उन्होंने जगह–जगह खण्डन किया है–

हिरदे कठोर मरया बनारसी नरक न बच्चा जाई।

हरि को दास मरे जो मगहर संध्या सकल तिगई।।

जस कासी तस मगहर ऊसर हृदय रामसति होई।

इस प्रकार सब बाहरी धर्माचारों को अस्वीकार करने का अपार साहस लेकर कबीरदास साधना के क्षेत्र में अवतीर्ण हुए। केवल अस्वीकार करना कोई महत्व की बात नहीं है पर किसी बड़े लक्ष्य के लिए बाधाओं को अस्वीकार करना सचमुच साहस का काम है रुढियो और कुसंस्कारो की विशाल वाहिनी से वह आजीवन जूझते रहे। इन कुसंस्कारों, रुढियो और बाह्यचार के जंजालों को उन्होंने बेदर्दी के साथ काटा। वे सच्चे शूर की भाँति जूझते ही रहे। बाह्यचार की निरर्थक पूजा और संस्कारों की विचारहीन गुलामी कबीर को पसंद नहीं थी।

उन्होंने सुन्नत बाँग और कुबार्नी आदि की खरी आलोचना की है पर चाहे मुसलमानी धर्म के बाह्यचार का खंडन हो या हिंदू मत के, उन्होंने अपने पूर्ववर्ती अख्खड योगियों की भाँति महज खंडन के लिए खंडन नहीं किया। उनका केन्द्रीय विचार भक्ति था। वे भक्ति को प्रधान मानते थे। उनके मत से भक्ति और बाह्याडम्बर का संबंध सूर्य और अंधकार का सा है। एक साथ दोनो नहीं रह सकते।

कबीर के बाह्याडम्बर के खंडन में अनन्य सच्चाई है, जो सिध्द योगियों की उक्तियों में नहीं मिलती। कबीर के अनुसार यदि विचार, शुध्द और पवित्र नहीं है तो धर्म भी पवित्र और शुध्द नहीं हो सकता। कबीर ने धर्म के क्षेत्र में आचरण पर विशेष बल दिया किंतु आचारों के बाह्य रुप से उन्हें घृणा थी। उन्होंने किसी भी धार्मिक विश्वास लोक तथा वेद के अंधानुकरण को स्वीकार नहीं किया बल्कि विवके से उन धर्मो विश्वासो तथा पाखण्डों को अपनी ध्वंसात्मक भूमिका से तहस–नहस करके ही दम लिया।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

01. मौर्य प्रहलाद : कबीर का सामाजिक दर्शन, पुस्तक संस्थान, कानपुर, संस्करण 1973.

02. सेठ रवीन्द्र : तिरुवल्लूवर और कबीर का तुलनात्मक अध्ययन, नेशनल पब्लिसिंग हाउस, प्रथम संस्करण–1972.

03. स्नातक विजयेन्द्र : कबीर, राधाकृष्णन प्रकाशन लिमिटेड दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1965.

04. द्विवेदी हजारीप्रसाद : कबीर, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, छठा संस्करण 1998.

05. सिंह पुष्पपाल : कबीर ग्रंथावली सटीक, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 1965.

06. सिंह जयदेव– वासुदेव : कबीर वाङ्मय (साखी), विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण 1993.

07. सिंह जयदेव– वासुदेव : कबीर वाङ्मय (सबद), विश्वविद्यालय प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1981.

08. सिंह राजदेव : कबीर आधुनिक संदर्भ में, लोकभारती प्रकाशक, इलाहाबाद, संस्करण 1991.

09. चौबे झारखंड एवं श्रीवास्तव कन्हैयालाल : मध्ययुगीन भारतीय समाज एवं संस्कृति, उ. प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ, तृतीय संस्करण –2000.

10. डॉ. रघुवंश : कबीर एक नई दृष्टि, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1991.

English, The De Facto Official Language of India: A Bitter Truth

Dr. S.S. Thakur
Asst. Professor in English
Shri Atal Bihari Vajpayee
Govt. Arts & Commerce College
Indore (M.P.)

Abstract: *Language, is something specific to humans, that is to say it is the basic capacity that distinguishes humans from all other living beings. Language therefore remains potentially a communicative medium capable of expressing ideas and concepts as well as moods, feelings and attitudes. A set of linguists who based their assumptions of language on psychology made claims that language is nothing but 'habit formation'. According to them, language is learnt through use, through practice. In their view,* ***'the more one is exposed to the use of language, the better one learns'****. A language is a systematic means of communication by the use of sounds or conventional symbols. It is the code we all use to express ourselves and communicate to others.*

English language has been voluntarily adopted as the most important vehicle for the exchange of views, ideas and also being used as the commercial exchanges in all over the world, including non-English spoken countries like, China, Korea, Japan, and many other countries in Europe and Asia.

Language is a communication by word of mouth. It is the mental faculty or power of vocal communication. It is a system for communicating ideas and feelings using sounds, gestures, signs or marks. Any means of communicating ideas, specifically, human speech, the expression of ideas by the voice and sounds articulated by the organs of the throat and mouth is a language. This is a system for communication. A language is the written and spoken methods of combining words to create meaning used by a particular group of people.

Written languages use symbols (characters) to build words. The entire set of words is the language's vocabulary. The ways in which the words can be meaningfully combined is defined by the language's syntax and grammar. The actual meaning of words and combinations of words is defined by the language's semantics.

English language plays a pivotal role for the latest and the most advanced discoveries and inventions in Science and Technology, Commerce and Trade and several many other areas. MAKE IN INDIA, a Global Initiative, is an ambitious venture, launched on 24th September, 2014, by the honorable Prime Minister of India, Mr. Narendra Modi, with an aim to give the Indian economy global recognition. The term, MAKE IN INDIA, itself is expressed

in English language with full-throated voice that apparently indicates the need of English Language in the present Global scenario. The present paper attempts to overview the role of English language at the national and global level (to successfully achieve the goals of the highly ambitious initiatives launched in our country in past couple of years to boost the purchasing power of the common man, as this would further boost demand, and hence spur development, in addition to benefiting investors).

In our country English is important for a number of reasons. India is a land of diversity. Different people speak different languages. A person of Tamil Nadu does not speak Hindi. So he can't understand Hindi of a person from North India. However he can understand English. So English automatically becomes a link language, at least in the midst of the educated ones. Different people can communicate with one another with the help of English. Secondly, all advanced knowledge in science, technology and medicine is available in English. The results of the latest researches come to India through the medium of English. If we give up English, we will lag behind in the higher fields of study. Today the world has become one family.

It is all due to English language. English is an international language. English is the language of the Constitution, the Supreme Court, the High Courts and official departments. English is now firmly rooted in the soil of India. It has become a part of Indian life. Thus English has great importance for the integrity of India. It has to be second language in our country for the better development of the country.

There are issues with this situation. One, English is a self-perpetuating advantage that creates haves and haves not across generations. If your parents can speak in English, if their friends and their children speak in English, you are much likelier to grow up to speak English. This self-perpetuation is true about education in general (if your parents are educated you are likelier…) but while better access to books, schools and teachers can, to a large extent, break the cycle for general education, this is really hard to do when it comes to speaking a non-native language. Two, an English medium instruction may actually be detrimental to a child's education. There must be millions of children who sit through say, a History class in English, not understanding much of what is being taught.

Across the cross section of India, I think English medium education works to disperse educational outcomes. For a small minority, it results in better English skills but no better general educational outcomes. These small minorities, who have an "English friendly" environment, an English medium education poses no hurdle, or a very small one. But the

rewards are linked to opportunities in the global marketplace for higher education and jobs, including the export oriented service industries in India.

For the large majority, however, according to the research, English medium education works differently and leads to poorer educational outcomes and poorer language skills. If this is the case, it must be a matter of great concern to education administrators.

If things continue as they are today the future will see:

- English, not just talent and hard work, will be a key determinant of income. Did your parents speak English? Could they afford to send you to a English only convent? These factors will determine the kind of job Indians will get perhaps more than their capabilities. Class mobility while not being engrained for generations, will be restrained.
- We need a well educated population – for a 21st century economy, for a well informed electorate. Is a forced diet of English medium education going to get us there? Will children learn elementary school science better in English or their mother tongue? Do we even have the teachers who can teach Biology in English, in the numbers needed?
- Will English medium students actually join the work force with good English skills? If you go by the writing skills that one sees in the comments section of Indian websites, I seriously doubt that all the years of English medium education has done them any good.

If there is any policy direction that we need here it's that India has to pay serious attention to the manufacturing side of the economy. Sophisticated manufacturing industries value skills. Factory workers don't need English skills to work with global clients. Just like Germany's world-beating machine tool industry is all German speaking. While the capital markets industry, being integrated into the global capital markets, speaks English. And if we focused more on teaching English better, rather than teaching every subject in English, we just might turn out better workers.

English language is widely used in official communications. The abolition of English will adversely affect the office work. Most office-goers know English, but many of them do not know other languages besides their mother-tongue or regional language. Then, they communicate with each other in English for their everyday work. So, if the office-goers are asked to bid goodbye to the English language, they will face a great difficulty.

The importance of English in education and student's life cannot be denied. English remains a major medium of instruction in schools. There are large number of books that are

written in English language. If English is abolished today, it will affect the education system in India. So, unless and until we translate these books into various regional languages, it will affect education. But this work is very hard and time-consuming indeed. Students who want to go abroad for education will have learn to English well. If their command over English is poor, then they may face difficulty in adjusting with the alien environment.

The communication of India with other countries takes place in English language. For a developing country like India, it is essential to be in constant intercourse with other countries. English is also an important language for inter-state communications. Modern India has many large States. People of each State converse in their own language and often cannot speak or understand the regional language of other people. In such cases, English becomes the link between these people. So, here too we cannot deny the importance of English in modern India.

The study of English language in this age of globalization is essential. English language is the most important language of communication between different countries. In India, people of different states have their own language. English Language has come us as a connecting link among various states of India.

U.N. has recognized five languages as its official languages and of them English takes the first position because of its background, international acclaim of easy access to the people. If we go back to historical facts, we see that half of the globe was under the British imperialism. Those countries coming directly under British rule had by necessity or under compulsion to learn English and the rest either being influenced by the English culture or to keep pace with modern trend had but to opt for learning it.

India's long association with English language has benefited the people in many ways. English language has enriched the Indian language and culture and has broadened our outlook on life. India is a sub-continent inhabited by diverse people. The mother tongue of one state is Greek or Latin to another. Under such circumstances English acts as the 'lingua franca'. Thus, English has directly helped India to achieve unity in diversity.

The role and importance of English language in Modern India cannot be denied. India has been moving towards progress in this age of science. Many of the books on higher study on science, technology, engineering, medicine, etc. are either written in or translated into English. The sound knowledge of English helps a student in his studies. Knowledge of English promotes the specialized study of literature and philosophy. The charms of Shakespeare and Milton can alone be appreciated in their original works written in English. The copiousness of English vocabulary stands unrivaled in the world.

English is capable of translating into it the exact mood and sentiment of different writers reflected in their respective languages. Thus, with the knowledge of English one can make a sojourn in the different literatures of the world. This is the age of specialization; and one is to visit foreign lands, often, for this purpose. Without the knowledge of English such opportunities can never be reaped.

India is now independent. India is famous in history for her liberal philosophy. She has given to the world what are good in her; and she has generously accepted from others what are good in them. Moreover, English is no longer the language of the English people of England alone. It has been universally recognized as the international language. Hence, India may retain English permanently without any prejudice.

समाज कल्याण अंतर्गत मध्याह्न भोजन योजना में स्वैच्छिक संगठनों की भूमिका

डॉ. आरती व्यास
सहायक प्राध्यापक – समाजशास्त्र
श्री अटल बिहारी वाजपेयी
शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
इन्दौर (म.प्र.)

सारांश : भारत में स्वैच्छिक समाज सेवा कार्यो की एक समृद्ध परम्परा रही है। भारतीय संस्कृति में धर्म, नैतिक्ता, परोपकार एवं परलोक में विश्वास करने की भावनाएँ परिव्याप्त रही हैं। जीव–जन्तु, पशु–पक्षियों, दीन–हीनों, अतिथियों तथा संकट में पड़े मनुष्य की सेवा करना पुण्य का कार्य माना जाता है। यह कार्य कुछ परोपकारी एवं कर्मठ व्यक्ति मिलकर एक संस्था के रूप में जरूरतमंद व्यक्तियों की सहायता करते आये हैं। राज्य या शासन के आदेशों या इच्छा के बिना जब कोई संगठन तैयार किया जाता है तो वह NGO's या गैर सरकारी संगठन कहलाते हैं। इन स्वैच्छिक संगठन के माध्यम से अपाहिजों, असाध्य रोगों से पीड़ित मरीजों, विधवाओं, अनाथ बच्चों की सेवा की जाती है। बाढ़, भूकम्प, तूफान, महामारी, अग्निकाण्ड, युद्ध तथा अकाल से त्रस्त होती मानवता को जन सहयोग की भावना व गैर सरकारी संगठनों की सहायता से कल्याणकारी कार्य किया जाता है।

भारत के संविधान अनुच्छेद 19 (1)(c) के अंतर्गत यह अधिकार नागरिकों को दिया गया है। समुदाय, संगठन या संघ बनाकर हम उन उद्देश्यों को प्राप्त कर सकते हैं। जिनकी प्राप्ति संगठित प्रयासों से ही संभव है। स्वैच्छिक संगठनों का मुख्य उद्देश्य जरूरतमंद लोगों की आवश्यक्ताओं का सर्वेक्षण कर सहायता करना होता है। आधुनिक स्वैच्छिक समाजसेवी संगठनो का जन्म ब्रिटिश शासन के दौरान शुरू हुआ।

भारत के स्वैच्छिक संगटन समाज कल्याण के लिए सरकारी नीतियों एवं कार्यक्रमों का सफल क्रियान्वयन, सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक नीति निर्माण, सामुदायिक सहभागिता, जनजागृति तथा जनमत निर्माण में अपनी भूमिका का निर्वहन करते हैं। गांधी युग में स्थापित हुए अधिकांश संगठन समाज कल्याण, समाज सुधार के लिए पल्लवित हो सकें जिससे सहायता, सुरक्षा तथा स्वययता को प्रोत्साहित करें।

भारत में स्वैच्छिक सेवा एवं परोपकार की पुरातन परम्परा है। विकास के नये परिपेक्ष्य में यह स्पष्ट रूप से महसूस किया जाने लगा है कि देश के आर्थिक और सामाजिक विकास का दायरा व्यापक होने से सरकारी प्रयास पर्याप्त नहीं हो सकते। आज ग्रामीण समाज में आर्थिक–सामाजिक विकास की प्रक्रिया को अधिक गतिशील बनाने के लिए सरकार की सहयोगी के रूप स्वैच्छिक संस्थाऐं योजनाबद्ध विकास में परिवर्तन की महत्वपूर्ण कड़ी है।

मध्याह्न भोजन योजना

अधिक छात्रों के नामांकन और अधिक छात्रों की नियमित उपस्थिति के सबंध में स्कूल भागीदारी पर मध्याह्न भोजन का महत्वपूर्ण प्रभाव रखता है। अधिकतर बच्चे खाली पेट स्कूल पहुँचते हैं। जो बच्चे स्कूल आने से पहले भोजन करते हैं उन्हें भी दोपहर तक भूख लग आती है और वे अपना ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाते हैं। मध्याह्न भोजन बच्चों के लिए ''पूरक पोषण'' के स्त्रोत और उनके स्वस्थ विकास के रूप में भी कार्य कर सकता है। यह समतावादी मूल्यों के प्रसार में भी सहायता कर सकता है क्योंकि कक्षा में विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि वाले बच्चे साथ में बैठते हैं और साथ–साथ खाना खाते हैं। विशेष रूप से मध्याह्न भोजन स्कूल में बच्चों के मध्य जाति व वर्ग के अवरोध को मिटाने में सहायता कर सकता है। स्कूल की भागीदारी में लैंगिक अंतराल को भी यह कार्यक्रम कम का सकता है क्योंकि यह बालिकाओं को स्कूल जाने से रोकने वाले अवरोधों को समाप्त करने में भी सहायता करता है। मध्याह्न भोजन स्कीम छात्रों के ज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक विकास में मदद करती है। सुनियोजित मध्याह्न भोजन को बच्चों में विभिन्न अच्छी आदतें डालने के अवसर के रूप में उपयोग में लाया जा सकता है। यह स्कीम महिलाओं को रोजगार के उपयोगी स्त्रोत भी प्रदान करती है।

मध्याह्न भोजन स्कीम देश के 2408 ब्लॉकों में एक केन्द्रीय प्रायोजित स्कीम के रूप में 15 अगस्त, 1995 को आरंभ की गई थी। वर्ष 1997–98 तक यह कार्यक्रम देश के सभी ब्लॉकों में आरंभ कर दिया गया। वर्ष 2003 में इसका विस्तार शिक्षा गारंटी केन्द्रो और वैकल्पिक व नवाचारी शिक्षा केन्द्रों में पढ़ने वाले बच्चों तक कर दिया गया। अक्टूबर, 2007 से इसका देश के शैक्षणिक रूप से पिछड़े 3479 ब्लॉकों में कक्षा VI से VIII में पढ़ने वाले बच्चों तक विस्तार कर दिया गया है। वर्ष 2008–09 से यह कार्यक्रम देश के सभी क्षेत्रों में उच्च प्राथमिक स्तर पर पढ़ने वाले सभी बच्चों के लिए कर दिया गया है। राष्ट्रीय बाल

श्रम परियोजना विद्यालयो को भी प्रारंभिक स्तर पर मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत 01.04.2010 से शामिल किया क्या है।

कार्यक्रम के उद्देश्य

इस स्कीम के लक्ष्य भारत में अधिकांश बच्चों की दो मुख्य समस्याओं अर्थात भूख और शिक्षा का इस प्रकार समाधान करना है :–

1. सरकारी स्थानीय निकाय और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूल और ईजीएस व एआईई केन्द्रों तथा सर्व शिक्षा अभियान के तहत सहायता प्राप्त मदरसों एवं मकतबों में कक्षा I से VIII के बच्चों के पोषण स्तर में सुधार करना।
2. लाभवंचित वर्गों के गरीब बच्चों को नियमित रूप से स्कूल आने और कक्षा के कार्यकलापों पर ध्यान केन्द्रित करने में सहायता करना, और
3. ग्रीष्मावकाश के दौरान अकाल–पीड़ित क्षेत्रों में प्रारम्भिक स्तर के बच्चों को पोषण सम्बन्धी सहायता प्रदान करना।

शोध के उद्देश्य

1. समाज कल्याण अंतर्गत मध्याह्न भोजन योजना की वर्तमान में सार्थकता का अध्ययन करना।
2. समाज कल्याण अंतर्गत मध्याह्न भोजन योजना में कार्यरत गैर सरकारी संगठनों द्वारा प्रदत्त सुविधाओं को अध्ययन करना।

अध्ययन का समग्र : शोध कार्य हेतु अध्ययन का समग्र इन्दौर जिले की मानपुर तहसील में निवासरत समस्त हितग्राही हैं।

अध्ययन की इकाई : शोध कार्य हेतु अध्ययन की इकाई के रुप में इन्दौर जिले की मानपुर तहसील में निवासरत एक हितग्राही है।

निदर्शन पद्धति : इन्दौर जिले की मानपुर तहसील के कुल शासकीय विद्यालयों में से 5 शासकीय विद्यालयो का चयन दैव निर्दशन की लॉटरी विधि द्वारा किया गया है। प्रत्येक शासकीय विद्यालयों से 8–8 हितग्राहियों तथा 2–2 मध्याह्न भोजन प्रदाता का चयन कर कुल 50 छात्र–छात्राओं तथा मध्याह्न भोजन प्रदाताओं का चयन किया गया है।

तथ्यों संकलन के स्त्रोत : शोधकर्ता द्वारा तथ्यों के संकलन हेतु प्राथमिक व द्वितीयक स्त्रोत का चयन किया गया है।

प्राथमिक स्त्रोत : शोधकर्ता ने प्राथमिक सूचना अवलोकन, साक्षात्कार अनुसूची व साक्षात्कार प्रविधियों का प्रयोग करएकत्र की है।

द्वितीयक स्त्रोत : द्वितीयक स्त्रोत अथवा सामग्री वह सूचना है जो पहले से ही उसी प्रकार के अनुसंधान अथवा किसी सामान्य उद्देश्य के लिए सरकारी या अर्द्धसरकारी संस्था, व्यापारिक एवं निजि संस्थाओं आदि द्वारा एकत्र की जाती है। शोधकर्ता ने अध्ययन के लिए पुराने रिपोर्ट, लेख, पुस्तकें, जनरल, अखबार तथा दस्तावेज आदि द्वितीयक स्त्रोत का प्रयोग किया है।

स्वैच्छिक संगठनों की भूमिका

- स्वैच्छिक संगठन नियोजित विकास में नवाचार लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं तथा ग्रामीण जनशक्ति का सकारात्मक उपयोग का सकते हैं।
- स्वैच्छिक संगठन कम लागत पर जनता को सेवायें उपलब्ध करवा सकते हैं।
- स्वैच्छिक संगठन जनता और सरकार के बीच सेतू का काम कर नौकरशाही की जटिलता तथा भ्रष्टाचार को कम कर सकते हैं।

निष्कर्ष

- मध्याह्न भोजन योजना के कारण छात्र–छात्राओं की उपस्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव के संदर्भ में 88 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार उपस्थिति में वृद्धि हुई है, जबकि 6 प्रतिशत के अनुसार उपस्थिति में कमी हुई तथा 06 प्रतिशत के अनुसार कोई विशेष प्रभाव नहीं हुआ।
- मध्याह्न भोजन योजना का शिक्षा के स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव के संदर्भ में 51 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सकारात्मक प्रभाव जबकि 26 प्रतिशत के अनुसार नकारात्मक प्रभाव तथा 23 प्रतिशत के अनुसार कोई विशेष प्रभाव नहीं है।
- मध्याह्न भोजन की गुणवत्ता के संदर्भ में सर्वाधिक 56 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार औसत भोजन प्राप्त होता है जबकि 28 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार निम्न स्तर का तथा 16 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार भोजन की गुणवत्ता अच्छी है।
- मध्याह्न भोजन प्रदाता स्वंयसेवी संगठनों के द्वारा मध्याह्न भोजन प्रदान करने की नियमितता हेतु 69 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार मध्याह्न भोजन नियमित रूप से

प्रदान किया जाता है जबकि 21 प्रतिशत के अनुसार मध्याह्न भोजन प्रदान करने में अनियमितता होती है तथा 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार कभी–कभी अनियमितता होती है।

सुझाव

- मध्याह्न भोजन योजना अंतर्गत भोजन की गुणवत्ता में सुधार किया जाना चाहिए।
- मध्याह्न भोजन योजना के सफल क्रियान्वयन हेतु उपर्युक्त निरीक्षण प्रणाली की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- भोज्य सामग्री निर्माण हेतु गुणवत्तापूर्ण उत्पाद/सामग्री का चयन किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. http://hi.vikaspedia.in/education/policies-and-schemes/
2. शर्मा ओमप्रकाश – ग्रामीण समाज में नियोजित सामाजिक परिवर्तन, रावत पब्लिकेशन, जयपुर एवं नई दिल्ली, 2006
3. अवस्थी, डॉ. ए.पी. तथा अग्रवाल लक्ष्मीनारायण – विकास प्रशासन, आगरा, नवम् संस्करण, 2012–13
4. सचदेव, डॉ. डी. आर. – भारत में समाज कल्याण प्रशासन, किताब महल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2011
5. कुलश्रेष्ठ नीतिश – पंचायतीराज एवं ग्रामीण विकास योजनाएँ, रितु पब्लिकेशन, जयपुर, प्रथम संस्करण, 2012
6. कटारिया डॉ. सुदेन्द्र – समाजिक प्रशासन (कल्याण प्रशासन), आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर, संस्करण, 2010
7. पाण्डेय, तेजस्कर – ओजस्कर, समाजकार्य, भारत बुक सेन्टर, लखनऊ संस्करण, 2009
8. गुप्ता एवं शर्मा – समाजशास्त्र, साहित्य पब्लिकेशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2009

वेशभूषा और महिला सशक्तिकरण : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. भगवत सिंह राय
प्राध्यापक (समाजशास्त्र)
श्री अटल बिहारी वाजपेयी
शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
इन्दौर (म.प्र.)

कु. सरिता बडोले
पीएच.डी शोधार्थी

प्रस्तावनाः– भारतीय समाज शुरू से ही पुरूष प्रधान रहा है। यहाँ महिलाओं को हमेशा से दूसरे दर्जे का माना जाता है। पहले महिलाओं को अपने मन से कुछ करने की सख्त मनाही थी। परिवार और समाज के लिए वे आश्रित से ज्यादा कुछ नहीं समझी जाती थी। ऐसा माना जाता था कि उसे हर कदम पर पुरूष के सहारे की जरूरत पड़ेगी ही। लेकिन अब महिलाएँ केवल घर गृहस्थी संभालने तक ही सीमित नहीं हैं। वे अपनी उपस्थिति हर क्षेत्र में दर्ज करा रही हैं। बिजनेस हो या परिवार महिलाओं ने साबित कर दिया है कि वे हर काम करके दिखा सकती हैं जो पुरूष समझते हैं कि वहाँ केवल उनका ही वर्चस्व है, अधिकार है। जैसे ही उन्हें शिक्षा मिली, उनकी समझ में वृद्धि हुई। खुद को आत्मनिर्भर बनाने की सोच और इच्छा उत्पन्न हुई। शिक्षा मिल जाने से महिलाओं ने खुद पर विश्वास करना सीखा और घर के बाहर की दुनिया को जीत लेने का सपना बुन लिया और किसी हद तक पूरा भी कर लिया।

दुर्भाग्य की बात है कि नारी सशक्तिकरण की बातें और योजनाएँ केवल शहरों तक ही सिमट कर रह गई हैं। एक ओर बड़े शहरों और मेट्रो सिटी में रहने वाली शिक्षित, आर्थिक रूप से स्वतंत्र, नई सोच वाली, ऊँचे पदों पर काम करने वाली महिलाएँ हैं जो पुरूषों के अत्याचारों को किसी भी रूप में सहन नहीं करना चाहतीं। वही दूसरी तरफ गाँवों में रहने वाली महिलाएँ हैं जो न तो अपने अधिकारों को जानती हैं, और न ही उन्हें अपनाती हैं। वे अत्याचारों और सामाजिक बंधनों की इतनी आदी हो चुकी हैं कि अब उन्हें वहाँ से निकलने में डर लगता है। वे उसी को अपनी नियति समझकर बैठ गई हैं।

सशक्तिकरण का अभिप्राय सत्ता प्रतिष्ठानों में स्त्रियों की साझेदारी से है। सशक्तिकरण का पहला महत्वपूर्ण आयाम – समाज में सम्मानजनक स्थान और आत्मविश्वास और स्वाभिमान पर ही आधारित है, समाज में सम्मानजनक स्थान है। महिलाओं को जागरूक तथा साहसी बनाने में दो तत्व सबसे अधिक सार्थक भूमिका निभा सकते हैं। ये हैं शिक्षा और आर्थिक स्वावलंबन, ये दोनों तत्व न केवल महिलाओं में स्वाभिमान और आत्मविश्वास पैदा करते हैं बल्कि उन्हें हर दृष्टि में सशक्त और अधिकार सम्मान दिलाने में सहायक हैं।[1]

महिला सशक्तिकरण अर्थात् महिलाओं को शक्तिशाली बनाना, महिलाओं को वे सारे उपकरण उपलब्ध करवाना जिनकी सहायता से आधी दुनिया उन्नति कर सकती है, आगे बढ़ सकती है। क्यों वे नहीं बढ़ पा रही है, क्यों वे समाज और राजनीति में अपना स्वतंत्र अस्तित्व नहीं बना पा रही हैं। स्पष्ट है कि महिला सशक्तिकरण की दिशा में सबसे बड़ी बाधा, महिलाओं में शिक्षा और जागरूकता की कमी ही है।[2]

दुर्भाग्य की बात है कि नारी सशक्तिकरण की बातें और योजनाएँ केवल शहरों तक ही सिमट कर रह गई हैं। एक ओर बड़े शहरों और मेट्रो सिटी में रहने वाली शिक्षित, आर्थिक रूप से स्वतंत्र, नई सोच वाली, ऊँचे पदों पर काम करने वाली महिलाएँ हैं जो पुरूषों के अत्याचारों को किसी भी रूप में सहन नहीं करना चाहतीं। वही दूसरी तरफ गाँवों में रहने वाली महिलाएँ हैं जो न तो अपने अधिकारों को जानती हैं, और न ही उन्हें अपनाती हैं। वे अत्याचारों और सामाजिक बंधनों की इतनी आदी हो चुकी हैं कि अब उन्हें वहाँ से निकलने में डर लगता है। वे उसी को अपनी नियति समझकर बैठ गई हैं।

वैदिक काल की पूज्या नारी, मध्यकाल की भोग्या नारी और स्वतंत्र भारत की योग्य नारी पर एक नजर डालें तो महिलाओं की स्थिति में काफी परिवर्तन हो रहे हैं। परन्तु प्रश्न यह उठता है कि यदि महिलाएँ अपन परिधानों को फैशन के नाम पर बदलती हैं ता उसका सीधा असर उनके परिवार और समाज पर पड़ता है। रेडियो कार्यक्रम, टेलीविजन तथा समाचार पत्रों की रिपोर्टों को पढ़ने से नारी विषयक मुद्दों पर ज्यादा से ज्यादा ध्यान आकृष्ट किया जा रहा है। मोटरसाइकिल से लेकर साबुन तक के प्रत्येक विज्ञापन में एक आकर्षक महिला मॉडल को उस वस्तु विशेष को खरीदने के लिए आमंत्रित करते हुए दिखाया जाता है।

कई लड़कियाँ व महिलाएँ भी प्रसार माध्यमों से अत्यधिक प्रभावित हो रही है तथा उनकी वेशभूषा में भी बदलाव आया है। परन्तु महिलाओं के हालात अब भी वही है वेशभूषा मात्र बदल लेने से सोच में कोई बदलाव नहीं आया है। वेशभूषा बदल लेने से क्या होता है जैसे–जैसे वैश्वीकरण और औद्योगिकीकरण का विकास हो रहा है। महिलाओं के वेशभूषा में परिवर्तन आ रहा है। प्राचीन काल में महिलाओं के साथ यौन अपराध नहीं होते थे। परन्तु औद्योगिकीकरण के आने से महिलाओं के वेशभूषा मे परिवर्तन हुआ है, जिससे यौन–अपराध बढ़ता जा रहा है। औद्योगिकीकरण के कारण महिलाएँ आधुनिक परिधानों का उपयोग करने लगी है। क्लबों में घूमने लगी हैं। महिलाओं की सोच, उनके विचारों में परिवर्तन होने लगा है। दिनोंदिन शहरों में कुछ न कुछ घटनाएँ जरूर घटित होती हैं। अखबार की सुर्खियों में बलात्कार एवं छेड़छाड़ की खबरें अधिक देखने को मिलती हैं। ये सब वारदातें सिर्फ महिलाओं की वेशभूषा से ही नहीं बल्कि पुरूषों के घिनौने मानसिकता के कारण होती है।

यदि महिला सशक्तिकरण की बात करें तो महिलाएँ चाहें वे शहर की महिलाएँ हो या फिर गाँव की। आज अपने अधिकारों के प्रति सजग हो गई हैं। एक तरफ महिलाओं के संस्कार की बात करें तो वे भारतीय वेशभूषा और पारम्परिक परिधानों से सुसज्जित नजर आती है तो क्या वे महिलाएँ सशक्त नहीं है? बड़े शहरों और पश्चिमी देशों की बात करें तो वहाँ की महिलाएँ अपने परिधानों में आधुनिक कपड़ों और जीन्स, टी–शर्ट का प्रयोग करती हैं। ऐसा नहीं है कि जो महिलाएँ आधुनिक कपड़े पहनती हैं, वे अधिक सशक्त हैं। महिलाएँ सशक्त होती हैं तो अपने हौंसले, अपने अधिकारों और अपने मन में ऊँचे विचारों से परन्तु कभी–कभी महिलाएँ अपनी स्वतंत्रता का दुरूपयोग करती हैं और अश्लील परिधान पहनती हैं और इसी कारण यौन अपराध और यौन शोषण को बढ़ावा मिलता है। परन्तु व्यक्ति हमेशा वेशभूषा से नहीं अपने विचारो और अपने अच्छे कामों से पहचाना जाता है। उसके लिए जरूरी है तो सिर्फ और सिर्फ लोगों को अपनी मानसिकता बदलने की। क्योंकि बीते वर्ष भारतीय टेनिस खिलाड़ी सानिया मिर्जा पर भी उनके शॉट स्कर्ट को लेकर काफी बहस छिड़ी और मीडिया में भी इस खबर को काफी उछाला गया। परन्तु क्या हुआ समय के साथ–साथ लोग इस बात को भूलते चले गये और सानिया मिर्जा अपने लक्ष्य और अपने सपनों को आँखों में सजोकर आगे बढ़ती चली गई और आज उन्हें राजीव गाँधी खेल रत्न अवार्ड से सम्मानित किया गया। अगर महिला किसी भी तरह की

वेशभूषा पहने परन्तु अपने अधिकारों के प्रति जागरूक और आवाज उठाये तो वह भी बुलंदियों की चरम सीमा पर वर्चस्व स्थापित करने में किसी भी हद तक पीछे नहीं रहेगी।

उद्देश्य :–

- महिला सशक्तिकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक दशा में सुधार लाकर उन्हें इतनी शक्ति तथा सामर्थ्य प्रदान करना है कि वह सामाजिक, आर्थिक परिवर्तन एवं विकास का साधन बन सके और महिलाओं द्वारा स्वयं के शरीर पर, अपने पोषाक, अपने रहन–सहन और सामुदायिक संसाधनों पर नियंत्रण कर पाना भी उनका सबलीकरण है।

निष्कर्ष :–

महिला सशक्तिकरण के अन्तर्गत सामाजिक स्तर पर महिलाओं में आत्मसम्मान, स्वाभिमान, आत्मविश्वास जागृत करना तथा आर्थिक स्तर पर महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना शामिल किया गया है। इसके अलावा महिलाओं की नीति निर्माण में हिस्सेदारी बढ़ाने पर जोर दिया गया जिससे महिलाएँ सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक रूप से सामर्थ्य प्राप्त कर सके। महिला सशक्तिकरण के लिए केन्द्र सरकार, राज्य सरकार एवं स्वयं सेवी संगठनों द्वारा अनेक प्रयास समय–समय पर किए गये हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

01. सुभाष सेतिया : महिला सशक्तिकरण : ग्रामीण संदर्भ, पृ–295
02. सिंह मिनाक्षी निशांत : 2006, महिला सशक्तिकरण का सच, ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली
03. सीमोन द बोउवार, 2008, स्त्री उपेक्षिता, अनु. प्रभा खेतान, हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली
04. के.एम. कपाड़िया, 2005, मैरिज एंड फेमिली इन इंडिया, आक्स्फोर्ड, कलकत्ता
05. सत्ता सिंहल, 1991, भारतीय संस्कृति में नारी, पश्मिल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
06. जैन प्रकाशचन्द्र, 2007, भारतीय सामाजिक व्यवस्था, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर (राज)
07. पाण्डेय तेजस्कर, 2013, भारत में सामाजिक समस्याएँ, मैकग्रा हिल्स एजुकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली (चतुर्थ संस्करण)

Importance of Human Rights

Dr. R.B. Gupta
Professor of Commerce
Shree Atal Bihari Vajpai
Govt. Arts & Commerce College
Indore (MP)

Dr. Niolfar Qureshi
Guest Faculty
Department of Commerce

Introduction: "Human Rights" means the rights relating to life, liberty, equality and dignity of the individual guaranteed by the constitution or embodied in the International covenants and enforceable by courts in India. "Commission" means the National Human Rights Commission constituted under section of all human beings are born free and equal in dignity and rights known as Human rights, as commonly understood, are the rights that every human being is entitled to enjoy freely irrespective of his religion, race, caste, sex and nationality, etc. In Declaration of Independence acknowledged the fundamental human rights. Human right means different thing to different people. Human Rights are not static. New rights are recognized and enforced from time to time. Only persons fully conversant with the latest development about the expanding horizons of Human Rights can promote their awareness better than others.

The **National Human Rights Commission** (NHRC) of India is an autonomous public body constituted on 12 October 1993 under the Protection of Human Rights Ordinance of 28 September 1993. It was given a statutory basis by the Protection of Human Rights Act, 1993 (TPHRA). The national human rights institution responsible for the protection and promotion of human rights, defined by the Act as "rights relating to life, liberty, equality and dignity of the individual guaranteed by the Constitution or embodied in the International Covenants".

Composition:

The NHRC (National Human Rights Commission) consists of:

A Chairperson retired Chief Justice of India

One Member who is, or has been, a Judge of the supreme court of India.

One Member who is, or has been, the Chief Justice of a High Court

Two Members to be appointed from among persons having knowledge of, or practical experience in, matters relating to human rights

In addition, the Chairpersons of four National Commissions of

(1.Minorities 2.SC 3.ST 4.Women) serve as ex officers members.

Appointment

Sections 3 and 4 of TPHRA lay down the rules for appointment to the NHRC. The Chairperson and members of the NHRC are appointed by the President of India on the recommendation of a committee consisting of:

The Prime Minister (chairperson)

The Home Minister

The Leader of the Opposition in the Lok sabha (House of the People)

The Leader of the Opposition in the Rajya Sabha

(Council of States)

The Speaker of the Lok Sabha (House of the People)

The Deputy Chairman of the Rajya Sabha (Council of states)

Functions

Proactively or reactively inquire into violations of human rights or negligence in the prevention of such violation by a public servant by leave of the court, to intervene in court proceeding relating to human rights to visit any jail or other institution under the control of the State Government, where persons are detained or lodged for purposes of treatment, reformation or protection, for the study of the living conditions of the inmates and make recommendations review the safeguards provided by or under the Constitution or any law for the time being in force for the protection of human rights and recommend measures for their effective implementation review the factors, including acts of terrorism that inhibit the enjoyment of human rights and recommend appropriate remedial measures to study treaties and other international instruments on human rights and make recommendations for their effective implementation undertake and promote research in the field of human rights,

International status

The NHRC has been accredited with "A status" by the International Coordinating Committee of National Human Rights Institutions (the ICC), indicating that it is in conformity with the Paris Principles – a broad set of principles agreed upon by a conference of experts on the promotion and protection of human rights, in Paris in October 1991, and subsequently endorsed by the UN General Assembly. The Commission is thus entitled to participate in the

ICC and in its regional sub-group, the Asia Pacific Forum, and may take part in certain sessions of the UN human rights committees.

Conclusion

Many of the basic ideas that animated the human rights movement developed in the aftermath of the Second World War and the atrocities of The Holocaust culminating in the adoption of the *Universal Declaration of Human Rights* in Paris by the United Nations General Assembly in 1948. Ancient peoples did not have the same modern-day conception of universal human rights. The true forerunner of human rights discourse was the concept of natural rights which appeared as part of the medieval natural law tradition that became prominent during the Enlightenment with such philosophers as John Locke, Francis Hutcheson, and Jean-Jacques Burlamaqui, and which featured prominently in the political discourse of the American Revolution and the French Revolution. From this foundation, the modern human rights arguments emerged over the latter half of the twentieth century, possibly as a reaction to slavery, torture, genocide, and war crimes, as a realization of inherent human vulnerability and as being a precondition for the possibility of a just society.

Human rights are moral principles or norms, that describe certain standards of human behaviour, and are regularly protected as legal rights in municipal and international law. They are commonly understood as inalienable fundamental rights "to which a person is inherently entitled simply because she or he is a human being," and which are "inherent in all human beings" regardless of their nation, location, language, religion, ethnic origin or any other status. They are applicable everywhere and at every time in the sense of being universal, and they are egalitarian in the sense of being the same for everyone. They require empathy and the rule of law and impose an obligation on persons to respect the human rights of others. They should not be taken away except as a result of due process based on specific circumstances; for example, human rights may include freedom from unlawful imprisonment, torture, and execution.

The doctrine of human rights has been highly influential within international law, global and regional institutions. Actions by states and non-governmental organizations form a basis of public policy worldwide. The idea of human rights suggests that "if the public discourse of peacetime global society can be said to have a common moral language, it is that of human rights." The strong claims made by the doctrine of human rights continue to provoke considerable scepticism and debates about the content, nature and justifications of human rights to this day. The precise meaning of the term *right* is controversial and is the subject of continued philosophical debate; while there is consensus that human rights encompasses a

wide variety of rights such as the right to a fair trial, protection against enslavement, prohibition of genocide, free speech, or a right to education, there is disagreement about which of these particular rights should be included within the general framework of human rights; some thinkers suggest that human rights should be a minimum requirement to avoid the worst-case abuses, while others see it as a higher standard.

Bibliography

01. James Nickel, with assistance from Thomas Pogge, M.B.E. Smith, and Leif Werner, Dec 13, 2013, Stanford Encyclopaedia of Philosophy, Human Rights, Retrieved Aug. 14, 2014
02. *Hannum, Hurst (2006). "The concept of human rights". International Human Rights: Problems of Law, Policy, and Practice. Aspen Publishers. pp. 31–33. ISBN 0735555575.*
03. *Stefan-Ludwig Hoffmann (13 December 2010). Human Rights in the Twentieth Century. Cambridge University Press. pp. 2–. ISBN 978-1-139-49410-6.*
04. *Blattberg, C (2010). "The Ironic Tragedy of Human Rights". Patriotic Elaborations: Essays in Practical Philosophy. McGill-Queen's University Press. pp. 43–59. ISBN 0-7735-3538-1.*
05. Internet web sites :
    - Google search engine
    - AltaVista .com
    - Yahoo. Com
    - Gmail.com
    - Redif mail .com
06. News papers :
    - Free press
    - Dainik bhaskar
    - Nai duniyaa
    - News today

जनसंख्या एवं आर्थिक विकास

अल्पना सिंह
शोधार्थी – अर्थशास्त्र
श्री अटल बिहारी वाजपेयी
शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
इन्दौर (म.प्र.)

शोध सारांश –

जनसंख्या की दृष्टि से संसार में भारत का स्थान चीन के बाद दूसरा है। भारत का भूक्षेत्र संसार के भूक्षेत्र का लगभग 2.4 प्रतिशत है लेकिन यहाँ रहने वाली जनसंख्या समस्त विश्व की जनसंख्या की 17.5 प्रतिशत है। 2011 की जनगणनाके अनुसार भारते की जनसंख्या 121.02 करोड़ है, जो कि अमेरिका, इण्डोनेशिया, ब्राजील, पाकिस्तान, बांग्लादेश तथा जापान की कुल मिलाकर जनसंख्या का अत्यधिक दबाव है, जिससे कि वर्तमान में भारत की राष्ट्रीयता को निम्न लिंगानुपात प्रभावित करती है।

किसी भी देश का आर्थिक विकास मुख्य रूप से दो बातों पर निर्भर करता है – पहला तो प्राकृतिक साधन और दूसरा मानवीय साधन। इस तरह जनसंख्या को आर्थिक विकास का साध्य एवं साधन दोनों मापा जा सकता है। अतः किसी भी देश का आर्थिक विकास सम्पर्क उस देश की जनसंख्या पर आधारित है।

साथ ही विभिन्न अध्ययनों से यह पता चला है कि सन् 1925 तक भारत चीन को भी पीछे कर देगा और विश्व का सबसे ज्यादा जनसंख्या वाला देश बन जायेगा। इस तथ्य के बावजूद कि यहाँ जनसंख्या नीतियाँ, परिवार नियोजन और कल्याण कार्यक्रम सरकार ने शुरू किये हैं और प्रजनन दर में लगातार कमी आई है पर आबादी का वास्तविक स्थितिकरण केवल 2050 तक ही हो पायेगा।

आर्थिक विकास एक सतत प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया के अंतर्गत पूर्ण संरचना में होने वाले क्रमिक परिवर्तनों का समावेश किया जाता है। विकास के सभी साधनों को दो भागों में बाँटा जा सकता है। पहला– मांग, दूसरा –पूर्ति। आर्थिक विकास के परिणामस्वरूप राष्ट्रीय आय में केवल एक बार ही वृद्धि नहीं होती है बल्कि दीर्घकाल तक लगातार वृद्धि होती रहती है।

आर्थिक विकास के परिणामस्वरूप आय वृद्धि होती है। आर्थिक विकास के अंतर्गत यह आवश्यक है कि वास्तविक आय में वृद्धि हो यदि केवल बौद्धिक आय में ही वृद्धि होती है तब उसे आर्थिक विकास नहीं कहा जा सकता है। मानव संसाधन आर्थिक विकास एक महत्वपूर्ण स्त्रोत है परंतु कुछ एक परिस्थितियों में यह आर्थिक विकास में बाधक तत्व भी निरूपित हो सकता है। बढ़ता हुआ मानवीय संसाधन जहाँ देश के कुल उत्पादन को बढ़ाता है। वहीं ऐसे लोगों की संख्या को भी बढ़ाता है जिनमें कि उसे विपरित किया जाता है।

Special Words –जनसंख्या वृद्धि दर, आर्थिक विकास, मानवीय संसाधन, पूँजी।

भारत की सबसे बड़ी कठिन समस्या उसकी तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या है। जनसंख्या की दृष्टि से विश्व में भारत का चीन के बाद दूसरा नंबर आता है विश्व के प्रत्येक सात व्यक्तियों में से एक व्यक्ति भारतवासी है। यहाँ पर प्रतिवर्ष एक आस्ट्रेलिया उत्पन्न हो जाता है, क्योंकि वहाँ की कुल जनसंख्या भारत की वार्षिक जनसंख्या वृद्धि के बराबर है। सन् 1901 में भारत की जनसंख्या 23.8 करोड़ थी जो सन् 2001 में बड़कर 102.7 करोड़ हो गई। इस प्रकार भारत में जनसंख्या की वृद्धि अत्यधिक तेजी से हो रही है। देश के लिये जनसंख्या की वृद्धि वरदान की अपेक्षा अभिशाप बन गई है। विकास योजनाओं की उपलब्धियों पर इसका पर्याप्त प्रभाव पड़ा है। इस वृद्धि के कारण देश में अनेक सामाजिक एवं आर्थिक समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं, जिनका समाधान करना कठिन हो गया है। भारत में जनसंख्या वृद्धि के प्रमुख कारण निम्नानुसार हैं।

- भारत की जलवायु गर्म है इस कारण से लड़के एवं लड़कियों में परिपक्वता की अवस्था शीघ्र आ जाती है। इसलिए संतान उत्पत्ती की अवधि अधिक होने से जन्म–दर ऊँची रहती है।
- गरीबी एवं निम्नस्तर के कारण व्यक्ति यह सोचता है कि उसके जितने अधिक बच्चे होंगे उसके परिवार की आय उतनी ही अधिक बढ़ेगी। मजदूरों एवं निर्धन परिवारों में इसी कारण से अधिक बच्चों की चाह रहती है।
- भारत में हर लड़के–लड़की की शादी सामाजिक परम्परा के कारण अनिवार्य मानी जाती है। शादी के बाद प्रत्येक दम्पत्ति को कम से कम एक पुत्र होना भी आवश्यक माना जाता है। धार्मिक अंध–विश्वास के कारण यह माना जाता है कि

पिता के मोक्ष के लिए पुत्र का होना आवश्यक है। इस प्रकार शादी एवं संतान की अनिवार्यता के कारण जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है।

- भारत में जन्म–दर काफी ऊँची है इस कारण जनसंख्या में निरंतर वृद्धि होती जा रही है। ऊँची जन्म–दर के लिए अनेक कारण उत्तरदायी हैं, जैसे – बाल–विवाह की अनिवार्यता, अंधविश्वास, मनोरंजन का अभाव निम्न जीवन–स्तर, धार्मिक कारण, जलवायु तथा ग्रामीण क्षेत्रों में निरोधक सुविधाओं की कमी है।
- जन्म–दर, मृत्यु–दर से आशय प्रति हजार जनसंख्या के पीछे जन्म एवं मृत्यु की संख्या से है। पिछले वर्षों में निरंतर मृत्यु दर में कमी आती जा रही है। इस कमी के अनेक कारण हैं, जैसे – चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार, अकालों एवं महामारियों पर नियंत्रण, शिक्षा के प्रसार से अंधविश्वास में कमी, शिक्षा का विस्तार तथा विवाह की आयु में वृद्धि आदि है। इन कारणों से मृत्यु–दर में कमी आ गई, फलतः जनसंख्या में वृद्धि होती रही।
- देश की आयु संरचना वृद्धि को प्रोत्साहित करती है। देश में युवा जनसंख्या का 54 प्रतिशत हैं। इस अधिकता के कारण एवं विवाह तथा संतान उत्पत्ति की अनिवार्यता के कारण जनसंख्या में वृद्धि होना स्वभावीक है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि भारत में जनसंख्या वृद्धि के अनेक कारण हैं जिसकी वजह से देश का आर्थिक विकास काफी प्रभावित होता है।

बढ़ती हुई जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न समस्याएँ –

भारत की बढ़ती हुई जनसंख्या से अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं जो भारत के आर्थिक विकास में बाधक सिद्ध हो रही है। प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित हैं –

01. **खाद्यान्नों की कमी –** जनसंख्या की वृद्धि के कारण खाद्यान्न के उत्पादन में वृद्धि के बाद भी यहाँ खाद्यान्न का अभाव रहता है।
02. **आय, बचत एवं विनियोग में कमी –** जनसंख्या वृद्धि के कारण प्रति व्यक्ति वास्तविक आय में कमी हो जाती है, क्योंकि उसी अनुपात में वास्तविक आय में वृद्धि नहीं हो पाती। कम आय के कारण बचत एवं विनियोग की मात्रा प्रभावित होती है जिससे देश का आर्थिक विकास अवरूद्ध हो जाता है।

03. **आर्थिक विकास में बाघा –** बढ़ती हुई जनसंख्या देश के आर्थिक विकास की गति धीमी कर देती है। कृषि एवं उद्योगो का विकास नहीं हो पाता क्योंकि कम आय के कारण बचत नहीं हो पाती है और बचत के अभाव में पूँजी निर्माण नहीं हो पाता है और पूँजीनिर्माण के अभाव में कृषि एवं उद्योग का विकास नहीं हो पाता है। इस प्रकार देश का आर्थिक विकास नहीं हो पाता है।

04. **बेरोजगारी में वृद्धि –** जनसंख्या वृद्धि के कारण देश में कार्यशील जनसंख्या की वृद्धि हो जाती है जबकि रोजगार के साधनों में उस अनुपात में वृद्धि नहीं होती हैं। अतः देश में बेरोजगारों की संख्या बढ़ने लगती है।

05. **सार्वजनिक सेवाओं के भार में वृद्धि –** जनसंख्या वृद्धि के कारण सरकार को बड़ी मात्रा में सार्वजनिक सेवाओं पर धन व्यय करना पड़ता है, जैसै – शिक्षा, चिकित्सा, परिवहन, पानी, विद्युत आदि। इन सेवाओं पर अधिक व्यय होने के कारण आर्थिक विकास के लिये धन नहीं बचता है, जिससे देश के विकास में बाधा पहुँचती है।

06. **आश्रितों से भारत में वृद्धि –** जनसंख्या की वृद्धि के कारण आश्रितों की संख्या में भी वृद्धि होती है, किन्तु कम आय के कारण उनका भरण–पोषण नहीं हो पाता है जिससे उनके जीवन स्तर में कमी आ जाती है तथा कार्य–कुशलता घटने लगती है। कार्य कुशलता में कमी आर्थिक विकास में बाधा उत्पन्न करती है। उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि बढ़ती हुई जनसंख्या देश के आर्थिक विकास के मार्ग को अवरूद्ध करती है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

भारत की बढ़ती हुई जनसंख्या की समस्या देश के लिए अभिशाप बनी हुई है, अतः इसके समाधान के लिये त्वरित कदम उठाये जाने चाहिये। भारत सरकार ने इस समस्या के हल के लिए अनेक प्रयत्न किए है। फिर भी समस्या के हल के लिए निम्न सुझाव दिये जा सकते हैं –

01. **उत्पादन में वृद्धि –** बढ़ती हुई जनसंख्या की आवश्यक्ता की पूर्ति करने के लिए देश में कृषि उद्योगों के उत्पादन में वृद्धि की जानी चाहिए। यद्यपि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत सरकार ने पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से विकास कार्यक्रम जारी किये गये हैं किन्तु इनकी गति काफी धीमी है, अतः इसे तेज किया जाना चाहिये।

02. **परिवार कल्याण कार्यक्रम को प्रभावशाली बनाया जाए –** जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने के लिए परिवार कल्याण को प्रभावशाली ढंग से क्रियान्वित किया जाए। छोटे परिवारों के महत्व के विषय में लोगों को विभिन्न प्रचार माध्यमों से अवगत कराते रहना चाहिए।

03. **गर्भपात सुविधा का विस्तार –** यद्यपि सरकार ने यह 1972 से गर्भपात को वैध करार दे दिया है किन्तु गर्भपात की सुविधाओं में विस्तार नहीं हो पाया है। अतः ग्रामीण क्षेत्रों में इस सुविध का विस्तार किया जाना चाहिए, जिससे कि कोई स्त्री अपने गर्भ को गिरवा सके।

04. **विवाह योग्य आयु संबंधी कानून का कठोरता से पालन –** सन् 1978 से विवाह योग्य आयु में वृद्धि कर दी गई। विवाह योग्य आयु के लिए लड़के की आयु 21 वर्ष एवं लड़की की आयु 18 वर्ष होनी चाहिये। इस नियम का कठोरता से पालन किया जाना चाहिये। वर्तमान समय में इस नियम का पालन नहीं हो रहा है, अतः इस उम्र से कम आयु के विवाह को अवैध करार देना चाहिये तथा ऐसी शादी कराने वाले माता–पिता के विरूद्ध कड़ी कार्यवाही की जानी चाहिए।

05. **सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों वृद्धि –** लोगों में अधिक संतान उत्पन्न करने के प्रति लगाव का एक कारण यह भी है कि वृद्धावस्था में संतान उनका सहारा बन सके। इसलिए सरकार को सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों का विस्तार करना चाहिये। तथा वृद्धावस्था में पेंशन, चिकित्सा सुविधा प्रदान करनी चाहिये ताकि वृद्धावस्था में सहारे के लिये संतान की चाह उत्पन्न नही हो सके।

06. **अधिक कर –** एक सीमा से अधिक संतान पैदा करने पर उन पर भारी करारोपण किया जाना चाहिये ताकि लोग अधिक संतान पैदा न कर सके।

07. **सामुदायिक एवं परिवार कल्याण योजना में संबंध –** ग्रामीण क्षेत्रों में विकास के लिये सामुदायिक विकास योजनाओं को प्रारंभ किया गया किन्तु परिवार कल्याण कार्यक्रम का इस योजना से कोई समन्वय नहीं है। अतः सामुदायिक विकास योजना के साथ परिवार कल्याण कार्यक्रम को भी जोड़ देना चाहिए। इसके अतिरिक्त यह प्रावधान भी किया जाना चाहिये कि जो विकास खण्ड विकास परिवार कल्याण कार्यक्रम में सहयोग देंगे उन्हें आर्थिक सहायता दी जावेगी।

08. शिक्षा सुविधा का विस्तार – शिक्षा का प्रसार तेजी से किया जाना चाहिये। अशिक्षा एवं अंधविश्वास के कारण लोगों को अधिक संतान उत्पन्न करने के प्रति मोह होता है। शिक्षित व्यक्यि छोटे परिवार का महत्व समझता है, इस कारण उनके परिवारों की सदस्य संख्या सीमित होती है। अतः शिक्षा के माध्यम से छोटे परिवार के प्रति लोगों की रूचि उत्पन्न करनी चाहिए।

उपर्युक्त सुक्षावों पर यदि अमल किया जाए तो भारत की जनसंख्या की वृद्धि को नियंत्रित किया जा सकता है।

इस प्रकार आर्थिक दृष्टि से पिछड़ी हुई अर्थव्यवस्थाओं में जनसंख्या वृद्धि के पिरणामस्वरूप विनियोग–योग्य कोष घट जाते हैं। जो विनियोग बढ़ती हुई जनसंख्या के भरण–पोषण तथा वर्तमान स्तर को बनाए रखने के लिए आवश्यक होता है, उसे जनांकिकी विनियोग (Demographic Investment) कहा जाता है। जनांकिकीय विनियोग की मात्रा जनसंख्या की वृद्धि की दर के द्वारा निर्धारित होती है। यदि जनसंख्या वृद्धि की दर बहुत अधिक है, तब कुल विनियोग के एक बड़े भाग का विनियोग जनांकिकीय विनियोग में किया जायेगा तथा आर्थिक विनियोग के लिए बहुत कम धन शेष रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

01. प्रवीण विसारिया, ''डेमोग्राफिक आस्पेक्ट्स डेवलपमेंट : द इंडियन एक्सपीरिएंस'', इन उमा कपिला इंडियन इकोनॉमी सिंस इंडिपेंडेंस (नई दिल्ली, 2006), पृ. 193–4.
02. लीला विसारिया, ''मॉर्टेलिटी ट्रेंउ्स एंड द हेल्थ ट्रांजिशन'', ट्वेंटी फर्स्ट इंडिया (नई दिल्ली, 2004), पृ. 41.
03. अमर्त्य सेन व जीन ड्रेज, ''इकोनॉमिक डेवलपमेंट एंड सोशल आपरच्युनिटी'' (नई दिल्ली, 1995), पृ. 144.
04. एम.पी. सिंह, ''आर्थिक विकास एवं नियोजन''
05. अनुपम गोयल, ''यूनिफाइड अर्थशास्त्र''
06. मिश्र और पुरी, ''भारतीय अर्थव्यवस्था'', 24वां संस्करण, 2012

निवेशकों का विश्वास बढ़ाने में नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का योगदान

अखलाक मो. खान
अतिथि व्याख्याता
श्री अटल बिहारी वाजपेयी
शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
इन्दौर (म.प्र.)

प्रस्तावना :– प्रतिभूति विनिमय बाजार (स्टॉक एक्सचेंज) राष्ट्र के पूँजी संग्रह तथा पूँजी प्रवाह के लिए महत्वपूर्ण वित्तीय कार्य करते हैं तथा इनके द्वारा औद्योगिक वित्त प्राप्त करने में सुविधा होती है। वर्तमान समय में स्टॉक एक्सचेंज पूँजी बाजार में इतने महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं कि उन्हें देश की औद्योगिक प्रगति का दर्पण तथा आर्थिक समृद्धि का मापक यन्त्र माना जाने लगा है। यही नहीं अपनी गतिविधियों के द्वारा स्टॉक एक्सचेंज राष्ट्र की राजनैतिक सांस्कृतिक तथा सामाजिक दशाओं को भी प्रतिबिम्बित करते हैं।

भारत में सर्वप्रथम संगठित स्टॉक एक्सचेंज का गठन तब हुआ, जब मुम्बई के दलालों द्वारा राष्ट्रीय स्कन्ध ब्रोकर्स एसोसिएशन का गठन किया गया, जिसे हम वर्तमान में बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज के नाम से जानते हैं। सन् 1894 में अहमदाबाद स्टॉक एक्सचेंज को कपड़ा मिलों की प्रतिभूतियों का व्यापार करने की सुविधा के लिए प्रारंभ किया गया। 1908 में जूट एवं कपास तथा चाय कंपनियों की प्रतिभूतियों के व्यवसाय के लिए कलकत्ता स्टॉक एक्सचेंज प्रारंभ किया गया।

भारत में वर्तमान में 21 स्टॉक एक्सचेंज कार्यरत हैं, जिनमें से 8 स्थाई मान्यता प्राप्त है तथा 13 अस्थाई मान्यता वाले हैं।

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इण्डिया लिमिटेड

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज की स्थापना 1993 में हुई है तथा जिसे केन्द्र सरकार ने मान्यता 26 अप्रैल 1993 को प्रदान कर दी और 3 नवंबर 1994 से इसने अपना कार्य आरंभ किया। इसका मुख्यालय मुम्बई में हैं, लेकिन अहमदाबाद, बैंगलुरू, बड़ौदा, कोलकाता, चेन्नई, दिल्ली, हैदराबाद व पूना में भी इसके कार्यालय हैं। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज भारत का सबसे अधिक सक्रिय स्टॉक एक्सचेंज है। यह पूर्णतः स्वचालित, इलेक्ट्रॉनिक, कम्प्यूटराइज्ड स्क्रीन पर आधारित व्यापार तन्त्र है। अपने राष्ट्रीय स्तर के स्वरूप तथा आदेश प्राप्ति पर आधारित होने के कारण यह OTCEI को पछाड़ कर बहुत आगे निकल

गया है। भारत में इससे पूर्व स्थानीय कार्य क्षेत्र वाले स्टॉक एक्सचेंज ही पाए जाते थे, जो अपने शहर तक ही सीमित रहे।

निवेशकों का विश्वास बढ़ाने में योगदान

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ने प्रारंभिक काल से ही अपनी श्रेष्ठता को सिद्ध करते हुए स्वयं को देश का प्रमुख स्टॉक एक्सचेंज बनाए रखने में सफलता प्राप्त ही है। इसकी सफलता का संक्षिप्त विवेचन अग्रनुसार प्रस्तुत है :–

तालिका – 1

स्टॉक एक्सचेंज के अनुसार व्यापारावर्त (नकदी खण्ड)

क्र.	स्टॉक एक्सचेंज	2008–09	2009–10	2010–11	2011–12	2012–13
1	अहमदाबाद	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य
2	**बम्बई**	**1100074 (28.56)**	**1378809 (24.99)**	**1105027 (23.59)**	**667498 (19.16)**	**548774 (16.82)**
3	बैंगलोर	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य
4.	भुवनेश्वर	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य
5.	कोचीन	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य
6	कोयम्बतूर	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य
7	दिल्ली	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य
8	गुवाहाटी	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य
9	इन्टर कनेक्टेड	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य
10	जयपुर	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य
11	**कोलकाता**	**393 (0.01)**	**1612 (0.03)**	**2597 (0.05)**	**5991 (0.17)**	**4614 (0.14)**
12	लुधियाना	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य
13	मद्रास	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य
14	एम.सी. एक्स.	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य
15	मध्यप्रदेश	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य
16	**नेशनल स्टॉक एक्स.**	**2752023 (71.43)**	**4138023 (74.98)**	**3577410 (76.36)**	**2810892 (80.67)**	**2708279 (83.04)**
17	ओवर द काउन्टर	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य
18	पुणे	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य
19	उत्तरप्रदेश	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य
20	बड़ोदरा	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य
	कुल	**3852579 (100)**	**5518469 (100)**	**4685034 (100)**	**3484034 (100)**	**3261701 (100)**

स्त्रोत :– सेबी वार्षिक प्रतिवेदन (2012–13)

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट हो रहा है कि देश के कुल नकदी खण्ड व्यापारावर्त में नेशनल स्टॉक एक्सचेंज तथा बम्बई स्टॉक एक्सचेंज का योगदान पाँचों वर्ष में (99%) से भी अधिक रहा है। तथा देश के अन्य स्टॉक एक्सचेंजों में शेयर कारोबार नहीं के बराबर होता है। इसके अलावा बम्बई स्टॉक एक्सचेंज के व्यापारावर्त में लगातार पाँचों वर्ष कमी दर्ज हो रही है। इसके विपरीत नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के व्यापारावर्त में लगातार पाँचों वर्ष वृद्धि दर्ज हो रही है, जो निवेशकों के बढ़ते विश्वास की परिचायक है।

तालिका – 2

स्टॉक एक्सचेंज में पंजीकृत स्टॉक दलाल एवं उप–दलाल

क्र.	स्टॉक एक्सचेंज	स्टॉक दलाल	उप–दलाल
1	अहमदाबाद	339	77
2	**बम्बई**	**1361**	**31635**
3	बैंगलोर	261	158
4.	भुवनेश्वर	202	14
5.	कोचीन	407	41
6	कोयम्बतूर	135	20
7	दिल्ली	484	200
8	गुवाहाटी	62	04
9	इन्टर कनेक्टेड	883	00
10	जयपुर	458	30
11	**कोलकाता**	**869**	**71**
12	लुधियाना	304	21
13	मद्रास	198	103
14	एम.सी. एक्स.	458	–
15	मध्यप्रदेश	256	05
16	**नेशनल स्टॉक एक्स.**	**1416**	**37600**
17	ओवर द काउन्टर	647	14
18	पुणे	173	156
19	उत्तरप्रदेश	280	02
20	बड़ोदरा	310	27
	कुल	10128	70178

स्त्रोत :– सेबी वार्षिक प्रतिवेदन (2012–13)

उपरोक्त तालिका के अवलोकन सेयह स्पष्ट हो रहा है कि देश के सभी स्टॉक एक्सचेंजों की तुलना में सबसे अधिक स्टॉक दलाल (1416) तथा उप–दलाल (37600) नेशनल स्टॉक एक्सचेंज में कार्यरत है। तथा दूसरा स्थान बम्बई स्टॉक एक्सचेंज का है,

जिसमें (1361) स्टॉक दलाल तथा (31635) स्टॉक उप–दलाल कार्यरत हैं, यह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के देश का सबसे बड़ा एवं सशक्त पूँजी बाजार होने का प्रत्यक्ष प्रमाण भी है।

तालिका – 3

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध कंपनियाँ

क्र.	वित्तीय वर्ष	सूचीबद्ध कंपनियों की संख्या
1	2008–09	1432
2	2009–10	1470
3	2010–11	1574
4	2011–12	1646
5	2012–13	1666

स्त्रोत :– नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (www.nseindia.com)

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से यह स्पष्ट हो रहा है कि नेशनल स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध कंपनियों की संख्या में प्रति वर्ष लगातार वृद्धि दर्ज हो रही है। वर्ष 2008–09 में सूचीबद्ध कंपनियों की संख्या (1432) थी, जो वर्ष 2012–13 के अंत तक 1666 हो चुकी थी। सूचीबद्ध कंपनियों की संख्या में रही यह वृद्धि नेशनल स्टॉक एक्सचेंज की सुदृढ़ कार्यप्रणाली तथा बढ़ते हुए निवेशक विश्वास की परिचायक है।

तालिका – 4

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज में बाजार पूँजीकरण की प्रगति

क्र.	वित्तीय वर्ष	व्यापारावर्त (Turnover)
1	2008–09	2896194
2	2009–10	6009173
3	2010–11	6096518
4	2011–12	6239035
5	2012–13	6702616

स्त्रोत :– नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (www.nseindia.com)

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट हो रहा है कि नेशनल स्टॉक एक्सचेंज में बाजार पूँजीकरण (Market Capitalisation) की प्रगति निरंतर हो रही है। वर्ष 2008–09 में नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का बाजार पूँजीकरण 2856194 करोड़ रू. था, जो

वर्ष 2012–13 के अंत तक प्रतिवर्ष लगातार वृद्धि दर्ज करते हुए 6702616 करोड़ रू. हो चुका है। ये शेयर कारोबार के प्रति निवेशकों के बढ़ते हुए विश्वास का प्रमाण भी है।

निष्कर्ष :–

देश में नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के तीव्र विकास के दो प्रमुख कारण रहे हैं। प्रथम बम्बई स्टॉक एक्सचेंज सहित अन्य सभी स्टॉक एक्सचेंजों को राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करने की 1997 तक अनुमति नहीं प्रदान की गई थी, तब तक नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ने अपना जाल पूरे भारत में शहर तथा कस्बों तक फैला लिया। दूसरे बम्बई स्टॉक एक्सचेंज तथा अन्य एक्सचेंजों की कार्यप्रणाली कभी भी पारदर्शी नहीं रही और छोटे निवेशकों का विश्वास कभी भी उनके पक्ष में नहीं रहा। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ने अपनी पारदर्शी स्क्रीन आधारित पद्धति से बाजी ही उलट दी। उच्च तकनीक आधारित अखिल भारतीय नेटवर्क व्यापार पद्धति से सौदों की लागत में कमी, निपटारे की अवधि मे कमी, सर्वप्रकट पारदर्शिता, सौदों की संख्या, सूचीबद्ध कंपनियों की संख्या, अधिक तरलता, जोखिम के विरूद्ध बीमा सरल मूल्य शोध पद्धति आदि के कारण नेशनल स्टॉक एक्सचेंज अग्रणी होता रहा तथा नेशनल स्टॉक एक्सचेंज से व्यवहार करना निवेशकों को बड़ा सुखद अनुभव प्रतीत हुआ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. वित्तीय बाजार परिचालन (2009), डॉ. उपेन्द्र कुमार, डॉ. पी.के. अग्रवाल, (एस बी पी डी पब्लिशिंग हाऊस)
2. सेबी वार्षिक प्रतिवेदन (2012–13)
3. बिजनेस भास्कर
4. www.nseindia.com
5. www.sebi.gov.in

An Impact of FDI on Indian Economy

Girish Chandra Gupta
Professor of Commerce
Swami Vivekanand Govt. College,
Susner

Patel Kalpeshkumar Trikamlal
Research Scholar

Abstract: One of the most prominent and striking feature of today's globalized world is the rapid growth of FDI in both developed and developing countries. Nations progress and prosperity is reflected by the pace of its sustained economic growth and development. Apart from a nation's foreign exchange reserve, exports, government's revenue, financial position, available supply of domestic savings, the magnitude and quality of foreign investment are necessary for the well being of a country. FDI provides a gain – merit situation to the lady of the house and the birthplace countries. Both countries are shortly interested in inviting FDI everything being equal they gain a chance from a well known type of investment. There is a substantial climax in the mind of both the developing and exaggerated countries towards FDI. They both clear FDI as the apt art, an element of evident finance. FDI is a cardinal and a big factor in influencing the ahead of its time process of global economic development. This raw material is thoroughly based on slight data. This study depicts the prevention to question the determinants of Foreign Direct Investment flows and its violence on Indian economy. FDI can throw in one lot with to reinforce the produce, work of genius and haul at the sectoral directly of the Indian economy. It is sensible to bring to light up the go aboard oriented sectors and higher wealth of economy conceivable achieved at the hand of the accomplishment of these sectors.

Introduction: During the last three decades, one of the most attentive and attractive developments is the dramatic growth of FDI in the global economic landscape. This unique growth of global FDI in the 21st century around the world makes FDI an important and vital component of development strategy in both developed and developing nations and policies are designed in order to stimulate inward flows. The 'home' countries want to take the advantage of the vast markets opened by industrial growth. On the other side the 'host' countries not only supplement domestic savings, foreign reserves, but also promote growth even more through spill over of technology, skills increased innovative capacity. Furthermore, the dearth of all types of resources viz. Financial, capital, entrepreneurship, technological advantage, skills, practices and access to markets-abroad-in their economic development, developing nations to accept FDI as a sole visible cure-all for all their

scarcities. Both countries are directly interested in inviting FDI, because they promote a lot from such type of investment. In fact, FDI provides a win – win situation for the host and the home countries.

LITERATURE REVIEW

Iyare Sunday O., Bhaumik Pradip K., Banik Arindam (2004) shows that the neighborhood concepts are widely pertinent in different contexts, particularly in China and India, and partly in the case of the Caribbean. There are considerable common factors in describing FDI inflows in select regions. While a substantial fraction of FDI inflows may be explained by selective economic variables, country–specific factors and the idiosyncratic component account for more of the speculation inflows in Europe, China, and India.

Andersen P. S. and Hainaut P. (2004) point out that while looking for evidence regarding a possible relationship between foreign direct investment and employment, in particular between outflows and employment in the source countries in response to outflows. They also find that high labour costs encourage outflows and dampen inflows and that such effect can be reinforced by exchange rate movements. They found clear evidence that outflows complement rather than substitute for exports and thus help to protect rather than destroy jobs.

John Andreas (2004) found that FDI inflows augment economic Growth in developing economies but not in developing economies. The paper argues that FDI should have a positive effect on economic growth as a result of technology consequence and physical capital inflows. This paper indicates that the direction of causality goes from the inflow of FDI to host country economic growth. Nevertheless, economic growth could itself create a boost in FDI inflows. Economic growth raises the size of the host country market and strengthens the incentives for market seeking FDI. This could result in a circumstance where FDI and economic growth are mutually supporting. Hence, these economies, primarily expect quality to run from FDI inflows to economic growth.

Klaus E. Meyer (2003) found that as emerging economies integrate into the global economies, international trade and investment will continue to brisk up.. The study terminated that the first priority should be on enhancing the general institutional framework such as to increase the efficiency of markets, the efficacy of the public sector administration and the convenience of infrastructure. On that basis, then, carefully designed but the chances of developing internationally competitive business clusters may be enhanced by the flexible schemes of promoting new industries.

Salisu A. Afees (2004) examined the determinants and impact of Foreign Direct Investment on economic Growth in Developing Countries using Nigeria as a case study. The study evaluated that inflation, debt encumber, and exchange rate significantly influence FDI flows into Nigeria. The study summarizes that the contribution of FDI to economic growth in Nigeria was very low, even though it was perceived to be a remarkable factor which influenced the level of economic growth in Nigeria.

Swapna S. Sinha (2007) found that due to its human capital, India has grown, size of market, rate of growth of the market and political stability. Whereas the drivers for attracting FDI in China identified agreeable business climate factors comprising of making structural changes, creating strategic infrastructure at SEZs and taking strategic policy initiatives of providing economic independence, opening up its economy, attracting diasporas and creating flexible labor law.

Nirupam Bajpai and Jeffrey D. Sachs (2006) found that the issues and problems related to India's current FDI regimes, and more importantly the additional allied factors responsible for India's offensiveness as an investment location. To sum up, a restricted FDI regime, high import tariffs, exit barriers for firms, stringent labor laws, poor quality infrastructure, centralized decision making processes, and a very limited scale of export processing zones make India an unpleasant investment location.

Chandan Chakraborty, Peter Nunnenkamp (2004) found that only transitory effects of FDI on output in the service sector, which booming FDI in the post – reform era. These differences in the FDI–growth, alliance suggest that FDI is unlikely to work wonders in India if only remaining regulations were relaxed and still more industries opened up to FDI.

RESEARCH METHODOLOGY

Research Objective

- To know the impact of FDI on Indian Economy.

Research Design and Data

The Study was done by applying explanatory research. I have been conducting research by using secondary data which have been collected from various sources.

Hypothesis of the study

- H_0 = There is no significant impact on economic growth of the country by FDI.
- H_1 = There is significant impact on economic growth of the country by FDI.

TRENDS AND PATTERNS OF FDI FLOW IN INDIA

Economic reforms taken by Indian government in 1991 makes the country as one of the high-flying performer of global economies by placing the country as the 4th largest and the 2nd fastest growing economy in the world. India also ranks as the 11th largest economy in terms of industrial output and has the 3rd largest pool of scientific and technical manpower. Continued economic liberalization since 1991 and its overall direction remained the same over the years, irrespective of the ruling party moved the economy towards a market – based system of a closed economy characterized by extensive regulation, protectionism, public ownership which leads to pervasive corruption and slow growth from 1950s until 1990s.

According to Department of Industrial Policy and Promotion (DIPP), the total FDI inflows increased by 24.5 per cent to US$ 44.9 billion during the financial year 2015, examine in contrast to US$ 36.0 billion in the financial year 2014. FDI into India through the Foreign Investment Promotion Board (FIPB) route lift up by 26 per cent to US$ 31.9 billion in the financial year 2015 as against US$ 25.3 billion in the previous year, predicting that the government's effort to improve the ease of doing business and relaxation in FDI norms is acquiescent results.

Data for the financial year 2015 indicates that the increase in the FDI inflows was primarily driven by investments in infrastructure and services sector. Within Infrastructure, Oil & Gas, Mining and Telecom witnessed higher FDI inflows, whereas IT services and trading (wholesale, cash & carry) drove the services inflows. Most recently, the total FDI inflows for the month of June 2015 touched US$ 2.05 billion as compared to US$ 1.9 billion in the same period last year.

During the financial year 2015, India received the maximum FDI equity inflows from Mauritius at US$ 9.03 billion, followed by Singapore (US$ 6.74 billion), Netherlands (US$ 3.43 billion), Japan (US$ 2.08 billion) and the US (US$ 1.82 billion). Healthy inflow of foreign investments into the country helped India’s balance of payments (BoP) state of affairs and stabilized the value of rupee.

FDI AND INDIAN ECONOMY

Developed economies consider FDI as an engine of market access in developing and less developed countries vis-a-vis for their own technological progress and in maintaining their own economic growth and development. Mounting nations look at FDI as a source of filling the savings, foreign exchange reserves, revenue, trade deficit, management and technological

gaps. FDI is measured as an instrument of international economic integration as it brings a package of assets, including capital, technology, managerial skills and capacity and access to foreign markets. In the process of economic development, foreign capital helps to cover the domestic saving constraint and provide access to the superior technology that promotes efficiency and productivity of the existing production capacity and generate new production opportunity. In order to study the impact of foreign direct investment on economic expansion, two models were framed and fitted. The foreign direct investment model shows the factors influencing the foreign direct investment in India. The economic growth model depicts the contribution of foreign direct investment to economic growth.

Table : FDI FLOW AND GDP IN INDIA

Year	**FDI Inflow (in `Crore)**	**GDP (in `Crore)**	**FDI as a percentage of GDP**
1991-1992	409	10,99,072	0.0372
1992-1993	1,094	11,58,025	0.0945
1993-1994	2,018	12,23,816	0.1649
1994-1995	4,312	13,02,076	0.3312
1995-1996	6,916	13,96,974	0.4951
1996-1997	9,654	15,08,378	0.64
1997-1998	13,548	15,73,263	0.8611
1998-1999	12,343	16,78,410	0.7354
1999-2000	10,311	17,86,525	0.5772
2000-2001	10,368	18,64,301	0.6783
2001-2002	18,486	19,72,606	0.9815
2002-2003	13,711	20,48,286	0.729
2003-2004	11,789	22,22,758	0.5451
2004-2005	14,653	23,88,768	0.7174
2005-2006	24,613	32,54,216	0.7563
2006-2007	70,630	35,66,011	1.9806
2007-2008	98,664	38,98,958	2.5305
2008-2009	1,22,919	41,62,509	2.9530

2009-2010	1,23,378	44,93,743	2.7455
2010-2011	85,502	48,85,954	1.75
2011-2012	1,73,947	88,32,012	1.9695
2012-2013	1,21,907	99,88,540	1.2205
2013-2014	1,47,518	1,13,45,056	1.3003
2014-2015	1,89,107	1,25,41,208	1.5079

***Source**:* various issues of SIA Bulletin

The above table depicts the FDI inflow and GDP in India from the year 1991-1992 to 2011-2012 (post-liberalization period). The table states that India showed a huge amount of FDI inflow. It reveals that FDI inflow has been raised from `409 crore in 1991-1992 to `1,89,107 crore in 2014-2015. Due to technological up gradation, upturn to global managerial skills and practices, optimal utilization of human and natural resources, making Indian industry internationally competitive, opening up export markets, maintain backward, forward linkages and inflation to international quality goods and services the Indian Government has used many steps to fascinate more FDI. The highest amount of FDI was acquired in the year 2014-2015, amounting to `1,89,107crore.

Hypothesis Testing

Anova: Single Factor

SUMMARY

Groups	**Count**	**Sum**	**Average**	**Variance**
FDI Inflow (in `Crore)	24	1287797	53658.21	3.83
GDP (in `Crore)	24	90191465	3757978	1.15

ANOVA

Source of Variation	**Sum Square**	**Degree of freedom**	**Mean Square**	**F Value**
Between Groups	1.65	1	1.65	28.53
Within Groups	2.65	46	5.77	
Total	4.30	47		

F -Calculation > F- table value

28.53 > 4.05

F Calculated value is greater than the F-table value.

Hence, H_0 = is rejected

Result of Hypothesis Testing

H_1 = There is significant impact on economic growth of the country by FDI.

Interpretation

Hypothesis result shows that there is significant impact on economic growth of the country by FDI from the year 1991 to 2015. The GDP growth rate was increased or grow in a significant manner.

CONCLUSION

For Indian economy, which has tremendous potential, FDI has had a positive impact.It incorporates an important role within the economic progression and development of the country, Further, FDI as a critical component of investment is needed by India for executing the objectives of its second generation of economic reforms and asserting this pace of growth and development of the economy. Indeed, India needs a business environment which is furnished to the needs of business. As foreign investors don't look for monetary adjustments or special inducement, but they are more of a mind in having access to a coherent deed that specified official procedures, rules and convention, clearance, and favourable circumstances in India. In fact, this can be achieved only if India lifting its second generation reforms in totality and in its right track.

REFERENCES

01. Andersen P. S. and Hainaut P. (2004), "Foreign Direct Investment and Employment in the Industrial Countries".
02. Bhandari, L. S. Gokara A. Tandon (2002), "Reforms and foreign direct investment in India", DRC working paper: Reforms and foreign direct.
03. Balasubramanyam V. N., Sapsford David (2007), "Does India need a lot more FDI", Economic and Political Weekly.
04. Chandan Chakraborty, Peter Nunnenkamp (2006), "Economic Reforms, FDI and its Economic Effects in India", www.iipmthinktank.com/publications/archieve.

05. Iyare Sunday O., Bhaumik Pradip K., Banik Arindam (2004), "Explaining FDI Inflows to India, China and the Caribbean: An Extended Neighborhood Approach", Economic and Political Weekly, pp. 3398-3407.

06. Johnson Andreas (2004), "The Effects of FDI Inflows on Host Country Economic Growth".

07. Khor Chia Boon (2001), "Foreign Direct Investment and Economic Growth".

08. Klaus E. Meyer (2005), "Foreign Direct investment in Emerging Economies".

09. Nirupam Bajpai and Jeffrey D. Sachs (2006), "Foreign Direct Investment in India: Issues and Problems", Harvard Institute of International Development, Development Discussion Paper No. 759, March.

10. Salisu, A. Afees (2002), "The Determinants and Impact of Foreign Direct Investment on Economic Growth in Developing Countries: A study of Nigeria", Indian Journal of Economics, pp. 333-342.

11. Swapna S. Sinha (2007), "Comparative Analysis of FDI in China and India: Can Laggards Learn from Leaders?"

12. Thai Tri Do (2005), "The impact of Foreign Direct Investment and openness on Vietnamese economy".

Websites

01. www.eximbank.com

02. www.imf.org

03. www.rbi.org

04. www.worldbank.org

05. www.wto.org

06. www.ifc.org

A Study of Decadal Growth of Population of Mhow Cantonment

Dr. (Mrs.) Kavita Agrawal
Asst. Prof. Economics
Shri Atal Bihari Vajpayee
Govt. Arts and Commerce College,
Indore

Introduction: Mhow is a class I Cantonment, established in 1818. Total population as per 2001 census was 85024.Though town has seen some changes in its demography, function and economy but no major change is noticed in the town. The reason is because it is a cantonment town which is entirely for army use and no development or any kind of change is done in its basic structure. Its policies and laws restrict any type of alternation in the town. Only defense land can be put to any kind of use. Still attempt is made to find out the changes in demography, function and economy. The slow pace of development of this town has affected the preferences of people to opt to move from here. It is not without its pitfalls.

Aim of study

The aim of present study is to analyze the decadal growth of population of Mhow cantonment.

Study Area

The present study is attempted on a cantonment town of Mhow located in Madhya Pradesh. The cantonment town of Mhow, situated 21 km from Indore city, towards Mumbai, is the area of this study. Mhow Cantonment is amidst the undulating Malwa plateau of the Vindhya ranges it is located approximately 22 kilometres from Indore, on the Agra-Mumbai Highway, which is also known as the National Highway 3 (NH-3). The town of Mhow is surrounded by Gambhir River, on an eminence one and a half mile north-west of the cantonment. Elevation of cantonment above sea level is 572 m. It is on the southern corner of Malwa plateau at 22^0 33' North and 75^0 46' East. The town is divided into eight wards. The cantonment town Mhow is surrounded by many villages and rivers. Shahda village forms the northern boundary, Gambhir river western, Sater river eastern and kodaria village located at south of the town.

Methodology

The present study is based on the secondary source of data collection. A census book of different decades has been used to tabulate and analyze the results.

Decadal Growth of Population of Mhow Cantonment

The decennial growth of population of Mhow cantonment is observed from first Census in 1881 to 2011. It reveals that there has been no steady trend of growth in population. It shows a fluctuating trend in the population of the cantonment town. The highest growth was recorded during the decade 1951 i.e. 28.23% and the lowest recorded in 1921(6.43 %). In 1881 to 1891 the growth of population was 16.69% but in 1911 it showed negative growth. Population reduced to -17.26 percent in 1911. There is a great epidemic of plague in Central India. The epidemic in Mhow and Indore is of unprecedented severity compared with other parts attacked with plague. Thousands of people have died in Mhow.

Table 4.1

Distribution of Total, Male and Female Population of Mhow Cantonment

S. No.	Year	Total Population	Growth	%	Growth Rate	Male	Growth	%	Growth Rate	Female	Growth	%	Growth Rate
1	1881	27227	-	-	-	15536	-	-	-	11691	-	-	-
2	1891	31773	4549	16.69	1.7	18300	2764	17.79	1.8	13473	1782	15.24	1.5
3	1901	36039	4263	13.43	1.3	20788	2488	13.59	1.4	15251	1778	13.19	1.3
4	1911	29820	-6219	-17.26	-1.7	17723	-3065	-14.74	-1.5	12097	-3154	-20.68	-2.1
5	1921	31737	1917	6.43	0.6	19218	1495	8.44	0.4	12519	422	3.49	0.3
6	1931	31177	-560	-1.76	-0.2	17496	-1722	-8.96	-0.9	13681	1162	9.28	-0.9
7	1941	34823	3646	11.69	1.2	19693	2197	12.56	1.3	15130	1449	10.59	1.1
8	1951	44655	9832	28.23	2.8	24050	4357	22.12	2.2	20605	5475	36.19	3.6
9	1961	48032	3377	7.56	0.8	26475	2425	10.08	1	21557	952	4.62	0.5
10	1971	59037	11005	22.91	2.3	32846	6371	24.06	2.4	26191	4634	21.49	2.1
11	1981	70130	11093	18.79	1.9	38035	5189	15.79	1.6	32095	5904	22.54	2.3
12	1991	74987	4857	6.93	0.7	39947	1912	5.03	0.5	35040	2945	9.18	0.9
13	2001	87140	12153	16.21	1.6	47406	7459	18.67	1.9	39734	4694	13.39	1.3
14	2011	81702	-5438	-6.24	-0.6	43888	-3518	-7.42	-0.7	37814	-1920	-4.83	-0.5

Mhow's population reduced because of the great number of people who have died due to the plague and many others have fled from Mhow. In 1921 population increased and growth was 6.43 percent. But male population showed decrease. In 1931 again population dropped to -1.76 % and growth rate was -0.2%.

The 130 year period can be divided into 3 phases of growth the initial period (1881-1921), second phase (1921-1961) and third phase (1961-2011). In the Initial period of (1881-

1921) 40 years, mostly a fluctuating trend is observed in town's population growth, growth rate was between 0.6 and1.7 percent during the second phase of 30 years (1921-1961) they showed high growth i.e. 28.23 percent in 1951 but there is a decline during 1951-1961. It showed a decrease of 0.8 percent. The decade1931-41 shows a normal growth of population. As there is nothing on record to show that there was any Calamity.

The increase in population however has been phenomenal during the decade 1941-51 which registered an increase of 28.23 or 2.8 percent and reason for this was also due to the influx of displaced persons due to the partition of the country. The 1951-61 decade was a period of normal growth of population. This showed an increase of 7.5 percent. The high growth rates recorded during these years may also be ascribed to expansion of Medical services and extension of public health programs and developmental activities in various economic activities through Successive 5 year plans. The decennial growth rate of population has been the highest in the decade 1941-51(2.8 percent).Mhow has floating population no stability is observed as it is a cantonment town. Many army officers and soldiers visit this cantonment for training and also posted here. During the decade 1971-81 the town has shown a very significant growth in its population.

Since 1961 population of the town has been increasing at a constant rate .In 1971 again there was a sharp rise in population (22.91%). This is a significant year in the history of Mhow because this year the Infantry School has been bifurcated into the Infantry School and the college of Combat. Many officers came for training courses as the year 1962 saw war between India and china.

In 1971-81 population rate of increase slightly slowed down to 18.79 percent. This is due to posting of soldiers in war fields. It is clear from the table that population of the town has multiplied by three times within a period of 130 years. During 1981-91 the town experienced a small decline of 0.7 percent. This fall is attributed to the migration of the people.

The potentiality for future growth is limited as it is a cantonment town with so many restrictions imposed by the cantonment act 2006.

Decadal changes in population from 1881-2011 show that a higher rate of growth in population started from 1941 onwards. This was mainly because of the establishment of 3 premier training institutes where majority of the army personnel visit for training in Mhow. This affects the demographic profile of the town.

Table no. 2

Distribution of Total Population of Mhow Cantonment (1861 - 2011)

Ward No.	Population in 1961		Population in 1971		Population in 1981		Population in 1991		Population in 2001		Population in 2011	
	Total Population	%	Total Population	%	Total Population	%	Total Population	%	Total Population	%	Total Population	%
1	6593	13.73	7372	12.49	7831	11.17	7492	9.99	7469	8.57	7046	8.62
2	7990	16.63	8933	15.13	8003	11.41	7796	10.4	7017	8.05	7638	9.35
3	9083	18.91	11581	19.62	8823	12.58	10229	13.64	12920	14.83	9089	11.12
4	7412	15.43	8654	14.66	10191	14.53	11154	14.87	11940	13.7	8274	10.13
5	7926	16.5	6229	10.55	11041	15.74	9207	12.28	10798	12.39	15447	18.91
6	9028	18.8	6877	11.65	14267	20.35	16237	21.65	20668	23.72	12951	15.85
7			9391	15.9	9974	14.22	12872	17.17	16328	18.74	13130	16.07
8												9.95
Total	**48032**	**100**	**59037**	**100**	**70130**	**100**	**74987**	**100**	**87140**	**100**	**81702**	**100**

Figure no. 1 Distribution of Total Population of Mhow Cantonment

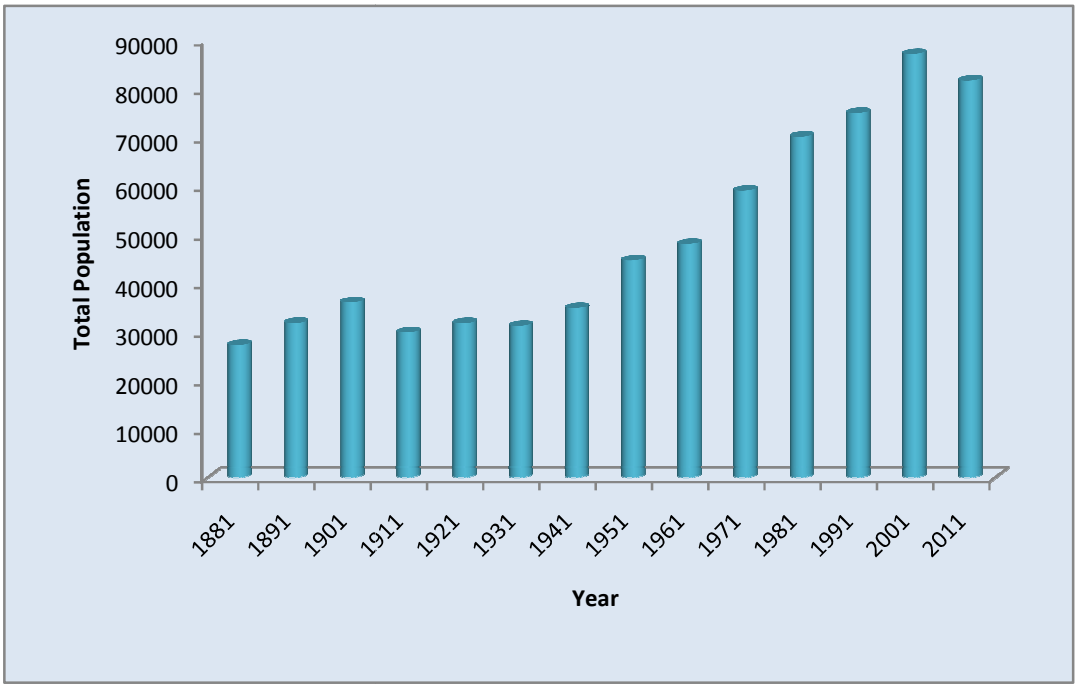

The Ward wise distribution of population of Mhow town for the year from 1961to2011 has been analyzed. The adjoining map explains that low population was seen in ward number one during 1961, 1991,2001 and 2011 but in 1971 and 1981 ward number one shows moderate growth in population.(Map no. 1)

In1961ward number five recoded highest population due to army population and other all wards registered moderate population .During 1971 only ward number two, three and seven had high population and other all ward recoded moderate population. In 1981 only ward number five and six recorded high population and other all ward registered moderate growth. During 1991 and 2001 ward number six and seven recorded high population. But in 2011 ward number five was in high category.

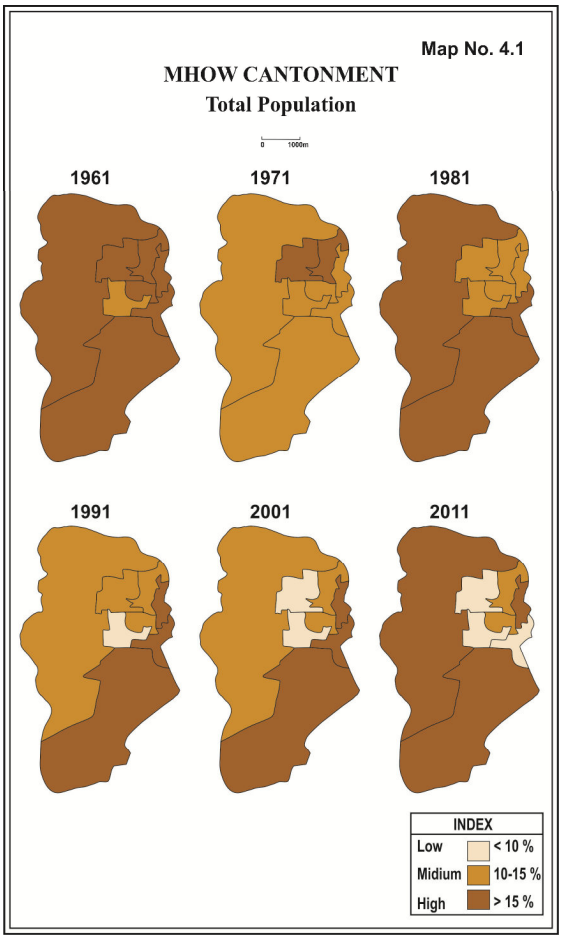

Figure no. 2

Distribution of Total Male Population of Mhow Cantonmen(1881-2011)

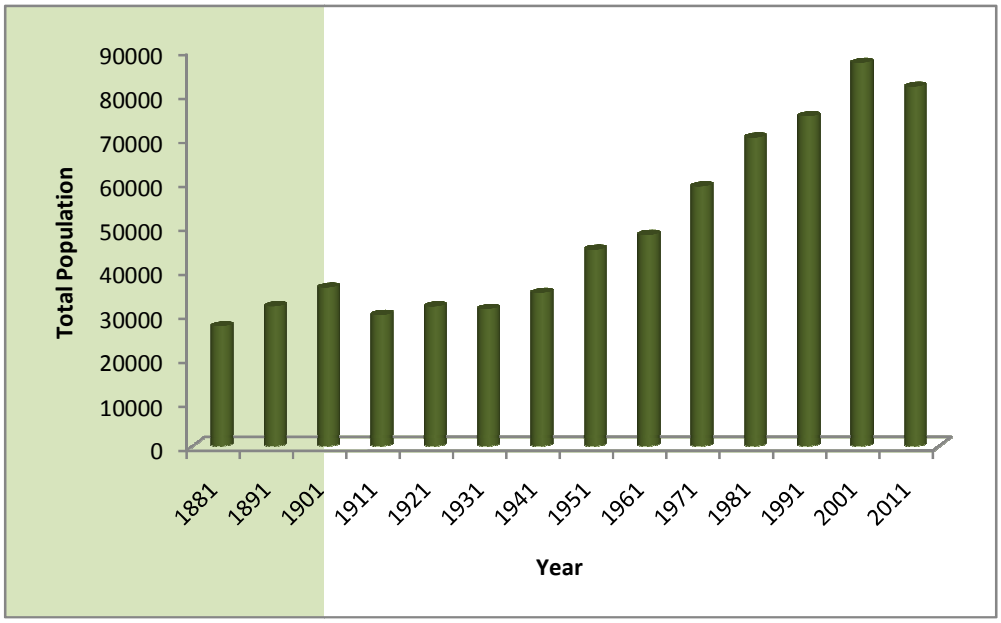

Figure no. 3

Distribution of Total Female Population of Mhow Cantonment(1881-2011)

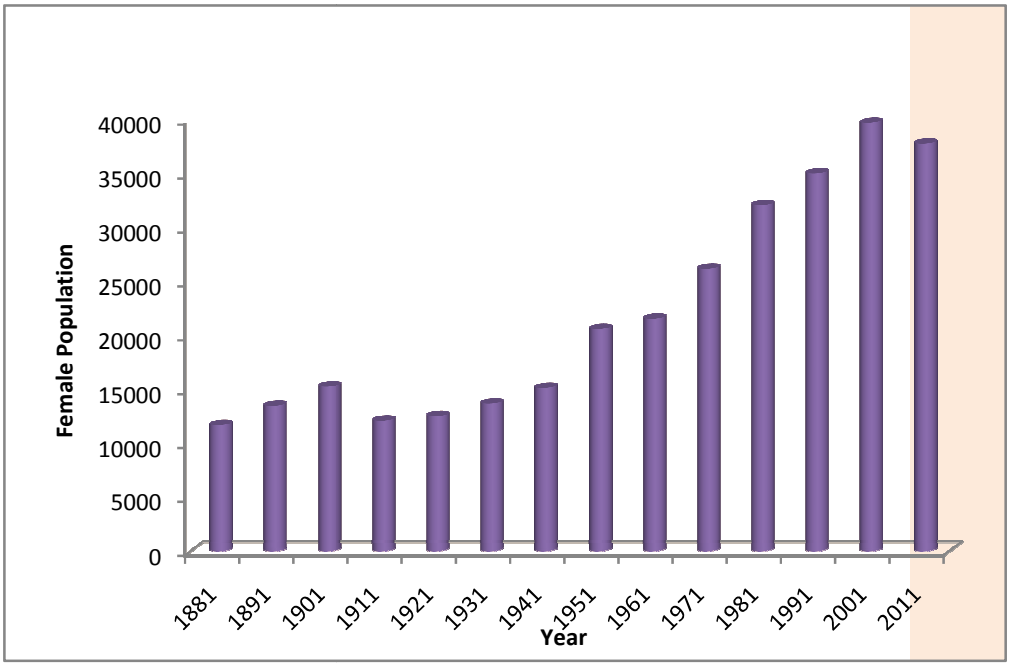

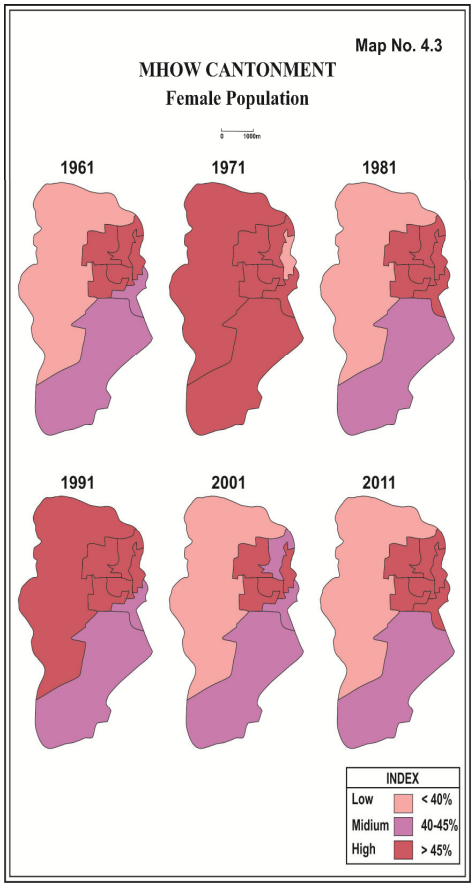

References :

01. **Mahadev, P.D.** (1986): *Urban Geography,* India Heritage Publishers, New Delhi.
02. **Malcolm, J.** (1823): *A Memoir of Central India Malwa and Adjoining Provinces*, London John Munay Albemarle Street.
03. **Mazid, H.** (2009): *Urban Geography: A Global Perspective,* Routledge, London.
04. **Reddy, K.V.** (1984): *On-going Functional and Structural Transformation of a Cantonment Area: A Case Study of Secunderabad Cantonment*, Annals of The National Association of Geographers, India, Vol. IV, No.1, June, pp. 70-76.
05. **Sharma, K.D.**(1993):*Cantonment Town of India: Island in the Urbanization Stream,* Urbanization Trends, Perspective and Challenges, Edited by Jaymala Didee and Vimla Rangaswamy, Rawat Publication, Jaipur .
06. **Sharma, P.K. & Parthi, K.** (2002): *Urbanization in the Chandigarh Periphery Zone*, Population Geography, Vol. 24, No.1and 2, pp. 89-98.
07. https://en.m.wikipedia.org/wiki/cantonment.
08. https://en.m.wikipedia.org/wiki/Mhow.

GST in India - Salient Features

Dr. Sandhya Goel
Assistant Professor (Political Science)
Shri Atal Bihari Vajpayee
Govt. Arts and Commerce College
Indore

The well awaited era of GST is started after the bill received assent of Hon'ble President and constitution of GST Council has also been notified. The whole country is delighted to experience the most awaited GST era.

Now-a-days, GST is a very hot topic in discussion. GST implementation is the top priority for the Government. All of us have heard so many information on the Goods and Services Tax. Some are having opinion that GST will take away the cascading impact of taxes and some are saying GST is "one nation and one rate". The main reason to implement GST is to abolish the cascading effect on tax.

The word GST stands for Goods and Services Tax. Is it a new tax? No, it is a new mechanism of taxing goods and services which are presently already taxed but differently. GST could be called a comprehensive tax on goods and services consumed in the country instead of multiplicity of taxes charged by States of India and Union of India. It is levied at each stage of Production-Distribution chain with appropriate credit of taxes paid at the previous stage. The dual GST model is being implemented in India, wherein the Union Govt. and State Govt. will concurrently tax the goods and services. Union Govt. share will be called CGST and States share will be called SGST. The Union Govt. and State Govt. will legislate separately but the Union legislation and State legislation will be similar for most of the features of legislation. Following are the salient features of GST being implemented in India.

1. Constitutional Amendment Bill:

Under the scheme of Constitution of India, taxation powers are divided between Union and States of India.

Union of India is empowered to tax the following:

a) Customs duty (on imports of goods into India)
b) Excise duty (on manufacture of goods)
c) Service Tax (on provision of services in India)

States of India are empowered to tax the following:

a) Sales Tax/VAT (on sale of goods)

b) Central Sales Tax (on inter-State sale of goods)
c) Entry Tax (on entry of goods into States)
d) Purchase Tax
e) Entertainment Tax
f) Luxury Tax
g) Taxes on lottery, betting, gambling.

With passing the Constitutional Amendment Bill, Union of India will get power to tax goods beyond the stage of manufacture i.e. till the last stage of sale to consumer and also to charge GST on inter-State transactions. The States of India will get power to tax the services. The Amendment Bill will also enable setting up of GST Council, a council of Union of India and States of India which will take all principal decisions in respect of GST law.

2. Taxes to be subsumed in GST:

Following taxes will be subsumed in GST -

a) Central Excise duty
b) Customs duty [Additional Customs duty (CVD) and Special Additional duty of Customs (SAD)]
c) Service Tax levied under Finance Act, 1994
d) State VAT
e) Central Sales Tax (CST)
f) Entry Tax
g) Purchase Tax
h) Octroi
i) Entertainment Tax
j) Luxury Tax
k) Tax on lottery, betting and gambling (1) Tax on advertisements.

3. Registration under GST:

All the existing taxpayers will be automatically migrated to GST on the appointed date. They will be issued a provisional certificate valid for a period of 6 months. Within this period, the taxpayer will be required to submit information as desired. The taxpayers who request for cancellation of their registration or who fail to file the desired information will discontinue to be registered taxpayers.

The new taxpayers under GST are required to make an application on GST portal within 30 days of his becoming liable for registration. The registration number will be PAN based. Except for Govt., non-residents and certain international agencies, having a PAN is a

prerequisite for registration under GST. Normally there will be one registration for each State but multiple registrations for each business vertical could also be allowed subject to conditions. The application for registration will be made in GST portal for one or multiple States in India.

4. *Supply - taxation event:*

Manufacture of goods is a taxable event for Central Excise and it is collected at the time of removal of goods from the registered premises of taxpayer. Transfer of property of goods is a taxable event in State VAT or Central Sales Tax Acts. Rendition of service is a taxable event for charge of Service Tax and Service Tax is collected earlier of receipt of consideration, issue of invoice or provision of service.

Under GST, supply of goods and services will be taxable event for charging of GST. Supply has been defined to include Sale, Transfer, Barter, Exchange, License, Rental, Lease or disposal. The tax on supply will be collected at earlier of the following events:

(a) Removal of goods
(b) Receipt of payment including advance payment
(c) Issue of invoice
(d) Receipt of goods in the books of recipient.

5. Input tax credit :

The taxpayer is eligible to avail input tax credit on inputs and input services subject to the following conditions:

a) To be availed within one year of date of invoice subject to maximum of following December for any financial year.
a) Proportionate credit is eligible in case inputs or input services are used partly for business and partly for other than business activities.
b) Receipt of goods and service, availability of invoice, actual payment of tax shown on such invoice and filing of return are the precondition for availing ITC.
c) Input tax credit is not available on Rent-a-cab service, works contract services resulting in immovable property, catering services or other services meant for consumption and tax paid to composition dealer.

6. GST payable calculation:

On intra-State supply of any goods and services, SGST and CGST will be charged at the rate to be decided by GST Council. The SGST and CGST will be concurrently charged on the same value. Example: In case SGST and CGST rates are fixed at 10% each. Goods valuing Rs. 100 will have SGST of Rs. 10/- and CGST of Rs. 10/-.

On inter-State supply of goods and services, IGST will be charged in place of SGST and CGST.

The ITC of SGST is allowed to be set off against output liability of SGST and ITC of CGST is allowed to be set off against liability of CGST. The ITC of IGST is eligible to be set off against payment of IGST, CGST and SGST in the same order.

7. Excess credit:

The balance input tax credit after payment of output GST liability is allowed to be carried forward for any length of time till the business continues. The refund of excess input tax credit can be taken only in respect of export of goods and services or when the GST rate on input goods and services is more than the output GST rate. In this case refund can be sought only for the rate difference of inputs and output GST.

8. Tax credit on capital goods:

For the purpose of availing input tax credit, no difference has been made in input, input services and capital goods.

However at the time of removal of capital goods, GST will be payable at higher of:

(e) Transaction value

(f) Value at the time of receipt minus the %age on account of period of use of capital goods. Example: Presently in Excise 2.5% per quarter is allowed to be deducted towards the deduction for usage of capital goods. The said percentage is yet to be decided in GST.

9. Inter-State transactions:

GST is a consumption tax based on destination principle. Where as CST is an origin based tax. CST is collected by the State from where goods originate. Under GST, the tax will belong to the destination State in inter-State transaction of supply of goods and services. Thus in GST a tax called IGST (Inter-State GST) will be collected at the time of transfer of goods and services from one State of India to another State. IGST is not a tax but only a medium by which tax collected by the origin State is taken to the destination State.

IGST will be collected by Union Govt. and the amount lying in IGST will belong to Union Govt. (equal to CGST) and the destination State (equal to SGST). Thus, through IGST system, Central Govt. will act as a clearing house for settlement of inter-State transactions between various States of India.

10. Branch transfers:

Branch transfers under GST will be taxable as any other supply under GST.

Any input tax credit reversed on branch transfers prior to appointed date i.e. the date on which GST becomes operational, will not be eligible for input tax credit on appointed date. Thus to avoid sufferings, branch transfers before appointed date should be planned.

11. Export transactions:

Exports of goods and services will continue to be taxed at zero rate under GST. Therefore, the input tax credit on inputs and input services used for making exports will be eligible for refunds.

12. Job work under GST:

With the special permission of Commissioner, principal manufacturer is eligible to send the inputs or semi-finished goods for job work to any job worker without payment of tax provided the job worked goods are received back by principal manufacturer within 180 days of dispatch to job worker.

Principal is eligible to have his inputs received directly at the premises of job worker. Similarly, principal is eligible to get the goods dispatched to his customer directly from the premises of job worker rather than first taking them back at his premises.

13. Opening stocks:

The already registered taxpayers on the appointed day will be eligible for opening input tax credit equal to the amount which is shown as closing balance of input tax (VAT law plus Excise law) in their returns filed under earlier law immediately before the appointed date.

The taxpayers which were not required to be registered under the earlier law or taxpayers who were dealing in exempted item as per earlier law but their item becomes taxable under GST would be eligible to claim input tax credit of taxes suffered in respect of stocks of inputs, semi-finished goods or finished goods held by them on the appointed day provided

(a) They are in possession of invoices showing such tax in respect of such stocks.
(b) (b) These invoices are not older than 12 months immediately preceding the appointed date.

14. Incentive schemes:

All the incentive schemes will come to an end on implementation of GST. To fulfil the commitments under these incentive schemes for the balance period of schemes, the respective Governments will provide an alternative scheme beyond GST to compensate the trade and industry who have been promised benefits under these schemes. By this method there will not be any break in the value chain and GST chain will also not break

15. Returns under GST:

Returns is one of the key feature of GST. All the returns will be filed on the GST network. There is no exemption to even NIL return. The taxpayer will not be able to file a return unless all the valid returns for previous period have been duly filed A valid return can be filed only if the tax shown due in the return has already been paid. Following returns will be required to be filed under GST.

(a) Return of outward supply by 10th of following month

(b) Return of inward supply by 15th of following month - To be made on the basis of outward supply return

(c) Regular monthly return by 20th of following month

- Will include details of inward supplies, outward supplies, ITC, tax payable and tax deposit details.

(d) Composition supplier return by 18th of following month Quarterly return

(e) Annual return by 31st December

Along with financial statements and reconciliation statement.

16. Matching and reclaim of input tax credit:

Matching of transactions is an important feature of GST in India. Each inward transaction will be validated against the outward transaction of respective supplier. Similarly each input tax credit claimed by a recipient will be validated with the payment records of supplier. The transactions which remain unmatched will not be given effect to in the records of the other party. In this regard, following procedure will be adopted:

(a) Inward supply entries will be matched against outward supply entries of supplier, Customs duty records for CVD and SAD credit and own record for duplication of entries. ITC on matched entries will be accepted and informed. Effect of non-reconciled entries will be added to output tax liability of recipient and he will be required to pay the additional amount along with interest.

(b) Credit notes of supplier reducing his tax liability will be matched with reduction of ITC by recipient or for its duplication. Reduction Of tax liability on matched entries will be accepted. Effect of non- reconciled entries will be added to output tax liability of supplier. Besides tax, supplier will be required to pay interest thereon.

7. Small dealers:

The option of composition scheme has been made for suppliers having annual turnover of less than 50 lacs. Such supplier instead of paying regular tax re eligible to pay an

amount in lieu of their tax liability which will not be less han 1% of the turnover.

Such supplier have been barred from making an inter-State transaction. Such composition person will not be entitled to collect tax from his customers. He will also not be entitled to avail input tax credit on his inward supplies.

8. Tax deduction at source:

Where total value of supplies of taxable goods and services is in excess of 10 lacs, then the recipient will be obliged to deduct tax @ 1% from any payment or credit made to supplier of such goods and services. The deductor will have to deposit this tax before 10th of the following month. Post-deduction, deductor will be required to issue certificate of deduction of tax to such supplier within a period of 5 days of deposit of tax. The certificate will have the information of Contract Value, Rate of Tax, Tax deducted, Tax deposited. The respective supplier will be eligible to get credit in his electronic ledger on the basis of such certificate

References

01. "The Economist-India Summit, 2016"
02. Time Trim – Lawcrux Advisors(P) ltd
03. Tax India Online
04. Excise law Times- Centax Publications Pvt Ltd
05. Economic Times

भारत में गौरक्षा का इतिहास

डॉ. प्रेरणा ठाकुर
प्राध्यापक – इतिहास
श्री अटल बिहारी वाजपेयी
शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
इन्दौर (म.प्र.)

शोध – संक्षेप

भारत में वैदिक युग से ही गौरक्षा की परम्परा रही है। महाकाव्य युग, मौर्य, गुप्त, एवं राजपूत युग तक परंपरा अक्षुष्ण रही। यहॉ तक कि मुगलकाल में भी बादशाह अकबर तथा जहॉगीर ने गौहत्यारो के लिये मृत्युदंड निश्चित किया था किंतु अंग्रेजो के भारत पर अधिकार के पश्चात अंग्रेजो के गौमांस भक्षी होने के कारण सैनिकों और अधिकारियों के लिये गौमांस की व्यवस्था की जाने लगी। 1857 की क्रांति के अनेक कानणों में गाय की चर्बी लगे कारतूस भी एक बड़ा कारण थे। स्वतंत्रता आंदोलन के अनेक नेताओं ने समय–समय पर गौरक्षा के लिये प्रयास किये थे जैसे मदनमोहन मालवीय , लोक मान्यतिलक स्वामी श्रद्धानंद , दयानंद सरस्वती आदि किंतु अफसोस कि आज भी स्वतंत्रता के 68 वर्षों के पश्चात हम गौरक्षा के मोर्चे पर सफल नहीं हैं।

शब्द – कुंजी

1. गौ रक्षा – गायों की रक्षा
2. जिसे मारा–पीटा या कष्ट न पहुॅचाया जाय जिसका वध न किया जाये।
3. बॅदायुनी – अकबर कालीन फारसीलेखक व अनुवाद
4. श्रुति – वेद

सर्वे भवन्तु सुखिनः का चिन्तन रखने वाला भारत एक आध्यात्मप्रधान देश है। भारत में अपने स्वार्थ की सिद्धी के लिए किसी भी प्राणी को कष्ट देना अथवा उसकी हत्या करना अधर्म माना गया है। भारतीय संस्कृति ने इसे कभी स्वीकार नहीं किया। जहॉ तक गाय का प्रश्न, प्रारंभ से ही हमाने ऋषि–महर्षि और मनीषियों ने गाय को संसार का सर्वश्रेष्ट प्राणी माना और इसे 'गावों विश्वस्य मातृः' अर्थात् गाय विश्व की माता है कहकर संबोधित किया।

अनादि काल से ही गाय को वेदों में अघन्या कहकर यह दर्शाया गया है कि गाय अवध्य है अर्थात किसी की स्थिति में गाय का वध नहीं किया जा सकता। अघन्या का अर्थ है जो न तो स्वयं किसी को कष्ट पहुॅचाये और न अन्य किसी के द्वारा मारीपीटी और क्लेश पहुॅचायी जाये। इसलिये प्रारंभ से ही भारतीय गौवंश को राज्य का संरक्षण प्रदान किया और इसे अवध्य माना अर्थात् उन दिनों में गौवध करने वाले को प्राणदंड दिया जाता था। हिंदू सम्राटों के समय तो गौवध तो पूर्ण प्रतिबंध रहा है, राजपूत युग में भी यह क्रम चलता रहा मुगल बादशाहों के शासनकाल में भी योग्य शासकों ने अपनी दूरदर्शिता के आधार पर प्रजा में परस्पर सौमनस्यता बनाये रखने की दृष्टि से गौवध पर पूर्ण प्रतिबंध रखा। ब्रिटिश शासनकाल में इस प्रतिबंध में शिथिलता आने लगी और गौहत्या का पाप प्रांरभ हो गया जो आज तक निरंतर जारी है। देश में गौहत्या का कलंक मिटाने के लिए ही स्वतंत्रता–संग्राम का प्रांरभ हुआ। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में चर्बी वाले कारतूसों की भूमिका सर्वविदित है। स्वतंत्रता–संग्राम के प्रमुख कर्णधारों ने यह घोषणा की थी कि स्वराज्य प्राप्त होते ही गौहत्या का काला कलंक सबसे पहले मिटेगा जबकि आज स्वतंत्रता प्राप्त किये 68 वर्ष बितने के बाद श्री रामकृष्ण, बुद्ध, महावीर, गुरूनानक और गुरूगोविंद सिंह की इस पवित्र भूमि पर अभी तक गौरक्त गिरना बंद नहीं हुआ। स्वयं महात्मा गॉधी तक कहा था कि ''हम स्वतंत्रता के लिये कुछ समय तक रुक भी सकने हैं, पर गौहत्या होना हमें एक दिन भी सहन नहीं।''

स्वराज्य प्राप्ति के बाद गौहत्या बंदी कानून बनने की आशा क्षीण होने पर यहॉ की जनता, बुद्धिजीवियों और संत महात्माओं ने गौवध बंदी के लिये अहिंसात्मक आंदोलन और सत्याग्रह किये, जेल यातनाऍ सही, बलिदान और कुर्बानियॉ दीं।

वि व के पुस्कालय में ऋग्वेंद सर्वप्राचीन व सर्वप्रथम ग्रंथ है। यह विश्व के जीव मात्र को आदेश देता है कि गौ अदिति तथा अनागा है इसका वध न करो। गौ को अदिति कहकर वेद ने अमृतत्व का प्रतीक बताया है। अमृतत्व स्वयं अमर होकर औरों को अमृत होने का मार्गदर्शक और प्रेरक है इसकी रक्षा और वृद्धि से समस्त विश्व सुरक्षित और समृद्ध होगा अतः भारतीय संस्कृति के प्राचीन चिंतकों ने इसको सदा पूज्य और अपने तथा विश्व के जीवन का केंद्र मानकर इसकी सदा पूजा और रक्षा मातृ सदृश की। भारतीय जीवन के सभी क्षेत्रों में गौ का अनुपम मातृ समान सहयोग है, इसलिये 'गावो विश्वस्य मातरः' कहा गया है। अथर्ववेद में कहा गया है –'अघन्यानां नः पोषे कृणोतु'

महाभारत के शांति पर्व में भीष्म ने सुस्पष्ट रूप से कहा है– गौ को अघन्या (अवध्य) कहा गया है फिर कौन उन्हें मारने का विचार करेगा ? जो पुरुष गाय और बैलों को मारता है, वह महान पाप करता है –

अघन्या इति गवां नाम क एता हन्तुर्हति ।

महच्चकाराकुशलं वृषं गां वा ऽऽ लभेत् तु यः ।।

गाय के लिये अघन्या , माता , अर्जुनी , सुरभी , माहेयी , अदिति , इज्या , कल्याणी तथा मद्रा आदि शब्दों का प्रयोग ही उसके सम्मानजनक होने का साक्ष्य है। भगवान बुद्ध करुणा के अवतार थे। उनके मन में संसार के समस्त प्राणियों के लिये समान दया थी। बुद्ध ने जनता को गौ तथा गौवंश की उपयोगिता बताकर गौवध न करने की शिक्षा दी। भगवान बुद्ध गाय की उपयोगिता को सर्वोपरि स्थान देते थे। गाय को माता–पिता के समान उपकारी बताते हुए वे गाय को सुख का मूल स्त्रोत समझते थे –

यथा माता–पिता भ्राता , अञत्रे वादि च जातका।

गावो नो परमा मित्ता , यासु जायन्ति औसधा ।।

अन्नदा बलदा चेता वण्णदा , सुखदा तथा ।

एवमत्थवर्स ञत्वा नास्सु गावो हनिं सु ते ।।

जैसे माता–पिता, भाई, कुटुम्ब परिवार के लोग है वैसे ही गाये भी हमारी परम मित्र, परम हितकारिणी हैं। जिनके दूध से दवा बनती है। गाय अन्न, बल, रूप–सौन्दर्य तथा सुख को देने वाली है। गाय के प्रति भगवान बुद्ध की ऐसी उदात्त व पवित्र भावना देखकर उनके अनुयायियों ने भी गायों को आदर की दृष्टि से देखा।

बौद्ध धर्म के कुलवग्ग सुत्र नायक ग्रंथ में जीवों को क्षति पहुॅचाना हिंसा करना काटना आदि निषिद्ध कर्म बताये गये है। कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में गौरक्षा पर राजा को पूर्ण ध्यान देने के लिये आदेश दिया है। हिंसा का निषेध करने वाले बौद्ध तथा जैन धर्म में गौवंश के वध का प्रश्न ही नहीं उठता। इसीलिये सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म से प्रेरित होकर अपने राज्य में पशुवध को कानूनन बंद कर दिया। गाय–बैल आदि प्राणियों की हत्या न करने की आज्ञाऐं अशोक के शिलालेखों में प्राप्त होती है।

प्रख्यात चीनी यात्री होनसांग सम्राट हर्षवर्धन के संबंध में लिखा है– 'उनके राज्य में प्राणी हिंसा करने वाले के लिये कठोर दंड था उन्होंने अपने राज्य में मांस भक्षण ही बंद कर दिया था, गौहत्या और गौ मांस भक्षण की तो बात ही क्या।

दसवीं शताब्दी तक भारती गौवंश के लिये स्वर्गभूमि की भांति था। मेहमूद गजनवी के आक्रमण से पूर्व मुसलमान सूफी संत भारत में आकर साधना करने लगे थे पर वे सभी गाय को आदर की दृष्टि से देखते थे। मुगल काल में अकबर ने गौवध को कानूनन बंद कर हिंदू प्रजा का स्नेह प्राप्त किया।

अकबर कालीन जैन संत हीरविजय सूरि का नाम विख्यात है अकबर पर इनका बड़ा प्रभाव था। शंत्रुजय पर्वत पर आदिनाथ के मंदिर के द्वार पर सन् 1593 में जो संस्कृत शिलालेख लगाया गया है कि अकबर के काल में गौ, बैल और भैंस की हत्या के विरूद्ध आदेश जारी किये गये थे। 15 जून 1584 को हीरविजय सूरि जी दिये गये फरमान में लिखा है कि गुजरात में रहने वाले हीरविजय जी तथा उनके शिष्यों की अलौकिक पवित्रता और उग्र तम की ख्याति सुनकर बादशाह ने उन्हें दरबार में बुलाया था। विदा होने समय उन्होंने बादशाह से जो विनती की थी उसके अनुसार यह ताकीद की जाती है कि पर्यूषण उत्सव के 12 दिनों में जैन आबादी के किसी शहर में किसी भी पशु की हत्या न की जाये। हीरविजय जी को दिये गये दूसरे फरमार में यह लिखा है कि मुगल साम्राज्य के श्वेताम्बर पंथियों के जो तीर्थ स्थान है वे सब जैनों सुपुर्द किये जायें ताकि वहॉ किसी प्राणी की हत्या ना हो।

गुरू गोविंद सिंह जी ने तो खालसा पंथ की स्थापना गौघात का कलंक मिटाने के उद्देश्य से की थी। गुरू तेज बहादुर , गुरू अर्जुन देव के बलिदान भी हिंदू धर्म व गौ माता की रक्षा के लिये हुए।

गुरू गोविंद सिंह जी ने अपनी पुष्कर यात्रा के दौरान यह कहा था कि खालसा पंथ का ध्येय यही है

यही देहू आज्ञा तुर्क गाहौ खपाऊँ ।
गऊ घातका दोष जग सिउ मिआऊँ ।।
सकल हिंद सिउ तुर्क दुष्टां बिदारहु ।
धप्य की ध्वजा कउ जगत् में झूला रहू ।।
स्कल जगत यहि खालसा पंथ गाजै ।
जगै धर्म हिन्दुन सकल धुंध भाजै।।

चण्डी दी वार

कूका वीरों ने पंजाब में अनेकों जगह अंग्रेजो द्वारा स्थापित बूचड़ खानों को तोड़कर गौ हत्यारों को मार डाला था। बंदा बहादुर ने भी गौरक्षा के संबंध में अपने विचार रखे है।

1857 के प्रथम स्वतन्त्र्य–समर गौ हत्या से उत्पन्न आक्रोश का ही परिणाम था जब अंग्रेज सरकार ने कारतूसों में गाय की चर्बी का प्रयोग शुरु किया तो गौ भक्त भारतीय सैनिक यह सहन नहीं कर पाये कि विदेशी विधर्मी अंग्रेज सरकार गाय की चर्बी के माध्यम से उनका धर्म भ्रष्ट करे। मंगल पांड़े ने बैरखपुर छावनी में चर्बी वाले कारतूसों को लेने से इनकार करके खुला विद्रोह किया था। स्वतन्त्र्य वीर सावरकर ने 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम नायक ग्रंथ के अनेक तथ्य प्रस्तुत कर यह स्पष्ट किया है।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान आर्यसमाज द्वारा गौरक्षा आंदोलन चलाया गया स्वामी श्रद्धानंद ने इस क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया। सहायता मदनमोहन मालवीय जी ने देश में अनेक स्थानों पर सभाओं में घोषणा की थी कि देश के स्वाधीन होने ही गौ हत्या का कलंक मिटाया जायेगा। 1921 में असहयोग आंदोलन के दौरान गोपाष्टमी गॉधी की उपस्थिति में हुए सम्मेलन में सर्वसम्पति से पारित प्रस्ताव में कहॉ था – अंग्रेजी राज्य में गौहत्या होती है, अतः इस राज्य से सहयोग नहीं किया जाये। इस ऐतिहासिक सम्मेलन की अध्यदाता लाला लाजपत राय ने तथा स्वागताध्यक्षतः हकीम अजमल खान ने की थी इस भारतीय स्वाधीनता संग्राम के पीछे की गौभक्ती तथा गौरक्षा की भावना बहुत बड़ा योगदान रहा।

संदर्भ ग्रंथ सूंची :

01. अथर्ववेद गौ 5/4/2
02. महाभारत – शांति पर्व
03. कल्याण – गौ सेवा – अंक
04. अकबर – सुरेशमिश्र
05. प्रथम स्वतन्त्र्य समर – सावरकर
06. कॉग्रेस का इतिहास – पद्दाभि सीतारमैया
07. गुरूगोविंद सिंह – चंडी दी वार (मार्कण्डेय पुरा सप्त रहा)

मीराबाई का सम्पूर्ण जीवन महापरिवर्तन का मार्ग है

डॉ. प्रीति चौहान
अतिथि विद्वान – दर्शनशास्त्र
श्री अटल बिहारी वाजपेयी
शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
इन्दौर (म.प्र.)

भूमिका : हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल सभी कालों में स्वर्णिम काल के रूप में जाना जाता रहा है। भक्तिकाल को मुख्यरूप से सगुण धारा व निगुर्ण धारा में विभाजित किया गया है। सगुण धारा में ईश्वर को साकार रूप में मानकर मूर्तिपूजा को प्रतीकात्मक तौर पर मानवीय जीवन से बहुत समीप माना गया। भक्त का ईश्वर भी मूर्ति स्वरूप में मानवीय आचरण से तथा नियमों से बंधा हुआ था। मूर्तिपूजा के स्वरूप में ईश्वर को मानवीय नित्यकर्मों को भक्ति भावना से ओत प्रोत होकर इसका भक्तिकाल में मार्मिक वर्णन किया गया है। इस काल के साहित्य में अधिकांश तौर पर श्रीराम व श्रीकृष्ण की बाल लीलाएं तथा रासलीला का वर्णन किया गया है।

सगुण भक्ति धारा में मुख्यरूप से तुलसीदास ने श्रीराम के बालस्वरूप का मार्मिक वर्णन किया है वहीं सूरदास , रहीमखान खाना , रसखान,मीराबाई, इत्यादि उस काल के मुख्य साहित्यकारों ने भक्ति भाव को अत्यंत मानवीय संवेदनाओं के रंगों से रंग दिया है।

निगुर्णधारा में ईश्वर निगुर्ण, निराकार है। ज्ञानमार्ग से ब्रह्मा तक पहुंचने का मार्ग बताते हुए ब्रह्म तत्व से संबंधित वर्णन इस काल के साहित्यकारों ने किया है। ज्ञानमार्ग के सबसे बड़े साहित्यकार निगुर्णधारी कबीरदास जी हैं, जो हिन्दू मुस्लिम धर्म में व्याप्त रूढियों पर सहज प्रहार कुछ इस तरह करते हैं।

''पोथी पढ़–पढ़ जग मुआ, पण्डित भया न कोय,
ज्यों पढ़े ढाई आखर प्रेम का, ज्यो पण्डित होय''

''पत्थर पूजत हरि मिले , मैं पूजों पहाड़,
तेसे चाकी भली, पीस खाये संसार''

भक्तिकाल में सगुण व निगुर्णधारा को भक्तिमार्ग व ज्ञानमार्ग के रूप में जाना गया है। दोनों ही मार्ग साधन स्वरूप हैं पर साध्य तो ब्रह्म तक पहुंचना है। भक्तिभाव आम जनमानस के ह्रदय की अभिव्यक्ति का मार्ग बना। इस युग के तुलसीदास, सूरदास मीराबाई के पद्य वर्तमान युग में भी अत्यंत प्रसिध्द है।

उद्देश्य :

ओशो ने अपने प्रवचनों में कई साहित्यकारों पर अपने विचार सहजरूप में रखे हैं। ओशो ने कबीरदास, शेख फरीद, राबिया, सदना, नामदेव, दादू दयाल, पीपा, भीकन, सूरदास, तुलसीदास, रसखान, रहीमखान खाना, मीराबाई इत्यादि साहित्यकारों के माध्यम से ज्ञान तथा भक्ति मार्ग की अलख जगाई। जो व्यक्ति ह्रदय के तल पर जीने वाला है। उसे भक्तिमार्ग तथा जो मस्तिष्क के बौध्दिक तल पर जीवन जीने वाला है,उसे ज्ञानमार्ग बताया।

भक्तिधारा में मीराबाई पर न सिर्फ उनके पद्यों के माध्यम से भक्तिभाव को सारगर्भित, सरल–सहज शब्दों में व्याख्यित किया वरन् मीराबाई के श्रीकृष्ण के प्रति अगाढ़ प्रेम को तथा उनके जीवन की घटनाओं का मनोविश्लेषणात्मक वर्णन भी किया है। मीराबाई अपने जीवन में कई चमत्कारिक घटनाओं के अनुभव से गुजरी जिसे भक्तिभाव से देखें तो वह पूर्वजन्म की स्मृति की हल्की झलक है। कुछ घटनाएं किवदंती सी प्रतीत होती है परन्तु भक्ति के गहन तल पर ईश्वर भी वास्तविक तौर पर साकार रूप ले लेता है। जो कुछ मिथक या कहानी प्रतीत होता है वह कुछ युगों बाद प्रसिध्द्व हो जाता है। मीराबाई के संदर्भ में ओशो कहते हैं कि, '' हमें मीरा के संबंध में कुछ बाते समझ लेना जरूरी है। मीरा प्रेम का इतना अपूर्व भाव इस तरह शुरू हो भी नहीं सकता। यह कहानी पुरानी है। यह मीरा कृष्ण की पुरानी गोपियों में से एक है। मीरा ने खुद भी कहा है कि कृष्ण के समय में ''मैं उनकी एक गोपी थी, ललिता मेरा नाम था।''

इस सत्य को पण्डित टाल जाते हैं, इस बात को ही कह देते हैं कि यह किवंदिती है। मैं इसे कहानी न कह सकूंगा। मीरा खुद कहती है, उसे मैं स्वीकार करता हूं। सच झूठ का मुझे हिसाब नहीं लगाना है।''

ओशो पूर्व जन्म के अवधारणा पर बहुत विश्वास करते थे, उन्होने अपने प्रवचनों में कई पूर्व जन्मों की घटनाओं के बारे में जिक्र किया है। उन्होने अपने प्रवचनों में मीरा के बचपन में घटी घटना जिसे आज किवंदती कह कर अनदेखा कर दिया जाता है लेकिन ओशो इस घटना को बाल मनोविज्ञान का आधार बताते हैं।

पूर्वजन्म और मीराबाई का बचपन :

''मीरा 4–5 साल की थी, उनके घर एक साधू मेहमान आया, साधू ने सुबह अपनी झोली से कृष्ण की मूर्ति निकाल कर पूजा करना शुरू किया तो मीरा एकदम पागल हो गई, देहखुह (पूर्व जन्म की स्मृति जागृत होना) होने लगा। पूर्वाभाव का स्मरण हो गया वह मूर्ति

कुछ ऐसी थी कि, चित्र पर चित्र खुलने लगे। वह मूर्ति कहानी की शुरूआत बन गई। मीरा लौट गई,हजारों साल पीछे अपनी इस स्मृति में। रोने लगी, साधू से वह मूर्ति मांगने की जिद् करने लगी लेकिन साधू को उस मूर्ति से विशेष लगाव था। वह साधू उसी दिन अगले गांव में जाने वाला था वह वहां से चला गया। मीरा का यह कृष्ण के प्रति प्रेम और पहला विरह ऐसा रंग लाया कि, वह बालहठ के रूप में प्रकट हुआ, मीरा ने खाना–पीना बन्द कर दिया।''

''पण्डितों के लिये यह प्रमाणित नहीं होता लेकिन मेरे लिए यह प्रमाण है। 4–5 साल की बच्ची इस तरह बालहठ में न कुछ खाए पीए और आंसू बहाते रहे। सामान्य तौर पर बच्चे कभी–कभी खिलौनो के लिए भी जिद्द करते हैं लेकिन घड़ी दो घड़ी में भूल जाते हैं। उसके घर के लोग भी हैरान हुए कि, अब क्या करें ? साधू तो गया भी, कहां उसे खोजें ? और वह देगा, इसकी भी संभावना कम है।

रात उस साधू ने सपना देखा कि, श्रीकृष्ण उसके समीप खड़े हैं उन्होने कहा कि, मूर्ति जिसकी है उसको लौटा दो। तू रख ली बहुत दिन तक, यह अमानत थी, मगर यह तेरी नहीं है अब तू नाहक मत ढ़ो। साधू तो घबड़ा गया कृष्ण तो कभी उसे दिखाई भी न पड़े थे। वर्षों से प्रार्थना पूजा कर रहा था, साधू आधी रात को ही मीरा के घर गया और कहा ''मुझे क्षमा करो, मुझसे भूल हो गई।'' वह मूर्ति देकर वापस लौट गया।

यह घटना मीरा के जीवन में बहुत बड़ा बदलाव लेकर आयी, वह उस मूर्ति के साथ दिन–रात रहने लगी। यह मीरा के इस जीवन में कृष्ण के साथ पुर्नगठबंधन की शुरूआत थी। दो वर्ष उपरांत पड़ोस में किसी का विवाह हुआ और यह 7–8 साल की लड़की ने पूछा अपनी माँ को ''सबका विवाह होता है, मेरा कब होगा, मेरा वर कौन है?'' माँ ने ऐसे ही मज़ाक में कहा यह गिरधर गोपाल ही तेरे वर हैं (मीरा उस वक्त भी वह कृष्ण की मूर्ति को छाती से लगाए खड़ी थी) यह तो माँ ने मज़ाक में ही कहा था। कभी–कभी सहयोग महारंभ बन जाते हैं– महाप्रस्थान के पथ पर। बचपन में अगर कोई भाव बैठ जाता है तो बड़ा दुरगामी होता है। यह बात उसके मन में बैठ गई उस दिन से उसने अपना सारा प्रेम कृष्ण पर उंडेल दिया।''

सांसारिक वियोग बना वैराग्य का मार्ग :

मीराबाई अपने जीवन में कई चमत्कारिक घटनाओं से गुजरी संसार के सारे रिश्ते धीरे–धीरे टूटने लगे और वह अध्यात्म में गहनता से उतर गई। इस विषय में ओशो कहते हैं कि, मीरा पर जिन लोगों ने किताबे लिखीं, वे सब लिखते हैं, मीरा के जीवन जितने भी

महत्वपूर्ण व्यक्ति थे, उन सबकी दुर्भाग्य से मृत्यु हो गई पर मैं ऐसा नहीं कह सकता। यह सौभाग्य से ही हुआ, वे लिखते हैं दुर्भाग्य से, क्योंकि मृत्यु को सभी लोग दुर्भाग्य मानते हैं लेकिन यही तो मीरा के जन्म का कारण बना। जितना भी प्रेम कहीं था वह सब सिकुड़ता गया, सारा प्रेम कृष्ण पर उमड़ता गया''। इन सब मृत्यु की घटनाओं ने एक बात दिखा दी कि, इस जगत में सब क्षणभंगुर है, अगर प्यार खोजना हो तो शाश्वत में खोजो। मीरा इतनी प्रतिष्ठित हो रही थी, दूर–दूर से मीरा की खबर सुनकर लोग आने लगे थे। वह सुगंध उड़ने लगी थी, वह सुगंध कस्तूरी की तरह थी''।

मार्ग बदल गया :

मीरा भक्तिभाव में लीन हो संतों के समूहों में विचरण करने लगी। राजस्थान से वह वृंदावन पहुंची। वहां पर श्रीकृष्ण पुरूष हैं और सारा संसार उनकी गोपियां हैं। ऐसी गहन दार्शनिक विचारधारा सहज घटना के रूप में परिलक्षित हुई। इस विषय में ओशो कहते हैं कि, ''जब मीरा वृंदावन के प्रतिष्ठित मन्दिर में पहुंची जहां पर स्त्रियों का प्रवेश निषेध था क्योंकि उस मन्दिर का जो महंत था वह स्त्रियों को नहीं देखता था, ब्रह्माचारी को स्त्री को देखना वर्जित है, मीरा को रोकने का प्रयास किया गया परन्तु मीरा की गहन भक्ति दीवानगी देखकर रोकने वाले भी मौन हो गये। मन्दिर में मीरा प्रवेश कर चुकी थी। पुजारी के हाथ पूजा का थाल गिर गया। यह स्त्री यहां भीतर कैसे आ गई। कृष्ण के सामने मीरा भक्ति में नाच रही है लेकिन पण्डित नहीं डूबा। उसने मीरा को कहा ''रूको औरत''।

मीरा ने कहा ''मैं सोचती थी कि, कृष्ण के अतिरिक्त और कोई पुरूष है नहीं, सारा संसार गोपी है, उनके ही साथ रास चल रहा है, तो तुम भी पुरूष हो? मैं तो सिर्फ कृष्ण को ही पुरूष जानती थी, तो तुम प्रतियोगी हो''

पण्डित घबरा गया उसे समझ नहीं आया कि क्या जवाब दें ? इस घटना के उपरांत मीरा वृंदावन छोड़ द्वारका चली गई। संतों के साथ हमने सदा ऐसा ही दुर्व्यवहार किया है मर जाने के बाद पूजते हैं , जीवित हम दुर्व्यवहार करते हैं।

समाज को भक्ति रास नहीं आयी :

मीराबाई श्रीकृष्ण के भक्तिभाव में अत्यंत लीन हो गई, उनका श्रीकृष्ण की दीवनगी में मन्दिरों मार्गों में पदयों का गायन, नृत्य करना, उस समय के सामाजिक व्यवस्थापकों को रास नहीं आया, उनको दण्डस्वरूप मृत्यु देने के उद्देश्य से कभी राणा ने नाग भेजा तो कभी ज़हर का प्याला। मीराबाई ने भक्तिभाव से श्रीकृष्ण का प्रसाद समझ हर घटना का स्वागत

किया। इस विषय में ओशो कहते हैं कि, ''जो कहानियां हैं, वे ख्याल में लेना, जहर भेजा और मीरा उसे कृष्ण का नाम लेकर पी गई, कहते हैं जहर अमृत हो गया, हो ही जाना चाहिए, इतने प्रेम से, इतने स्वागत से अगर कोई जहर भी पी ले तो अमृत हो ही जायेगा।''

मीरा ने समाधी ली :

राजस्थान में वर्षों बाद मेवाड़ की गद्दी पर राणासांगा के बाद सबसे छोटा बेटा राजा उदयसिंह बैठा। राजा उदयसिंह को मीरा के प्रति अगाढ श्रृध्दा थी। उसने अनेक संदेश वाहक भेजे मीरा को वापस लाने के लिये यह घटना भी मीरा के जीवन की मार्मिक अविश्वसनीय अनुभव बन गई। इस विषय में ओशो कहते हैं कि, ''उदयसिंह को अपने पूर्वजों के कार्यों पर क्षोभ था, उसने मीरा को मेवाड़ लाने के लिए कई बार प्रयास किये, हर बार असफल रहा। मीरा हर बार लोगों को समझाकर भेज देती परन्तु एक बार उदयसिंह ने 100 आदमियों को मीरा को लेने के लिये भेजा।

मीरा ने कहा ''फिर ऐसा है तो चलना ही होगा, मैं जाकर अपने प्यारे को पूछ लूं, उनकी बिना आज्ञा के तो न जा सकूंगी। वह मन्दिर के भीतर गई और कथा बड़ी प्यारी है अदभुत और बहुमूल्य है। वह भीतर गई और कहते हैं, फिर बाहर नहीं लौटी। कृष्ण की मूर्ति में ही समा गई।

यह भी ऐतिहासिक तो नहीं हो सकती बात लेकिन होनी चाहिए, क्योंकि अगर मीरा कृष्ण की मूर्ति में न समा सके तो फिर कौन समायेगा ? कृष्ण को अपने में इतना समाया, कृष्ण इतना भी न करेंगे कि, उसे अपने में समा ले तब तो फिर भक्ति का सारा गणित ही टूट जायेगा। आखरी घड़ी आ गई महासमाधि की। अंततः भक्त भगवान में समा ही जाता है, यह घटना एक परम घटना में परिवर्तित हो गई।

निष्कर्ष :

मीरा बाई के पदय उस युग में ही नहीं बल्कि वर्तमान के आधुनिक जगत में उतने ही मार्मिक व ह्रदय के बहुत समीप जान पड़ते हैं। आने वाले युगों में भी इनका महत्व इसी तरह बना रहेगा क्योंकि मानव कितना भी आधुनिक जीवनयापन करे परन्तु उसकी मानवीय संवेदनाए उतनी ही प्रबल बनी रहेगी।

कुछ शंकाएँ, कुछ समाधान : भारतीय संविधान की समीक्षा

डॉ. सपना चक्रवर्ती
सहायक प्राध्यापक – राजनीति विज्ञान
श्री अटल बिहारी वाजपेयी
शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
इन्दौर (म.प्र.)

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने संविधान सभा के समक्ष अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा था, ''भारतीय संविधान का निर्माण करते समय हमारा उद्‌देश्य किसी मौलिक संविधान निर्माण करना नहीं है न ही हमारा उद्‌देश्य किसी प्रकार की विद्वता का प्रदर्शन करना है अपितु हमारा उद्‌देश्य एक ऐसे संविधान का निर्माण करना है जो भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल हो।'' संविधान सभा में जिस संविधान का निर्माण किया था वह तात्कालिक भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल था परन्तु यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि संविधान निर्माता भविष्य दृष्टा तो होते है परन्तु भविष्य वक्ता नहीं होते। अतएव परिवर्तित परिस्थितियों के अनुकूल संविधान में भी परिवर्तित होना आवश्यक होता है। जो संविधान स्वयं करे परिस्थितियों के अनुकूल परिवर्तित नहीं कर पाते अर्थात् जिनमें अनुकूलता का गुण नहीं होता ऐसे संविधानों के विरूद्ध क्रांति हो जाती है अथवा शासन व्यवस्था का उल्लेख अवश्यमेव किया जाता है। किन्तु यदि संशोधन के माध्यम से आवश्यक परिवर्तन करना सम्भव न हो तो संविधान मं भी परिवर्तित परिस्थितियों के अनुकूल पुनर्समीक्षा की आवश्यकता होती है।

26 जनवरी 2000 को हमारा गणतंत्रीय संविधान अपनी 50वीं वर्षगांठ मना चुका है। इस बीच गंगा–यमुना का बहुत सा पानी बह चुका है। भारतीय राजनीति में प्रजातांत्रिक मूल्यों का ह्रास हुआ है। यह एक आश्चर्यजनक स्थिति हैं कि देश के उद्योग तो बीमार पड़े हैं लेकिन उद्योगपति धनवान हैं, भूमि को जोतने वाले किसान तो निर्धन हैं लेकिन जमींदार समृद्ध हुए हैं। देश की सामान्य जनता तो असहाय है लेकिन शासक सर्व शक्तिमान हैं। यह कहा जाने लगा है कि भारत एक अमीर देश है जहाँ गरीब जनता निवास करती है। एन.ए. पालकीवाला के अनुसार स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् चार क्षेत्रों में हम बुनियादी रूप से असफल रहे हैं –

(अ) कानून तथा व्यवस्था स्थापित करने में असफलता।

(ब) आर्थिक समृद्धि लाने के लिये आर्थिक स्त्रोतों का समुचित दोहन करने में असफलता।

(स) मानव शक्ति के विकास में असफलता तथा

(द) नैतिक दृष्टि से नेतृत्व प्रदान करने में असफलता।

डॉ. अमरेश अवस्थी ने मध्यप्रदेश राजनीति विज्ञान परिषद में भाषण देते हुए भारतीय राजनीतिक व्यवस्था की पाँच दुर्बलताओं की ओर विशेष रूप से इंगित किया है–

1. संसदीय प्रजातंत्र के स्थान पर लोक लंभावनी जनतंत्र की ओर प्रवृत्ति।
2. राजनीति में बढ़ती हुई हिंसा।
3. देश में धीरे–धीरे चल रही राजनीतिक तथा संवैधानिक संस्थाओं जैसे – न्यायपालिका, संसद आदि के विघटन की प्रक्रिया।
4. नैतिक मूल्यों की तीव्रता से ह्रास।
5. राजनीति का अपराधीकरण।

उपर्युक्त परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए यह विचारणीय प्रश्न है कि –

1. क्या भारतीय संविधान के कुछ विशिष्ट उपबन्धों में संशोधन किया जाए?
2. क्या संविधान की पुनर्संरचना की जाए?
3. संविधान का स्वरूप यथावत् रहे किन्तु उसके विभिन्न प्रावधानों की पुर्नसमीक्षा की जाए?

एक विशेष समारोह में भारत के राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री द्वारा संविधान समीक्षा के सम्बंध में व्यक्त किये गये विचारों में स्पष्ट भिन्नता दृष्टिगोचर हुई। प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा कि संविधाने की समीक्षा इसलिये आवश्यक हो गई है कि भारतीये संविधान को बने हुए पचास साल बीत चुके हैं तथा अनेक नवीन परिस्थितियाँ उत्पन्न हो गई है। केन्द्र तथा राज्य दोनों में स्थिरता की आवश्यकता महसूस की जा रही है। इसके मद्देनजर संविधान में आंशिक फेरबदल किया जा सकता है किन्तु उसका बुनियादी ढांचा यथावत् बना रहेगा। राष्ट्रपति श्री आर.के. नारायणन ने कहा कि ''हमारे संविधान निर्माताओं ने बहुत सोच–समझकर संविधान तैयार किया था।'' हमें पहले यह विचार करना होगा कि हम संविधान के कारण विफल हुए है अथवा हमने संविधान को विफल किया है।

संविधान समीक्षा का पक्ष पोषण

भारतीय संविधान की समीक्षा की मांग करने वालों का तर्क है कि संविधान की समीक्षा किया जाना न केवल जनहित में है अपितु यह समय की मांग भी है। प्रत्येक संविधान देश तथा जनता की आशाओं एवं आकांक्षाओं का दस्तावेज होता है। यह कोई धर्मिक ग्रंथ नहीं है जिसकी समीक्षा अथवा विवेचना वर्जित हो। संविधान के लागू होने के पश्चात् से देश की परिस्थितियों में अत्यधिक परिवर्तन आया है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में समय तथा परिस्थितियों के अनुकूल सकारात्मक दृष्टि से परिवर्तन, सीमक्षा तथा संशोधन की आवश्कता होती है।

वर्तमान में भारतीय लोकतंत्र अनेक संकटापन्न स्थितियों से गुजर रहा है। अस्थिर सरकारों के दौर में कोई भी ऐसा राजनीतिक दल नहीं है जिसे इतना जन समर्थन प्राप्त हो कि वह अपने बलबूते पर सरकार बनाने की स्थिति में हो, राजनीति का अपराधीकरण इस मात्रा में हो चुका है कि यह कहना सम्भव नहीं है कि यह राजनीति है, जिसका अपराधीकरण हुआ है अथवा ये अपराधी है जिनका राजनीतिकरण हुआ है। भ्रष्टाचार के दुष्ट दानवों ने तो सम्पूर्ण शासन एवं प्रशासन को आच्छादित कर रखा है। मंहगाई सुरसा की भाँति मुँह बाएँ खड़ी है, कानून तथा व्यवस्था की स्थिति दयनीय है, उग्रवाद तथा आतंकवाद ने सम्पूर्ण वातावरण को भय मिश्रित बना दिया है। क्या हम 21वीं शताब्दी के भारत को इन्हीं समस्या के साथ विश्वे का सिरमौर बनाने का स्वप्न संजोए हुए है? यदि वास्तव में भारत को अपनी खोई हुए प्रतिष्ठा को प्राप्त करना है तो भारतीय प्रजातंत्र की संस्थागत तथा मानवीय कमजोरियों को समाप्त करने के लिए दृढ़ संकल्प होकर कदम उठाने होंगे।

भारतीय संविधान की समीक्षा के लिए सरकार ने न्यायमूर्ति एम.एन. वैंकटचलैया की अध्यक्षता में एक 11 सदस्यीय आयोग का गठन किया है। श्री वाजपेयी ने इस सम्बंध में कहा है ''यह आयोग किसी दल के प्रभाव में नहीं है और न ही किसी दल विशेष की इच्छा की पूर्ति के लिए है।'' इसमें निष्पक्ष लोग हैं जाक क्षेत्र के विशेषज्ञ हैं। उन्होंने कहा कि इस आयोग की रिपोर्ट में संसद तथा देशभर में व्यापक बहस होगी और इस रिपोर्ट को संसद द्वारा पारित भी किया जाएगा। संविधान संशोधन के लिए आयोग द्वारा दिए गए किसी भी सुझााव को संविधान में तभी सम्मिलित किया जाएगा जबकि संसद दसे पारित करे।

संविधान समीक्षा का विरोध

संविधान समीक्षा के प्रश्न पर विचार करते हुए सर्वप्रथम राष्ट्रपति के.आर. नारायणन महोदय का प्रश्न था कि वास्तव में हमें इस बात पर विचार करना चाहिए कि हम संविधान के कारण विफल हुए हैं अथवा हमनें संविधान को विफल कर दिया है। संविधान समीक्षा का विरोध करने वालों की मान्यता है कि भारतीय संविधान में संशोधन की जो व्यवस्था है उसके कारण समय तथा परिस्थितियों के अनुकूल उसमें परिवर्तन करने के पर्याप्त उपाय उपलब्ध हैं तथा इसी आधार पर विश्व के संविधानों में सर्वाधिक 86 संविधान संशोधन भारतीय संविधान में किए जा चुके हैं। भारतीय संविधान की समीक्षा के लिए संविधान समीक्षा आयोग न केवल अवैधानिक अपितु संविधान निर्माताओं की भावनाओं का भी अनादर है। संविधान समीक्षा के पीछे सरकार की भावना तानाशाही सरकार तथा फांसीवादी व्यवस्था की स्थापना है। प्रभावी शासन व्यवस्था स्थापित करने के लिए सरकार उचित संविधान संशोधन कर सकती है। इस समय लोकसभा में किसी भी राजनैतिक दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं है और राज्य सभा में भी सरकार को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं हैं। सामान्य जनता भी केन्द्र सरकार के इस कदम को आशंका की दृष्टि से देखती है। वास्तविकता तो यह है कि हमें इस दृष्टि से समीक्षा की आवश्यकता है कि विद्यमान संवैधानिक व्यवस्थाओं का कार्यान्वयन क्या ईमानदारी से किया गया है? इस दृष्टि से संशोधन यदि करना हो तो सरकार को अपनी नीतियों को इस प्रकार संशोधन करना चाहिए ताकि जन आकांक्षाओं की पूर्ति की जा सके।

वस्तुस्थिति तो यह है कि केवल इस आधार पर संविधान की व्याख्या का प्रश्न उपस्थित करना उचित नहीं है कि संविधान का निर्माण हुए 50 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। संविधान का निर्माण किसी समय विशेष के लिए नहीं किया जाता। संविधान का निर्माण भविष्य को दृष्टिगत रखकर किया जाता है। यह संविधान निर्माताओं की दूरदर्शिता का प्रतीक होता है तथा पीढ़ियों के लिए होता है। सरकार यह भी जानती है कि संविधान संशोधन के लिए उसके पास पर्याप्त बहुमत नहीं हैं किन्तु सरकार केवल देश को एक उलझाना चाहती है।

निष्कर्ष

भारतीय संविधान की यात्रा को 50 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। इस दौरान भारतीय राजनीति व्यवस्था तथा प्रशासन ने अनेक झंझावतों का सामना सफलतापूर्वक किया है।

यद्यपि संविधान को बार–बार विवाद के घेरों में लाने का प्रयास राजनीतिक दलों द्वारा किया जाता रहा किन्तु जनता की संवैधानिक निष्ठाएँ अक्षुण्ण बनी रही। वास्तविकता तो यह है कि कोई भी संविधान कालातीत नहीं होता क्योंकि संविधान निर्माता भविष्य दृष्टा होकर संविधान का निर्माण करते हैं। इसके साथ ही प्रत्येक संविधान की प्रक्रिया का उल्लेख होता है। इस दृष्टि से भारतीय संविधान की समीक्षा का यह कोई उपयुक्त आधार नहीं है कि 50 वर्षों में इसकी समीक्षा की आवश्यकता है। वास्तव में समीक्षा समिति का प्रयास केवल अकादमिक कसरत के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। अंतिम निर्णय तो संसद को ही करना है जहाँ सरकार को आवश्यक बहुमत प्राप्त नहीं हैं।

अब जबकि संविधान समीक्षा हेतु आयोग का गठन कर ही दिया गया है वह भी इस शर्त के साथ कि आयोग संविधान के मूल ढाँचे में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं करेगा। यदि वास्तव में आयोग किसी दल विशेष के हितों में कार्य न कर निष्पक्षतापूर्वक कार्य करते हुए रचनात्मक सुझाव देता है तो उनका स्वागत किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

01. सिविल सर्विसेस क्रानिकल, मार्च 2000, पृ. 11
02. सिविल सर्विसेस क्रानिकल, मार्च 2000, पृ. 12
03. प्रतियोगिता दर्पण, जुलाई 200/2 116/6
04. NCERT 12 स्टेंडर्ड ''भारत में लोकतंत्र''
05. हमारा संविधान, सुभाष कश्यप, पृ. 56
06. भारत का संविधान एक परिचय, D.D. बसु, पृ. 91
07. युसूफ बनाम बम्बई राज्य AIR 1954 SC 321
08. चित्रलेखा बनाम मैसूर राज्य AIR 1964 SC 1823/1827
09. भारत का संविधान एक परिचय, D.D. बसु, पृ. 95
10. संजीत बनाम मैसूर राज्य AIR 1953 SC 328
11. हमारा संविधान, सुभाष कश्यप, पृ. 57
12. कांस्टीट्शन ऑफ इंडिया, पी. जोशी, पृ. 112
13. भारतीय शासन एवं राजनीति – डॉ. फड़िया
14. नई दुनिया, इन्दौर संस्करण, 17 अगस्त 2000, पृ. 06